Resource: Gateway Literal Text (Hindi)

License Information

Gateway Literal Text (Hindi) (Hindi) is based on: Gateway Literal Text (Hindi), unfoldingWord, 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Gateway Literal Text (Hindi)

Luke 1:1

1 उन बातों के विषय में इतिहास का संकलन करने में बहुतों
ने प्रयास किया है जो हमारे बीच में पूरी हुई हैं,

2 उन लोगों के जैसे जो आरम्भ से ही आँखों देखे गवाह थे और
उस वचन के सेवक थे जो उन्होंने हमें सौंपा था,

3 और यह मुझे भी भला ही लगा, कि आरम्भ से ही हर एक
बात की सावधानीपूर्वक जाँच करके, हे श्रीमान थियुफिलुस,
तेरे लिए एक क्रमानुसार ब्यौरा लिखूँ,

4 ताकि तू उन बातों के विषय की निश्चयता को जान पाए जो
तुझे सिखाई गई हैं।

5 हेरोदेस, यहूदिया के राजा के दिनों में, जकर्याह नाम का एक
याजक था, जो अबिय्याह के दल से था। और उसकी पत्नी
हारून की पुत्रियों में से थी, और उसका नाम एलीशिबा था।

6 और वे दोनों परमेश्वर के सामने धर्मी थे, और प्रभु की सारी
आज्ञाओं और विधियों पर सीधाई से चलनेवाले थे।

7 परन्तु उनके कोई सन्तान न थी, क्योंकि एलीशिबा बाँझ थी,
और वे दोनों अपनी आयु में बहुत बूढ़े थे।

8 और ऐसा हुआ कि अपने दल की पारी पर, परमेश्वर के
सामने उसकी याजक के रूप में सेवा निभाते हुए,

9 कि याजकीय रीति के अनुसार, प्रभु के मंदिर में जाकर धूप
जलाने के लिए उसके नाम पर चिट्ठी निकली।

10 और धूप जलाने के समय लोगों की सारी मण्डली बाहर
प्रार्थना कर रही थी।

11 उसी समय प्रभु का एक स्वर्गदूत, धूप की वेदी की दाहिनी
ओर खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया।

12 और जब उसने उसे देखा तो जकर्याह घबरा गया, और उस
पर भय छा गया।

13 परन्तु स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे जकर्याह, भयभीत न हो,
क्योंकि तेरी प्रार्थना सुन ली गई है, और तेरी पत्नी एलीशिबा
एक पुत्र को जन्म देगी, और तू उसका नाम यूहन्ना रखेगा।

14 और तुझे आनन्द और हर्ष प्राप्त होगा, और उसके जन्म पर
बहुत से लोग आनन्दित होंगे।

15 क्योंकि वह प्रभु के सामने महान होगा, और वह कभी भी
दाखरस और मदिरा न पीएगा, और वह अपनी माता के गर्भ
ही से पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएगा।

16 और वह इस्राएल के पुत्रों में से बहुतों को उनके प्रभु
परमेश्वर की ओर फेरेगा।

17 और वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ्य में होकर उसके
आगे-आगे चलेगा, कि पिताओं के हृदयों को अपने बालकों
की ओर फेरे और आज्ञा न माननेवालों को धर्मियों की समझ
पर लाए—कि प्रभु के लिये योग्य लोगों को तैयार करे।"

18 तब जकर्याह ने स्वर्गदूत से कहा, "यह मैं कैसे जानूँगा?
क्योंकि मैं तो एक बूढ़ा व्यक्ति हूँ, और मेरी पत्नी भी अपनी
आयु में बूढ़ी हो गई है।"

Luke 1:1

19 और उत्तर देते हुए, उस स्वर्गदूत ने उससे कहा, "मैं
जिब्राएल हूँ, जो परमेश्वर के सामने खड़ा रहता है, और मुझे
तुझ से बातें करने और तुझे यह शुभ सन्देश देने को भेजा गया
था।

20 और देख, तू उस दिन तक मौन रहेगा और बोलने में सक्षम
न होगा जब तक कि ये बातें घटित न हो लें, क्योंकि तूने मेरी
उन बातों का विश्वास न किया, जो अपने समय पर पूरी होंगी।"

21 और लोग जकर्याह की प्रतीक्षा कर रहे थे, और मंदिर में
उसे विलम्ब होने पर वे अचम्भा कर रहे थे।

22 परन्तु जब वह बाहर आया, तो वह उनसे बात करने में
सक्षम नहीं था और उन्होंने जान लिया कि उसने मन्दिर में
कोई दर्शन देखा था; और वह उनकी ओर संकेत कर रहा था,
और बोलने में असमर्थ बना रहा।

23 और ऐसा हुआ कि, जब उसकी याजकीय सेवा के दिन पूरे
हो गए, तो वह अपने घर चला गया।

24 और इन दिनों के पश्चात, उसकी पत्नी एलीशिबा गर्भवती हो
गई, और पाँच महीने तक उसने अपने आप को यह कहकर
छिपाए रखा,

25 "प्रभु ने मेरे लिए इस प्रकार से किया है, कि इस आयु में
उसने मुझ पर कृपादृष्टि की, ताकि मनुष्यों के मध्य में से मेरा
अपमान दूर करे।"

26 और छठवें महीने में, उस जिब्राएल स्वर्गदूत को परमेश्वर
की ओर से गलील के एक नगर में भेजा गया जिसका नाम
नासरत था,

27 एक कुँवारी के पास जिसकी मंगनी यूसुफ नाम एक पुरुष
से हुई थी, जो दाऊद के घराने का था, और उस कुँवारी का
नाम मरियम था।

28 और उसके पास आकर, स्वर्गदूत ने कहा, "हे अनुग्रह प्राप्त
जन, आनन्दित रह! प्रभु तेरे साथ है।"

29 परन्तु वह उसके शब्दों के द्वारा घबरा गई थी, और वह सोच
रही थी कि यह किस प्रकार का अभिवादन हो सकता है?

30 और उस स्वर्गदूत ने उससे कहा, "हे मरियम, भयभीत न
हो, क्योंकि तुझे परमेश्वर का अनुग्रह प्राप्त हुआ है।

31 और देख, तू तेरे गर्भ में गर्भधारण करेगी और एक पुत्र को
जन्म देगी, और तू उसका नाम यीशु रखेगी।

32 वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा, और
प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसे देगा।

33 और वह याकूब के घराने पर सर्वदा राज्य करेगा, और
उसके शासन का कभी अन्त न होगा।"

34 परन्तु मरियम ने उस स्वर्गदूत से कहा, "यह कैसे होगा,
क्योंकि मैं किसी पुरुष को जानती ही नहीं?"

35 और उत्तर देते हुए, उस स्वर्गदूत ने उससे कहा, "पवित्र
आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर
छाया करेगी। इसलिए, वह पवित्र जो जन्म लेगा वह परमेश्वर
का पुत्र कहलाएगा।

36 और देख, तेरी कुटुम्बिनी एलीशिबा—उसने भी अपनी
वृद्धावस्था में एक पुत्र का गर्भ धारण किया है, और जो बाँझ
कहलाती थी यह उसका छठवाँ महीना है।

37 क्योंकि कोई भी बात परमेश्वर के लिए असम्भव नहीं है।"

38 तब मरियम ने कहा, "देख, मैं तो प्रभु की दासी हूँ। तेरे वचन
के अनुसार मेरे साथ ऐसा ही हो।" तब स्वर्गदूत उसके पास से
चला गया।

39 तब मरियम उन दिनों में उठी और शीघ्रता करके पहाड़ी
देश में, यहूदा के एक नगर को गई।

40 और उसने जकर्याह के घर में प्रवेश किया और एलीशिबा
को नमस्कार किया।

Luke 1:1

41 और ऐसा हुआ कि, जब एलीशिबा ने मरियम का नमस्कार
सुना, तो जो बच्चा उसके गर्भ में था वह उछल पड़ा, और
एलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई।

42 और वह ऊँचे स्वर से पुकार उठी और कहा, "तू स्त्रियों में
धन्य है, और तेरे गर्भ का फल धन्य है।

43 और यह मेरे लिए कहाँ से हुआ, कि मेरे प्रभु की माता मेरे
पास आई?

44 क्योंकि देख, जैसे ही तेरे नमस्कार की ध्वनि मेरे कानों में
पड़ी, वैसे ही जो बच्चा मेरे गर्भ में है वह आनन्द से उछल पड़ा।

45 और धन्य है वह जिसने विश्वास किया कि उन बातों की पूर्ति
होगी जो प्रभु की ओर से उससे कही गई थीं।"

46 और मरियम ने कहा, "मेरा प्राण प्रभु की बड़ाई करता है।

47 और मेरी आत्मा मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर में आनन्दित
हुई।

48 क्योंकि उसने अपनी दासी की निचली दशा पर दृष्टि की है।
क्योंकि देख, अब से सारी पीढ़ियाँ मुझे धन्य कहेंगी।

49 क्योंकि उस शक्तिमान ने मेरे लिये बड़े-बड़े काम किए हैं,
और उसका नाम पवित्र है।

50 और उसकी दया पीढ़ी से पीढ़ी तक उन पर बनी रहती है
जो उससे डरते हैं।

51 उसने अपनी बाँहों से सामर्थी काम किए हैं; और जो अपने
हृदयों के विचारों में घमण्ड करते हैं उसने उनको तितर-बितर
कर दिया है।

52 उसने शासकों को उनके सिंहासनों से नीचे गिरा दिया है
और उसने दीनों को ऊँचा किया है।

53 उसने भूखों को अच्छी वस्तुओं से तृप्त किया, परन्तु
धनवानों को उसने खाली हाथ निकाल दिया है।

54 उसने अपने सेवक इस्राएल की सहायता की, कि अपनी
उस दया को स्मरण करे,

55 जैसा उसने हमारे पूर्वजों से कहा था—जो अब्राहम और
उसके वंश पर सदा बनी रहेगी।"

56 और मरियम लगभग तीन महीने उसके साथ रही, और
फिर अपने घर लौट गई।

57 और एलीशिबा के लिए उसके जनने का समय पूरा हो गया
था, और उसने एक पुत्र को जन्म दिया।

58 और उसके पड़ोसियों और कुटुम्बियों ने यह सुना कि प्रभु
ने उस पर अपनी बड़ी दया को किया था, और उन्होंने उसके
साथ आनन्द किया।

59 और ऐसा हुआ कि, आठवें दिन, वे बालक का खतना करने
को आए, और वे उसके पिता के नाम पर, उसका नाम भी
जकर्याह रखने वाले थे।

60 परन्तु उत्तर देते हुए, उसकी माता ने कहा, "नहीं। वरन्, उसे
यूहन्ना कहा जाएगा।"

61 परन्तु उन्होंने उससे कहा, "तेरे कुटुम्ब में से ऐसा कोई भी
नहीं है जिसे इस नाम से पुकारा गया हो।"

62 तब उन्होंने उसके पिता की ओर ऐसे संकेत किए कि वह
उसे क्या पुकारना चाहता है।

63 और लिखने की एक पटिया मँगवाकर, उसने लिखकर,
बता दिया, "उसका नाम यूहन्ना है।" और वे सभी विस्मित हो
गए थे।

64 तब तुरन्त ही उसका मुँह खुल गया और उसकी जीभ भी,
और परमेश्वर को धन्य कहते हुए, वह बोलने लगा।

65 और उन सब पर भय छा गया जो उनके आसपास रहते थे,
और इन सब बातों की चर्चा यहूदिया के सारे पहाड़ी देश में
की जा रही थी।

66 और जिन सब ने सुना उन्होंने अपने हृदयों में इसे यह
कहकर रख लिया, "यह बालक कैसा होगा?" क्योंकि सचमुच
प्रभु का हाथ उसके साथ था।

67 और उसका पिता जकर्याह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया
और यह कहकर भविष्यद्वाणी करने लगा,

68 "धन्य है प्रभु, जो इस्राएल का परमेश्वर है, क्योंकि उसने
अपने लोगों की सुधि ली और उनका छुटकारा किया है।

69 और उसने अपने सेवक दाऊद के घराने में से हमारे लिये
एक उद्धार के सींग को ऊँचा किया

70 (जैसा कि युगों से वह अपने पवित्र भविष्यद्वक्ताओं के मुँह
से बोलता आया है),

71 हमारे शत्रुओं से और उन सब लोगों के हाथों से उद्धार
किया जो हम से द्वेष रखते हैं;

72 कि हमारे पूर्वजों पर दया दिखाए और अपनी पवित्र वाचा
को स्मरण करे,

73 वह शपथ जो उसने हमारे पिता अब्राहम से खाई थी, कि
हमें स्वीकृति प्रदान करे

74 कि अपने शत्रुओं के हाथ से छूटकर, निडर रहकर उसकी
सेवा करें,

75 उसके सामने पवित्रता और धार्मिकता में अपने जीवनभर।

76 और सचमुच, हे बालक, तू परमप्रधान का भविष्यद्वक्ता
कहलाएगा, क्योंकि तू उसका मार्ग तैयार करने के लिये प्रभु
के आगे-आगे चलेगा;

77 कि उनके पापों की क्षमा के द्वारा उसके लोगों को उद्धार
का ज्ञान दे,

78 हमारे परमेश्वर की कोमल दया के कारण, जिसके द्वारा
ऊपर से हम पर भोर का प्रकाश अवतरित होगा,

79 कि उन पर चमके जो अंधकार और मृत्यु की छाया में बैठे
हुए हैं; कि शांति के पथ पर हमारे पाँवों का मार्गदर्शन करे।"

80 और वह बालक बढ़ रहा था और आत्मा में बलवन्त हो रहा
था, और इस्राएल के लोगों पर प्रकट होने के दिन तक वह
जंगलों में रहा करता था।

Luke 2:1

1 और उन दिनों में, ऐसा हुआ कि कैसर औगुस्तुस की ओर से
सारे संसार के लिए पंजीकरण कराने हेतु एक आदेश
निकला।

2 यह प्रथम पंजीकरण उस समय हुआ जब क्विरिनियुस
सीरिया के राज्यपाल के रूप में सेवारत था।

3 और हर एक जन अपने आप का पंजीकरण कराने हेतु यात्रा
कर रहा था, और प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने नगर को जा रहा
था।

4 और यूसुफ भी नासरत के नगर, गलील से, दाऊद के नगर,
यहूदिया को गया, जिसे बैतलहम भी कहा जाता है, क्योंकि वह
दाऊद के घराने और वंश का था।

5 उसने अपना पंजीकरण मरियम के साथ करवाया, जिसकी
उसके साथ मंगनी हो गई थी और वह गर्भवती थी।

6 और ऐसा हुआ कि, जब वे वहाँ पर थे, तो उसके प्रसव के
दिन पूरे हो गए थे।

7 और उसने अपने पहलौठे पुत्र को जन्म दिया, और उसने
उसे कपड़े की लीरों में लपेटा और उसे एक चरनी में लिटा
दिया, क्योंकि सराय में उनके लिए कोई कमरा उपलब्ध नहीं
था।

Luke 2:1

8 और उस क्षेत्र में बहुत से गड़ेरिए रहते थे, जो खुले मैदान में ठहरे हुए थे और रात में अपने झुण्ड की रखवाली कर रहे थे।

9 और प्रभु का एक स्वर्गदूत उनके सामने आ खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे अत्यन्त भयभीत हो गए।

10 और उस स्वर्गदूत ने उनसे कहा, "मत डरो, क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे पास बड़े आनन्द का शुभ सन्देश लाया हूँ, जो सब लोगों के लिये होगा।

11 क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, जो मसीह प्रभु है!

12 और तुम्हारे लिए यह चिन्ह होगा: तुम एक बालक को कपड़े की लीरो में लिपटा हुआ और चरनी में लेटा हुआ पाओगे।"

13 और अचानक से उस स्वर्गदूत के साथ स्वर्गीय सेना का एक दल आया, जो परमेश्वर की स्तुति कर रहा था, और कह रहा था,

14 "सबसे ऊँचे पर परमेश्वर की महिमा हो, और पृथ्वी पर, भली मनसा वाले मनुष्यों के मध्य में शान्ति हो।"

15 और ऐसा हुआ कि, जब स्वर्गदूत उनके पास से स्वर्ग को चले गए, तो गड़ेरियों ने एक दूसरे से कहा, "आओ हम सचमुच वहाँ दूर उस बैतलहम को जाएँ, और आओ हम इस बात को देखें जो घटित हुई है, और जिससे प्रभु ने हमें अवगत कराया है।"

16 और वे शीघ्रता से गए और जाकर मरियम और यूसुफ दोनों को, और उस बालक को पाया, जो चरनी में लेटा हुआ था।

17 और उसे देखकर, उन्होंने उस सन्देश के विषय में उनको अवगत कराया जो इस बालक के विषय में उनको बताया गया था।

18 और जिन सब ने भी यह सुना वे उस विषय में अचम्भित थे जो बातें गड़ेरियों के द्वारा उनको बताई गई थीं।

19 परन्तु मरियम ने इन सब बातों को स्मरण रखा, और अपने हृदय में उन पर विचार करती रही।

20 और जैसा कि उनसे कहा गया था, वे गड़ेरिए वापस लौट गए, उन सब बातों के लिए परमेश्वर की महिमा और स्तुति करते हुए जो उन्होंने सुनीं और देखी थीं।

21 और जब उसका खतना किए जाने हेतु आठ दिन पूरे हो गए थे, तो उसका नाम यीशु रखा गया, जो उसके गर्भ में आने से पहले ही उस स्वर्गदूत के द्वारा उसे बताया गया था।

22 और जब उनके शुद्ध होने के दिन पूरे हो गए, तो मूसा की व्यवस्था के अनुसार, वे उसे प्रभु के सामने उपस्थित करने हेतु यरूशलेम लेकर आए।

23 (जैसा कि प्रभु की व्यवस्था में लिखा है, "हर एक पुरुष जो गर्भ को खोलता है वह प्रभु के लिये पवित्र ठहरेगा"),

24 और जो प्रभु की व्यवस्था में कहा गया है उसके अनुसार बलिदान चढ़ाने के लिए, पण्डुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे।"

25 और देखो, यरूशलेम में एक व्यक्ति था जिसका नाम शमौन था, और वह व्यक्ति धर्मी और भक्त था, और इस्राएल की शान्ति की प्रतीक्षा कर रहा था, और पवित्र आत्मा उस पर था।

26 और पवित्र आत्मा के द्वारा उस पर यह प्रकट किया गया था कि इससे पहले कि वह प्रभु के मसीह को देख न ले तब तक मृत्यु को न देखेगा।

27 और मन्दिर में वह आत्मा में आ गया; और जब उस बालक यीशु को उसके माता-पिता भीतर लाए कि वे उसके लिये व्यवस्था की रीति के अनुसार करें,

28 और उसने उसे अपनी गोद में लिया और परमेश्वर का धन्यवाद किया और उसने कहा,

Luke 2:1

29 “हे प्रभु, अब तू अपने दास को, अपने वचन के अनुसार,
शान्ति से विदा कर रहा है।

30 क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है,

31 जिसे तूने सब लोगों के मुँह के सामने तैयार किया है:

32 कि अन्यजातियों पर प्रकटीकरण के लिए ज्योति हो और
तेरी प्रजा इस्राएल की महिमा हो।

33 और जो उसके विषय में कहा गया था उस पर उसके पिता
और माता अचम्भित थे।

34 और शमौन ने उनको आशीष दी, और उसकी माता,
मरियम से कहा, “देख, यह तो इस्राएल में बहुतों के गिरने और
उठने के लिये और एक ऐसा चिन्ह होने के लिये ठहराया गया
है जिसके विरोध में बातें की जाएँगी—

35 और तेरे प्राण को भी एक तलवार आर-पार छेद देगी—
जिससे कि बहुत से हृदयों के विचार प्रकट होंगे।”

36 और आशेर के गोत्र के फनूएल की पुत्री, हन्नाह वहाँ थी, जो
एक भविष्यद्वक्तिनी थी। वह आयु में बहुत बूढ़ी हो गई थी,
और अपने कुँवारेपन के बाद सात वर्ष तक अपने पति के साथ
रह पाई थी।

37 और वह 84 वर्ष से विधवा थी और मन्दिर को कभी भी नहीं
छोड़ती थी, और रात-दिन उपवास और प्रार्थनाएँ कर करके
सेवाकार्य किया करती थी।

38 और उसी घड़ी वहाँ आकर, वह परमेश्वर का धन्यवाद करने
लगी और जो यरूशलेम के छुटकारे की प्रतीक्षा कर रहे थे
उन सभी से उसके विषय में बातें करने लगी।

39 और जब वे प्रभु की व्यवस्था के अनुसार सब कुछ निपटा
चुके, तो वे गलील में अपने नगर नासरत को लौट गए।

40 और वह बालक बढ़ता गया और बलवन्त होता और बुद्धि
से परिपूर्ण होता गया, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।

41 और उसके माता-पिता प्रतिवर्ष फसह के पर्व में यरूशलेम
को जाया करते थे।

42 और जब वह 12 वर्ष की आयु का था, तो वे पर्व की रीति के
अनुसार वहाँ गए।

43 और जब दिन पूरे हुए, और जब वे लौट रहे थे, तो वह बालक
यीशु यरूशलेम में ही रह गया, परन्तु यह बात उसके माता-
पिता नहीं जानते थे।

44 परन्तु यह विचारकर कि वह यात्रियों के समूह के साथ था,
वे एक दिन की यात्रा में आगे निकल गए और वे अपने
कुटुम्बियों और मित्रों में उसकी खोज करने लगे।

45 और उसे नहीं खोज पाने पर, वे उसे ढूँढ़ने के लिए,
यरूशलेम को लौट गए।

46 और ऐसा हुआ कि, तीन दिनों के बाद, वह उनको मन्दिर
में, शिक्षकों के मध्य में बैठा हुआ और उनकी सुनता और
उनसे प्रश्न करता हुआ मिला।

47 और जितनों ने उसे सुना वे उसकी समझ और उसके उत्तरों
पर अचम्भित हो गए थे।

48 और जब उन्होंने उसे देखा, तो वे विस्मित हुए, और उसकी
माता ने उससे कहा, “हे पुत्र, तूने हम से क्यों ऐसा व्यवहार
किया? देख, तेरा पिता और मैं तुझे ढूँढ़ते हुए परेशान हो गए
थे।”

49 और उसने उनसे कहा, “ऐसा क्यों है कि तुम मुझे ढूँढ़ रहे
थे? क्या तुम नहीं जानते थे कि मुझे तो मेरे पिता के कामों में
होना अवश्य है?”

50 परन्तु जो बात उसने उनसे कही थी वे उसे नहीं समझ पाए
थे।

51 तब वह उनके साथ चला और नासरत को आया और उनके
वश में ही रहा। परन्तु उसकी माता ने इन सब बातों को अपने
हृदय में ही रखा।

Luke 3:1

52 और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ रहा था।

Luke 3:1

1 और तिबिरियुस कैसर के शासन के पन्द्रहवें वर्ष में—जिस समय पुन्तियुस पिलातुस यहूदिया का राज्यपाल था, और हेरोदेस गलील का अधीनस्थ शासक था, और उसका भाई फिलिप्पुस इतूरैया और त्रखोनीतिस का अधीनस्थ शासक था, और अबिलेने में लिसानियास अधीनस्थ शासक था।

2 हन्ना और कैफा के महायाजकीय समय में—परमेश्वर का वचन जकर्याह के पुत्र, यूहन्ना के पास, जंगल में पहुँचा।

3 और वह यरदन के आसपास के सारे प्रदेशों में, पापों की क्षमा के लिए पश्चाताप के बपतिस्मे का प्रचार करते हुए गया।

4 जिस प्रकार से यशायाह भविष्यद्वक्ता के वचनों की पुस्तक में ऐसा लिखा है, "जंगल में से किसी व्यक्ति के पुकारने का शब्द आ रहा है, 'प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो।

5 हर एक घाटी भर दी जाएगी, और हर एक पहाड़ और पर्वत को नीचा किया जाएगा, और टेढ़ी-मेढ़ी सड़कें सीधी हो जाएँगी, और ऊबड़खाबड़ सड़कें चिकनी हो जाएँगी,

6 और सब प्राणी परमेश्वर के उद्धार को देखेंगे।'"

7 जो भीड़ उससे बपतिस्मा लेने के लिए निकलकर आ रही थी, उनसे वह ऐसे कहता था, "हे साँप की सन्तानों! आनेवाले क्रोध से भागने के लिए तुम्हें किसने चेतावनी दे दी?

8 इसलिए, पश्चाताप के योग्य फल उत्पन्न करो, और अपने-अपने मन में ऐसा कहना आरम्भ मत करो, 'हमारे पास तो पिता के रूप में अब्राहम है,' क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि परमेश्वर इन पत्थरों से अब्राहम के लिये सन्तान उत्पन्न करने में सक्षम है।

9 परन्तु सच में, कुल्हाड़ा पहले से ही पेड़ों की जड़ पर रख दिया गया है। इसलिए हर एक वह पेड़ जो अच्छा फल उत्पन्न नहीं करता उसे काट डाला गया है और आग में फेंक दिया गया है।"

10 और वह भीड़ यह कह-कहकर, उससे लगातार पूछती रही, "तो हमें क्या करना चाहिए?"

11 अतः उत्तर देते हुए, उसने उनसे कहा, "जिस व्यक्ति के पास दो कुर्ते हों तो वह एक उस व्यक्ति के साथ अवश्य ही साझा करे जिसके पास नहीं है, और जिस व्यक्ति के पास भोजन है, वह भी ऐसा ही करे।"

12 फिर चुंगी लेनेवाले भी बपतिस्मा लेने को आए, और उन्होंने उससे कहा, "हे गुरु, हमें क्या करना चाहिए?"

13 अतः उसने उनसे कहा, "जो आदेश तुम को दिया गया है उससे अधिक कुछ भी न लेना।"

14 फिर सैनिकों ने भी उससे, यह कहकर पूछा, "और हम, हमें क्या करना चाहिए?" और उसने उनसे कहा, "कुछ भी बलपूर्वक न लेना, और न झूठा दोष लगाना, और अपनी मजदूरी पर सन्तोष करना।"

15 और लोग यह आशा कर रहे थे और अपने-अपने हृदयों में यूहन्ना के विषय में आश्चर्य कर रहे थे, कि क्या यही मसीह तो नहीं है।

16 यूहन्ना ने उन सब को, यह कहकर उत्तर दिया, "सचमुच मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु जो मुझसे भी अधिक शक्तिशाली है वह आ रहा है, और जिसके सामने मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का फीता खोल सकूँ। वह तुम्हें पवित्र आत्मा से और आग से बपतिस्मा देगा,

17 उसका सूप उसके हाथ में है कि वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करे और गेहूँ को अपने भण्डारगृह में इकट्ठा करे, परन्तु वह भूसी को उस न बुझनेवाली आग में जला देगा।"

18 इसलिए, अन्य बहुत सी बातों का उपदेश देते हुए, उसने लोगों को शुभ सन्देश का प्रचार किया।

Luke 4:1

19 परन्तु अधीनस्थ शासक हेरोदेस को उसके द्वारा फटकार
लगाई गई, उसके भाई की पत्नी, हेरोदियास के विषय में, और
उन सब बुरे कर्मों के विषय में जो हेरोदेस ने किए थे।

20 उन सब में इस बात को भी जोड़कर: उसने यूहन्ना को
बन्दीगृह में बन्द कर दिया।

21 और ऐसा हुआ कि जब सब लोगों को बपतिस्मा दिया जा
रहा था, तो यीशु को भी बपतिस्मा दिया गया और, जिस समय
वह प्रार्थना कर रहा था, तो स्वर्ग खुल गया,

22 और पवित्र आत्मा शारीरिक रूप में कबूतर के समान उस
पर उतरा, और स्वर्ग से एक वाणी आई, "तू मेरा प्रिय पुत्र है।
मैं तुझ से अत्यन्त प्रसन्न हूँ।"

23 और जब यीशु ने आरम्भ किया उस समय वह स्वयं 30 वर्ष
की आयु का था, और (जैसा कि यह समझा जाता था) वह
यूसुफ का पुत्र था, और वह एली का,

24 और वह मत्तात का, और वह लेवी का, और वह मलकी का,
और वह यन्ना का, और वह यूसुफ का,

25 और वह मत्तित्याह का, और वह आमोस का, और वह नहूम
का, और वह असल्याह का, और वह नग्गई का,

26 और वह मात का, और वह मत्तित्याह का, और वह शिमी
का, और वह योसेख का, और वह योदाह का,

27 और वह यूहन्ना का, और वह रेसा का, और वह जरुब्बाबेल
का, और वह शालतीएल का, और वह नेरी का,

28 और वह मलकी का, और वह अद्दी का, और वह कोसाम
का, और वह एल्मदाम का, और वह एर का,

29 और वह येशू का, और वह एलीएजेर का, और वह योरीम
का, और वह मत्तात का, और वह लेवी का,

30 और वह शमौन का, और वह यहूदा का, और वह यूसुफ
का, और वह योनान का, और वह एलयाकीम का,

31 और वह मलेआह का, और वह मिन्नाह का, और वह मत्तता
का, और वह नातान का, और वह दाऊद का,

32 और वह यिशै का, और वह ओबेद का, और वह बोअज का,
और वह सलमोन का, और वह नहशोन का,

33 और वह अम्मीनादाब का, और वह अदमीन का, और वह
अरनी का, और वह हेस्रोन का, और वह पेरेस का, और वह
यहूदा का,

34 और वह याकूब का, और वह इसहाक का, और वह
अब्राहम का, और वह तेरह का, और वह नाहोर का,

35 और वह सरूग का, और वह रऊ का, और वह पेलेग का,
और वह एबेर का, और वह शिलह का,

36 और वह केनान का, वह अरफक्षद का, और वह शेम का,
और वह नूह का, और वह लेमेक का,

37 और वह मथूशिलह का, और वह हनोक का, और वह
यिरिद का, और वह महललेल का, और वह केनान का,

38 और वह एनोश का, और वह शेत का, और वह आदम का,
और वह परमेश्वर का पुत्र था।

Luke 4:1

1 फिर यीशु, पवित्र आत्मा से भरा हुआ, यरदन से लौट आया,
और आत्मा की अगुवाई से जंगल में फिरता रहा,

2 क्योंकि 40 दिनों तक शैतान के द्वारा परीक्षा हुई थी। और
उन दिनों में उसने कुछ भी नहीं खाया, और जब वे दिन पूरे
हुए तो वह भूखा था।

3 तब शैतान ने उससे कहा, "यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो इस
पत्थर से कह कि रोटी बन जाए।"

Luke 4:1

4 और यीशु ने उसे उत्तर दिया, "ऐसा लिखा हुआ है, 'मनुष्य
केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहेगा।'"

5 तब वह उसे लेकर गया और उसे क्षणभर में ही संसार के
सारे राज्य दिखाए।

6 और शैतान ने उससे कहा, "मैं तुझे यह सब अधिकार और
इनकी महिमा दे दूँगा, क्योंकि यह मुझे सौंपा गया है, और जिस
किसी को भी मैं चाहूँ उसे इसे दे सकता हूँ।

7 इसलिए अब, यदि तू मेरे सम्मुख दण्डवत करने के लिए
झुकेगा, तो यह सब तेरा हो जाएगा।"

8 परन्तु उत्तर देते हुए, यीशु ने उससे कहा, "ऐसा लिखा हुआ
है, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और तू केवल
उसी की सेवा करेगा।'"

9 तब वह उसे यरूशलेम में लेकर गया और उसे मन्दिर की
सबसे ऊँची चोटी पर खड़ा कर दिया, और उससे कहा, "यदि
तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आपको यहाँ से नीचे गिरा दे।

10 क्योंकि ऐसा लिखा हुआ है, 'वह तेरे विषय में अपने
स्वर्गदूतों को, तेरी रक्षा करने के लिए आदेश देगा,'

11 और 'वे तुझे अपने हाथों में उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तू
अपने पाँव को किसी पत्थर में मार ले।'"

12 परन्तु उत्तर देते हुए, यीशु ने उससे कहा, "यह भी कहा गया
है, 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को परीक्षा में नहीं डालेगा।'"

13 और जब उसने हर एक परीक्षा को समाप्त कर लिया, तो
शैतान एक उपयुक्त समय के लिये उसके पास से चला गया।

14 और यीशु आत्मा की सामर्थ्य में गलील को लौट आया, और
उसके विषय में चारों ओर के सम्पूर्ण प्रदेश में समाचार फैल
गया।

15 और उसने उनके आराधनालयों में शिक्षा देना आरम्भ कर
दिया, और सब लोगों के द्वारा उसकी प्रशंसा की जा रही थी।

16 और वह नासरत में आया, जहाँ उसका पालन-पोषण हुआ
था, और अपनी रीति के अनुसार, उसने सब्त के दिन
आराधनालय में प्रवेश किया, और वह ऊँचे स्वर में पढ़ने के
लिये खड़ा हो गया।

17 और यशायाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक उसे दी गई और,
पुस्तक को खोलने पर, उसने वह जगह निकाली जहाँ पर यह
लिखा था,

18 "प्रभु का आत्मा मुझ पर है, क्योंकि उसने कंगालों को
सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है। उसने मुझे
इसलिए भेजा है कि बन्दियों पर छुटकारे की और अंधों को
दृष्टि पाने की घोषणा करूँ, और जो कुचले हुए हैं उनको
छुड़ाऊँ,

19 और प्रभु के हितकारी वर्ष की घोषणा करूँ।"

20 और पुस्तक को लपेटकर और उसे परिचारक को वापस
देकर, वह बैठ गया। और आराधनालय के सब लोगों की
आँखें उस पर लगी हुई थीं।

21 तब उसने उनसे कहना आरम्भ किया, "आज ही यह लेख
तुम्हारे सुनते-सुनते पूरा हुआ है।"

22 और सभी लोगों ने उसके लिए भली बातों को बोला और जो
अनुग्रह की बातें उसके मुँह से निकलती थीं वे उन पर
अचम्भित थे, और उन्होंने कहा, "क्या यह वही यूसुफ का पुत्र
नहीं है?"

23 और उसने उनसे कहा, "तुम मुझ पर यह कहावत अवश्य
ही कहोगे, 'हे वैद्य, अपने आप को चंगा कर। जो कुछ भी हम
ने सुना है कि कफरनहूम में हुआ था, उसे यहाँ अपने नगर में
भी कर।'"

24 परन्तु उसने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि किसी भी
भविष्यद्वक्ता को उसके नगर में स्वीकार नहीं किया गया है।

25 परन्तु मैं तुम से बिलकुल सच कहता हूँ कि एलिय्याह के
दिनों में इस्राएल में बहुत सी विधवाएँ थीं, जिस समय में तीन

Luke 5:1

वर्ष और छः महीनों तक आकाश बन्द था, जब सारे देश में बड़ा अकाल पड़ा था।

26 परन्तु एलिय्याह को सीदोन के सारपत की एक विधवा स्त्री को छोड़ कर, उनमें से किसी के पास नहीं भेजा गया था।

27 और एलीशा भविष्यद्वक्ता के समय इस्राएल में बहुत से कोढ़ी थे, परन्तु सीरिया के निवासी नामान को छोड़ कर उनमें से कोई भी शुद्ध नहीं किया गया था।"

28 और जब उन्होंने ये बातें सुनीं तो जितने लोग आराधनालय में थे वे सब क्रोध से भर गए।

29 और उठकर, वे उसे नगर के बाहर लेकर गए, और जिस पहाड़ पर उनका नगर बसा हुआ था, वे उसे उसकी चोटी पर ले गए, ताकि उसे वहाँ से फेंक दें।

30 परन्तु वह, उनके मध्य में से निकलकर, अपने मार्ग पर चला गया।

31 और वह कफरनहूम को पहुँचा, जो गलील का एक नगर था, और वह सब्त के दिन उनको शिक्षा दे रहा था।

32 और वे उसकी शिक्षा पर विस्मित थे, क्योंकि उसका वचन अधिकार सहित था।

33 और आराधनालय में एक मनुष्य था, जिसमें एक अशुद्ध दुष्ट का आत्मा था, और वह ऊँचे स्वर से चिल्ला उठा,

34 "आह! हे नासरत के यीशु, हमारा और तेरा आपस में क्या लेना-देना? क्या तू हमें नाश करने आया है? मैं तुझे जानता हूँ कि तू कौन है—तू परमेश्वर का पवित्र जन है!"

35 और यीशु ने उसे यह कहकर फटकार दिया, "चुप हो जा, और उसमें से निकल जा!" और उस दुष्ट ने उसे उनके बीच में पटक दिया और उसे बिना हानि पहुँचाए उसमें से निकल गया।

36 और हर एक जन विस्मित हो गया, और वे एक दूसरे से यह कहकर बातें करने लगे, "यह कैसा वचन है, कि वह अधिकार और सामर्थ्य के साथ अशुद्ध आत्माओं को आदेश देता है, और वे निकल जाती हैं?"

37 और चारों ओर के प्रदेश के हर एक भाग में उसके विषय में समाचार फैल गया।

38 तब वह आराधनालय में से उठकर शमौन के घर में गया। और शमौन की सास तेज बुखार से पीड़ित थी, और उन्होंने उसके लिये उससे विनती की।

39 और उसके निकट खड़े होकर, उसने बुखार को डाँटा और वह उस पर से उतर गया, और तुरन्त ही वह उठ खड़ी हुई और उनकी सेवा करना आरम्भ कर दिया।

40 और जब सूर्य डूब रहा था, तो जिन लोगों के पास विभिन्न प्रकार की बीमारियों में पड़े हुए व्यक्ति थे, वे सब उन्हें उसके पास ले आए और, उनमें से हर एक पर अपने हाथों को रखकर, वह उन्हें चंगा कर रहा था।

41 और बहुतों में से दुष्टात्माएँ भी चिल्लाते हुए, और यह कहते हुए निकल रहे थे, "तू परमेश्वर का पुत्र है!" परन्तु वह उन्हें फटकार रहा था, और बोलने नहीं दे रहा था, क्योंकि वे जानते थे कि वह मसीह था।

42 और जब दिन निकला, तो अलग होकर, वह एक एकांत स्थान में गया, परन्तु भीड़ उसे ढूँढ़ती हुई उसके पास आई, और वे उसे रोकने लगे कि हमारे पास से न जा।

43 परन्तु उसने उनसे कहा, "मुझे अन्य नगरों में भी अवश्य ही परमेश्वर के राज्य के विषय में घोषणा करनी है, क्योंकि इसी के लिए मुझे भेजा गया था।"

44 और वह यहूदिया के आराधनालयों में प्रचार कर रहा था।

Luke 5:1

1 और ऐसा हुआ कि भीड़ उसको दबा रही थी और परमेश्वर का वचन सुन रही थी, और वह गन्नेसरत की झील के किनारे पर खड़ा हुआ था।

Luke 5:1

2 और उसने झील के किनारे पर दो नावों को खड़े देखा, परन्तु
मछुआरे उन पर से उतर चुके थे और अपने जालों को धो रहे
थे।

3 तब वह उन नावों में से एक पर चढ़ गया, जो कि शमौन की
थी, और उससे निवेदन किया कि उसे स्थल से थोड़ा सा हटा
ले। तब वह बैठ गया और वह नाव पर से ही भीड़ को शिक्षा दे
रहा था।

4 तब जब उसने बोलना बन्द कर दिया, तो उसने शमौन से
कहा, "गहरे पानी में चल और मछलियाँ पकड़ने के लिये
अपने जालों को डाल।"

5 परन्तु उत्तर देते हुए, शमौन ने कहा, "हे स्वामी, हमने पूरी
रात मेहनत की और कुछ भी नहीं पकड़ा; परन्तु तेरी बात पर,
मैं जालों को डालूँगा।"

6 और जब उन्होंने ऐसा किया, तो उन्होंने बहुत बड़ी संख्या में
मछलियाँ पकड़ीं, और उनके जाल फटने लगे।

7 और उन्होंने दूसरी नाव पर सवार अपने साथियों को संकेत
किया कि वे आकर उनकी सहायता करें, और उन्होंने आकर
दोनों नावों को यहाँ तक भर लिया, कि वे डूबने लगीं।

8 परन्तु जब शमौन पतरस ने यह देखा, तो वह यीशु के पाँवों
पर यह कहते हुए गिर पड़ा, "हे प्रभु, मेरे पास से चला जा,
क्योंकि मैं एक पापी मनुष्य हूँ!"

9 क्योंकि उसे और उन सब को जो उसके साथ थे इतनी
मछलियों के पकड़े जाने ने स्तब्ध कर दिया था,

10 और वैसे ही याकूब और यूहन्ना को भी, जो जब्दी के पुत्र थे,
और जो शमौन के साथ सहभागी थे और यीशु ने शमौन से
कहा, "मत डर; अब से तू मनुष्यों को पकड़ा करेगा।"

11 और जब वे अपनी नावों को स्थल पर ले आए, तो उन्होंने
सब कुछ छोड़ दिया और उसके पीछे हो लिए।

12 और ऐसा हुआ कि वह किसी नगर में था, और देखो, एक
मनुष्य कोढ़ से भरा हुआ था। और यीशु को देखकर, वह
अपने मुँह के बल गिरा, और उससे यह कहकर याचना करने
लगा, "हे प्रभु, यदि तेरी इच्छा हो, तो तू मुझे शुद्ध कर सकता
है।"

13 और उसने अपना हाथ बढ़ाया और उसे यह कहकर छू
लिया, "मेरी यह इच्छा है। शुद्ध हो जा।" और तुरन्त ही उस पर
से कोढ़ जाता रहा।

14 और उसने उसे किसी से भी न कहने का आदेश दिया,
परन्तु, "जा, और अपने आपको याजक को दिखा, और जैसा
मूसा ने आदेश दिया है अपने शुद्ध होने के विषय में बलिदान
चढ़ा, ताकि उन पर गवाही हो।"

15 परन्तु उसके बारे में चर्चा और भी फैलती गई, और बड़ी
भीड़ एक साथ उसकी सुनने के लिये और अपनी बीमारियों से
चंगी होने के लिये आई।

16 परन्तु वह निकलकर निर्जन स्थानों में चला गया और प्रार्थना
करने लगा।

17 और ऐसा हुआ कि उस दिनों में से एक में वह शिक्षा दे रहा
था, और फरीसी और व्यवस्थापक वहाँ बैठे हुए थे जो गलील
और यहूदिया के हर एक गाँव से और यरूशलेम से आए थे,
और चंगा करने के लिये प्रभु की ओर से सामर्थ्य उसके साथ
थी।

18 और देखो, कई लोग एक मनुष्य को खाट पर लेकर आए
जो लकवे से ग्रस्त था, और वे उसे भीतर ले जाने और यीशु के
सामने रखने का उपाय ढूँढ़ रहे थे।

19 और भीड़ के कारण उसे भीतर ले जाने का उपाय न मिलने
पर, वे छत पर चढ़ गए और खपरैल हटाकर उसे खाट समेत
यीशु के सामने बीच में उतार दिया।

20 और उनके विश्वास को देखकर, उसने कहा, "हे मनुष्य, तेरे
पापों से तुझे क्षमा कर दिया गया है।"

21 और शास्त्रियों और फरीसियों ने यह कहकर विवाद करना
आरम्भ कर दिया, "यह कौन है जो परमेश्वर की निन्दा करता
है? केवल परमेश्वर के अलावा पापों को क्षमा करने में कौन
सक्षम है?"

Luke 6:1

22 परन्तु यीशु ने, उनके विचारों को जानकर, उत्तर देते हुए
उनसे कहा, "तुम अपने-अपने हृदयों में विवाद क्यों कर रहे
हो?

23 सहज क्या है, क्या यह कहना, 'तेरे पापों से तुझे क्षमा कर
दिया गया है,' या यह कहना, 'उठ जा और चल फिर?'

24 परन्तु इसलिए कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र के पास
पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने का अधिकार भी है,"—उसने
उस व्यक्ति से कहा जो लकवे से ग्रस्त था, "मैं तुझ से कहता
हूँ, उठ जा, और अपनी खाट उठा ले, और अपने घर को चला
जा।"

25 और वह तुरन्त ही उनके सामने उठ खड़ा हुआ, और जिस
पर वह लेटा हुआ था उसे उठा लिया, और परमेश्वर की प्रशंसा
करता हुआ अपने घर को चला गया।

26 और वे सब स्तब्ध रह गए और परमेश्वर की प्रशंसा करने
लगे, और वे बहुत भयभीत हो गए थे, और कहने लगे, "आज
हम ने अनोखी बातें देखी हैं।"

27 और इन बातों के पश्चात, वह बाहर निकला और लेवी नाम
के एक चुंगी लेनेवाले को चुंगी की चौकी पर बैठे देखा, और
उसने उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले।"

28 और सब कुछ पीछे छोड़कर, वह उठ खड़ा हुआ और
उसका अनुसरण करना आरम्भ कर दिया।

29 और लेवी ने अपने घर में उसके लिये एक बड़ा भोज दिया,
और वहाँ पर चुंगी लेनेवालों की और अन्य लोगों की एक बड़ी
भीड़ थी, जो उनके साथ भोजन करने बैठे थे।

30 परन्तु फरीसी और उनके शास्त्री उसके चेलों से, यह
कहकर शिकायत कर रहे थे, "तुम चुंगी लेनेवालों और पापियों
के साथ क्यों खाते और पीते हो?"

31 और उत्तर देते हुए, यीशु ने उनसे कहा, "जो लोग भले-चंगे
हैं उनको वैद्य की आवश्यकता नहीं है, परन्तु उनको है जो
रोगी हैं।

32 मैं धर्मियों को बुलाने के लिए नहीं, परन्तु पापियों को
पश्चाताप कराने के लिये आया हूँ।"

33 फिर उन्होंने उससे कहा, "यूहन्ना के चेले तो अक्सर उपवास
रखते और प्रार्थना करते हैं, और वैसे ही फरीसियों के भी।
परन्तु तेरे वाले तो खाते और पीते हैं।"

34 तब उसने उनसे कहा, "जब तक दूल्हा उनके साथ है तब
तक तुम दुल्हन के कक्ष के पुत्रों से उपवास कराने में सक्षम
नहीं होते हो, क्या तुम होते हो?

35 परन्तु सचमुच ऐसे दिन भी आएँगे जब दूल्हे को उनसे
अलग कर दिया जाएगा। तब, उन दिनों में, वे उपवास करेंगे।"

36 तब उसने उसने एक दृष्टान्त भी कहा। "कोई भी मनुष्य,
किसी नए कपड़े में से टुकड़ा काटकर, उसे पुराने कपड़े में
नहीं सिल देता। वरना नया फट जाएगा, और वह पुराना वाला
भी उससे मेल नहीं खाएगा जो नए वाले में से है।

37 और कोई भी नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरता।
वरना नया दाखरस मशकों को फाड़ देगा, और वह बह
जाएगा, और वे मशकें भी नष्ट हो जाएँगी।

38 परन्तु उस व्यक्ति को नया दाखरस नई मशकों में भरना
चाहिये।

39 कोई भी, पुराना पीने के पश्चात, नया नहीं माँगता, क्योंकि
वह कहता है, 'पुराना ही अच्छा है।'"

Luke 6:1

1 और ऐसा हुआ कि, एक सब्त के दिन वह गेहूँ के खेतों में से
होकर जा रहा था, और उसके चेले गेहूँ की बालें तोड़कर, और
उनको अपने हाथों से मलकर खा रहे थे।

2 परन्तु फरीसियों में से कुछ कहने लगे, "तुम वह काम क्यों
कर रहे हो जिसे सब्त के दिन करना व्यवस्था के अनुसार नहीं
है?"

3 और उनको उत्तर देते हुए, यीशु ने कहा, “क्या तुम ने यह
नहीं पढ़ा है, कि जब दाऊद और उसके साथी भूखे थे तो उसने
क्या किया था:

4 कैसे उसने परमेश्वर के घर में प्रवेश किया और भेंट की
रोटियाँ ले लीं, और खा लीं, और जो उसके साथ थे उनको भी
दीं, जिन रोटियों को याजकों को अलावा और किसी के लिए
खाना व्यवस्था के अनुसार नहीं है?”

5 और उसने उनसे कहा, “मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का
भी प्रभु है।”

6 और ऐसा हुआ कि, एक अन्य सब्त के दिन, वह
आराधनालय में गया और शिक्षा देने लगा, और वहाँ पर एक
मनुष्य था, और उसका दाहिना हाथ सूखा हुआ था।

7 परन्तु शास्त्री और फरीसी उसे बड़े ध्यान से देख रहे थे, कि
वह सब्त के दिन चंगा करता है कि नहीं, ताकि वे उस पर दोष
लगाने का अवसर पाएँ।

8 परन्तु वह उनके विचार जानता था और इसलिए उसने उस
सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, “उठ, और बीच में खड़ा हो।”
अतः वह उठा और खड़ा हो गया।

9 तब यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से यह पूछता हूँ, सब्त के
दिन भला करना क्या यह व्यवस्था के अनुसार है या बुरा
करना, किसी जीवन को बचाना या नाश करना?”

10 और उसने चारों ओर उन सभी को देखा और उससे कहा,
“अपना हाथ बढ़ा।” और उसने ऐसा ही किया, और उसका
हाथ चंगा हो गया था।

11 परन्तु वे क्रोध से भर गए थे और वे एक दूसरे से इस बारे में
बात कर रहे थे कि वे यीशु के साथ क्या करें?

12 और ऐसा हुआ कि, उन दिनों में, वह पहाड़ पर प्रार्थना करने
के लिए चला गया, और वह सारी रात परमेश्वर से प्रार्थना करने
में बिता रहा था।

13 और जब दिन निकला, तो उसने अपने चेलों को बुलाया,
और उसने उनमें से 12 को चुन लिया, जिनको उसने प्रेरित भी
कहा:

14 शमौन (जिसका नाम उसने पतरस भी रखा) और उसका
भाई अन्द्रियास; और याकूब और यूहन्ना; और फिलिप्पुस और
बरतुल्मै;

15 और मत्ती और थोमा; और हलफई का पुत्र याकूब; और
शमौन जो जेलोतेस कहलाता है;

16 और याकूब का पुत्र यहूदा; और यहूदा इस्करियोती, जो
धोखा देने वाला बन गया था।

17 और वह उनके साथ नीचे उतर आया और अपने चेलों की
बड़ी भीड़ और एक बड़ी संख्या में उन लोगों के साथ एक
मैदान में खड़ा हुआ, जो सारे यहूदिया और यरूशलेम और
सोर और सीदोन के समुद्रीतट से थे,

18 वे उसकी सुनने और अपनी बीमारियों से चंगा होने के लिये
उसके पास आए थे। और जो अशुद्ध आत्माओं के द्वारा सताए
हुए थे वे भी चंगे हो रहे थे।

19 और सम्पूर्ण भीड़ उसे छूने की खोज में थी क्योंकि उसमें से
सामर्थ्य निकल रही थी और सब को चंगा कर रही थी।

20 और उसने अपने चेलों पर दृष्टि डाली, और कहा, “धन्य हैं
जो दीन हैं, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।

21 धन्य हैं वे जो अभी भूखे हैं, क्योंकि तुम तृप्त किए जाओगे।
धन्य हैं वे जो अभी रो रहे हैं, क्योंकि तुम हँसोगे।

22 धन्य हो तुम जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से द्वेष
करते हैं, और तब जब वे तुम को निकाल देते हैं और तुम्हारा
अपमान करते हैं और बुरा जानकर तुम्हारे नाम को खारिज
कर देते हैं।

23 उस दिन आनन्दित होना और प्रसन्नता में उछलना, क्योंकि
देखो, तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है। क्योंकि उनके

Luke 6:1

पिताओं ने भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसे ही कामों के अनुसार किया था।

24 परन्तु हे धनवानों, तुम पर हाय, क्योंकि तुम अपनी शान्ति
पा चुके हो।

25 तुम पर हाय जो अभी तृप्त हो, क्योंकि तुम भूखे होओगे।
उन पर हाय जो अभी हँस रहे हैं, क्योंकि तुम शोक करोगे और
रोओगे।

26 तुम पर हाय कि जब सब मनुष्य तुम्हारे लिए कल्याण को
बोलें, क्योंकि उनके पिताओं ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ
भी ऐसे ही कामों के अनुसार किया था।

27 परन्तु मैं तुम से कहता हूँ जो सुन रहे हैं, कि अपने शत्रु से
प्रेम करो और उनके साथ भलाई करो जो तुम से द्वेष रखते हैं।

28 जो तुम को श्राप देते हैं उनको आशीष दो और जो तुम्हारे
साथ दुर्व्यवहार करते हैं उनके लिए प्रार्थना करो।

29 जो तुम्हारे एक गाल पर मारे, उस व्यक्ति की ओर दूसरा भी
फेर दो, और जो तुम्हारा वस्त्र छीन ले, उस व्यक्ति को तुम्हारा
कुर्ता लेने से भी न रोकना।

30 जो तुम से माँगते हैं उन सब को दो, और जो तुम्हारा सामान
छीन कर ले जाए, उस व्यक्ति से वह वापस न माँगना।

31 और जैसी तुम इच्छा करते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें,
उनके साथ भी वैसा ही करो।

32 और यदि तुम उनसे ही प्रेम रखते हो जो तुम से प्रेम रखते
हैं, तो तुम्हारे लिए इसका क्या श्रेय है? क्योंकि पापी लोग भी
उनसे ही प्रेम रखते हैं जो उनसे प्रेम रखते हैं।

33 और यदि तुम सचमुच उन लोगों के साथ ही भलाई करते
हो जो तुम्हारे साथ भलाई करते हैं, तो तुम्हारे लिए इसका क्या
श्रेय है? यहाँ तक कि पापी भी तो ऐसा ही करते हैं।

34 और यदि तुम उनको ही उधार देते हो जिनसे वापस पाने
की अपेक्षा रखते हो, तो तुम्हारे लिए इसका क्या श्रेय है? यहाँ
तक कि पापी लोग भी अन्य पापियों को उधार देते हैं, ताकि वे
उन्हीं सामानों को वापस प्राप्त करें।

35 परन्तु अपने शत्रुओं से प्रेम रखो और उनके साथ भलाई
करो, और वापसी में कुछ भी पाने की अपेक्षा न रखते हुए,
उधार दो, और तुम्हारे लिये इसका बड़ा प्रतिफल होगा, और
तुम परमप्रधान की सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह कृतघ्न और
बुरे लोगों के प्रति भी कृपालु है।

36 दयावन्त बनो, जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है।

37 और दोष मत लगाओ, और निश्चय ही तुम पर भी दोष नहीं
लगाया जाएगा। और अपराधी न ठहराओ, और निश्चय ही तुम
भी अपराधी नहीं ठहराए जाओगे। छोड़ दो, और तुम्हें भी
छोड़ दिया जाएगा।

38 दो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: एक सही नाप में—दबा हुआ,
हिलाया हुआ और उभरता हुआ—वे तुम्हारी गोद में डालेंगे।
क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी
नापा जाएगा।"

39 फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त भी कहा। "एक अंधा व्यक्ति
किसी अन्य अंधे जन का मार्गदर्शन करने में सक्षम नहीं होता
है, क्या वह कर सकता है? क्या वे दोनों ही गड्ढे में नहीं गिर
पड़ेंगे?

40 कोई भी चेला अपने गुरु से ऊपर नहीं होता है, परन्तु जो
कोई भी पूर्ण रूप से प्रशिक्षित हो वह अपने गुरु के समान
होगा।

41 और तुम क्यों उस लकड़ी के तिनके को देखते हो जो तुम्हारे
भाई की आँख में है, परन्तु तुम उस लट्ठे पर ध्यान नहीं देते जो
तुम्हारी अपनी ही आँख में है?

42 तुम कैसे अपने भाई से कह सकते हो, 'हे भाई, ला मैं उस
लकड़ी के तिनके को निकाल दूँ जो तेरी आँख में है,' जब कि
तुम को वह लट्ठा नहीं दिखता जो तुम्हारी अपनी ही आँख में
है? हे पाखण्डी! पहले अपनी ही आँख से लट्ठा निकाल, और
तब तू स्पष्ट रूप से देख कर उस लकड़ी के तिनके को निकाल
पाएगा जो तेरे भाई की आँख में है।

43 क्योंकि ऐसा कोई अच्छा पेड़ नहीं जो सड़ा हुआ फल उत्पन्न
करता हो, और न ही, दूसरे पहलू में, ऐसा कोई सड़ा हुआ पेड़
है, जो अच्छा फल उत्पन्न करता हो।

44 क्योंकि हर एक पेड़ को उसके अपने फल से पहचाना जाता
है। क्योंकि वे लोग किसी कंटीली झाड़ी से अंजीर इकट्ठे नहीं
करते, और न ही वे लोग किसी झड़बेरी से अंगूर इकट्ठे करते
हैं।

45 भला व्यक्ति अपने हृदय के भले खजाने से उन बातों को
उत्पन्न करता है जो भली होती हैं, और बुराई से भरा बुरा
व्यक्ति उन बातों को उत्पन्न करता है जो बुरी होती हैं। क्योंकि
जो हृदय में बहुतायत से भरा है वही उसके मुँह से बाहर आता
है।

46 और तुम क्यों मुझे 'हे प्रभु, हे प्रभु,' कहते हो, परन्तु जो मैं
कहता हूँ वह नहीं करते?

47 हर एक वह जन जो मेरे पास आ रहा है, और मेरी बातें सुन
रहा है, और उनका पालन कर रहा है, तो मैं तुम्हें दिखाऊँगा
कि वह किसके समान है।

48 वह एक घर बनाने वाले ऐसे मनुष्य के समान है, जिसने
खुदाई की और बहुत गहरा खोदा और चट्टान पर नींव को
डाला। फिर जब बाढ़ आई, तो पानी की धारा उस घर पर लगी,
परन्तु वह उसे हिला न सकी, क्योंकि उसे पक्का बनाया गया
था।

49 परन्तु जो व्यक्ति सुनता है और पालन नहीं करता, वह उस
मनुष्य के समान है जिसने भूमि पर बिना नींव के घर को
बनाया, जिस पर पानी की धारा लगी, और वह तुरन्त ही गिर
गया, और उस घर का सत्यानाश बहुत बड़ा था।"

Luke 7:1

1 जब वह लोगों के सुनते हुए अपनी सारी बातों को समाप्त
कर चुका, तो वह कफरनहूम में आया।

2 और किसी सूबेदार का एक दास, जो उसके द्वारा अत्यन्त
सम्माननीय था, बीमार होकर, मरने पर ही था।

3 और यीशु की चर्चा सुनकर, उसने यहूदियों के पुरनियों को
उसके पास भेजा, कि उससे आने की विनती करें ताकि वह
उसके दास को बचा ले।

4 और जब वे यीशु के पास आए, तो यह कहकर आग्रहपूर्वक
उन्होंने उससे विनती की, "वह इस योग्य है कि तू उसके लिये
ऐसा करे,

5 क्योंकि वह हमारी जाति से प्रेम रखता है, और उसी ने हमारे
लिए आराधनालय को बनाया है।"

6 और यीशु उनके साथ चला गया। परन्तु जब वह उस घर से
अधिक दूर न था, तो सूबेदार ने कई मित्रों को भेजा, कि उससे
कहें , "हे प्रभु, अपने आप को परेशान न कर, क्योंकि मैं इस
योग्य नहीं हूँ कि तू मेरी छत के तले आए।

7 इसी कारण से मैंने अपने आप को इस योग्य भी न समझा
कि तेरे पास आऊँ। परन्तु वचन ही कह दे कि मेरा सेवक चंगा
हो जाए।

8 क्योंकि मैं भी एक ऐसा मनुष्य हूँ जिसे अधिकार के तले रखा
गया है, और सैनिक मेरे अधीन हैं, और मैं इससे कहता हूँ,
'जा,' और वह चला जाता है, और किसी दूसरे से, 'आ,' और
वह आता है; और अपने दास से, 'यह कर,' और वह उसे
करता है।"

9 और जब यीशु ने यह सुना, तो वह उस पर अचम्भित हुआ,
और उस भीड़ की ओर घूमकर जो उसके पीछे आ रही थी,
उसने कहा, "मैं तुम से कहता हूँ, मैंने इस्राएल में भी ऐसा
विश्वास नहीं पाया।"

10 और जिन लोगों को भेजा गया था जब वे वापस घर लौटे, तो
उन्होंने उस दास को चंगा पाया।

11 और अगले दिन ऐसा हुआ कि वह नाईन नामक एक नगर
को गया, और उसके चेले और एक बड़ी भीड़ उसके साथ जा
रही थी।

12 और जब वह नगर के फाटक के पास पहुँचा, और देखो,
एक व्यक्ति जो मर गया था उसे बाहर लाया जा रहा था, और

Luke 7:1

वह अपनी माँ का एकलौता पुत्र था (और वह विधवा थी), और नगर की एक काफी बड़ी भीड़ उसके साथ थी।

13 और जब उसने उसे देखा, तो प्रभु को उस पर तरस आया, और उसने कहा, "मत रो।"

14 और उसने पास जाकर अर्थी को छुआ, और जो उसे उठाए हुए थे वे ठहर गए। तब उसने कहा, "हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ जा।"

15 और वह मृत व्यक्ति उठ बैठा और बोलने लगा, और उसने उसे उसकी माँ को सौंप दिया।

16 और वे सब के सब भयभीत हो गए, और वे यह कहकर, परमेश्वर की प्रशंसा कर रहे थे, "हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है" और "परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपादृष्टि की है।"

17 और उसके विषय में यह बात सारे यहूदिया और आसपास के सम्पूर्ण प्रदेश में फैल गई।

18 और यूहन्ना को उसके चेलों ने इन सब बातों के विषय में सूचना दी। और अपने चेलों में से दो को बुलाकर, यूहन्ना ने

19 प्रभु के पास यह पूछने के लिये भेजा, "क्या वह तू ही है जो आनेवाला है, या हम किसी दूसरे की अपेक्षा करें?"

20 और जब वे उसके पास आए, तो उन मनुष्यों ने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने हमें तेरे पास यह पूछने को भेजा है, 'क्या वह तू ही है जो आनेवाला है, या हम किसी दूसरे की अपेक्षा करें?'"

21 उसी घड़ी उसने बहुतों को बीमारियों से और पीड़ाओं से और बुरी आत्माओं से चंगा किया, और बहुत से अंधे लोगों को दृष्टि प्रदान की।

22 और उत्तर देते हुए, उसने उनसे कहा, "जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो: अंधे फिर से देख रहे हैं, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जा रहे हैं और बहरे सुन रहे हैं, मृतकों को जिलाया जा रहा है, कंगालों को सुसमाचार सुनाया जा रहा है,

23 और धन्य है हर वह जन जो मेरे कारण आहत नहीं हुआ है।"

24 उसके पश्चात जब यूहन्ना के सन्देशवाहक चले गए, तो उसने भीड़ से यूहन्ना के विषय में कहना आरम्भ किया, "तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को?

25 परन्तु तुम फिर क्या देखने गए थे? क्या कोमल वस्त्र पहने हुए मनुष्य को? देखो, जो मूल्यवान वस्त्र पहनते, और विलासता से जीवन जीते हैं वे राजमहलों में रहते हैं।

26 परन्तु तुम फिर क्या देखने गए थे? किसी भविष्यद्वक्ता को? हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, वरन् भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को।

27 यह वही है जिसके विषय में यह लिखा गया है, 'देख, मैं अपने सन्देशवाहक को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा।'

28 "मैं तुम से कहता हूँ, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें से यूहन्ना से बड़ा कोई भी नहीं है, परन्तु जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उससे भी बड़ा है।"

29 (और चुंगी लेनेवालों समेत, सब लोगों ने जिन्होंने सुना था, यूहन्ना के जल-संस्कार का बपतिस्मा लेकर, परमेश्वर को धर्मी मान लिया था।

30 परन्तु फरीसियों और व्यवस्थापकों ने, उससे बपतिस्मा न लेकर, उनके लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकृत कर दिया।)

31 "तो फिर, किससे, मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना करूँ? और वे किसके समान हैं?

32 वे उन बालकों के समान हैं जो बाजार में बैठे हुए हैं और एक दूसरे को पुकार रहे हैं, और जो कह रहे हैं, 'हमने तुम्हारे लिये बाँसुरी बजाई, और तुम नाचे नहीं। हमने अंतिम संस्कार का गीत गाया, और तुम ने विलाप नहीं किया।'

Luke 8:1

33 क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला न रोटी खाता आया, और
न ही दाखरस पीता आया, और तुम कहते हो, 'उसमें दुष्टात्मा
है।'

34 मनुष्य का पुत्र खाता और पीता आया, और तुम कहते हो,
'देखो, एक मनुष्य, जो पेटू है और पियक्कड़ है, जो चुंगी
लेनेवालों का और पापियों का मित्र है!'

35 परन्तु बुद्धि को उसकी सब सन्तानों के द्वारा न्यायोचित
ठहराया गया है।"

36 फिर किसी फरीसी ने उससे विनती की कि उसके साथ
भोजन करे। अतः उस फरीसी के घर में जाकर वह भोजन
करने को बैठा।

37 और देखो, उस नगर में एक स्त्री थी जो पापिनी थी। और
जब उसने यह जाना कि वह फरीसी के घर में भोजन करने
को बैठा है, तो वह संगमरमर के पात्र में सुगंधित तेल लेकर
आई।

38 और उसके पाँवों के पास पीछे खड़ी होकर, वह रोने लगी।
और वह उसके पाँवों को अपने आँसुओं से भिगाने लगी, और
वह अपने सिर के बालों से उनको पोंछ रही थी और उसके
पाँवों को चूम रही थी और सुगंधित तेल से उनका अभिषेक
कर रही थी।

39 और जब उस फरीसी ने जिसने उसे आमंत्रित किया था यह
देखा, तो यह कहकर, वह अपने आप से बोलने लगा, "यदि
यह मनुष्य भविष्यद्वक्ता होता, तो यह जान जाता कि जो उसे
छू रही है, वह कौन और किस प्रकार की स्त्री है, अर्थात वह
तो पापिनी है।"

40 और उत्तर देते हुए, यीशु ने उससे कहा, "हे शमौन, मुझे तुझ
से कुछ कहना है।" और वह बोला, "हे गुरु, कह!"

41 "किसी महाजन के दो देनदार थे। एक के 500 दीनार
बकाया थे, और दूसरे के 50 दीनार।

42 जब उनके पास चुकाने के लिए पर्याप्त नहीं था, तो उसने
दोनों को क्षमा कर दिया। अतः उनमें से कौन उससे अधिक
प्रेम रखेगा?"

43 शमौन ने उत्तर देते हुए कहा, "मेरी समझ में वह जिसका
उसने अधिक क्षमा कर दिया।" तब उसने उससे कहा, "तूने
सही रीति से न्याय किया है।"

44 और वह उस स्त्री की ओर घूमा और शमौन से कहा, "क्या
तू इस स्त्री को देखता है? मैं तेरे घर में आया। तूने मेरे पाँवों के
लिये मुझे पानी न दिया, परन्तु इसने मेरे पाँव अपने आँसुओं से
भिगोए और अपने बालों से उनको पोंछा।

45 तूने मुझे चूमा नहीं, परन्तु जब से मैं भीतर आया हूँ, इसने
मेरे पाँवों का चूमना बन्द नहीं किया।

46 तूने तेल से मेरे सिर का अभिषेक नहीं किया, परन्तु इसने
सुगंधित तेल से मेरे पाँवों का अभिषेक किया है।

47 इसलिए मैं तुझ से कहता हूँ, कि इसके पाप, जो बहुत थे,
क्षमा कर दिए गए हैं—क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया है। परन्तु
जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है वह थोड़ा प्रेम करता है।"

48 फिर उसने उससे कहा, "तेरे पाप क्षमा हो गए हैं।"

49 और जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे वे आपस में कहने
लगे, "यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?"

50 फिर उसने उस स्त्री से कहा, "तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया
है। शांति से चली जा।"

Luke 8:1

1 और ऐसा हुआ कि इसके तुरन्त बाद ही, उसने परमेश्वर के
राज्य के विषय में प्रचार करते हुए और सुसमाचार की घोषणा
करते हुए, नगर-नगर और गाँव-गाँव में से होकर यात्रा करना
आरम्भ कर दिया, और वे बारह उसके साथ थे,

Luke 8:1

2 और कुछ स्त्रियाँ भी जिनको बुरी आत्माओं से और बीमारियों
से चंगा किया गया था: और मरियम जिसे मगदलीनी कहा
जाता था, और जिसमें से सात दुष्टात्माएँ निकली थीं;

3 और योअन्ना, हेरोदेस के भण्डारी, खुज़ा की पत्नी; और
सूसन्नाह; और अन्य बहुत सी स्त्रियाँ; जो अपनी सम्पत्ति में से
उनकी सेवा कर रही थीं।

4 और जब एक बड़ी भीड़ इकट्ठा हुई, और नगर-नगर से
उसके पास चली आई, तो उसने एक दृष्टान्त में कहा:

5 "एक बोनेवाला अपने बीज बोने के लिए निकला, और जब
उसने बीज बोए, तो कुछ मार्ग के किनारे गिर गए, और वह
पैरों के नीचे रौंदा गया, और आकाश के पक्षियों ने उसे चुग
लिया।

6 और अन्य बीज चट्टान पर गिरा, और जब वह उगा, तो वह
इसलिए सूख गया, क्योंकि उसको नमी नहीं मिली थी।

7 और अन्य बीज झाड़ियों के बीच में गिरा, और उसके साथ
झाड़ियाँ भी बढ़ीं और उसे दबा लिया।

8 और अन्य बीज अच्छी भूमि पर गिरा, और जब वह उगा, तो
उसने सौ गुणा अधिक फल उत्पन्न किया।" इन बातों को
कहने के पश्चात, उसने ऊँचे शब्द से कहा, "जिसके सुनने के
कान हों, तो वह सुन ले।"

9 फिर उसके चेलों ने उससे प्रश्न पूछा, "इस दृष्टान्त का क्या
अर्थ है?"

10 और उसने कहा, "तुम को परमेश्वर के राज्य के भेदों की
समझ दी गई है, परन्तु अन्यों को दृष्टान्तों में बताया जाता है,
इसलिए कि 'देखते हुए भी, वे न देखें; और सुनते हुए भी, वे न
समझें।'

11 और दृष्टान्त का अर्थ यह है: बीज तो परमेश्वर का वचन है।

12 और मार्ग के किनारे वाले वे हैं जिन्होंने सुन लिया है, परन्तु
फिर शैतान आता है और उनके हृदयों में से वचन उठा ले
जाता है, ताकि वे विश्वास न करें और उद्धार न पाएँ।

13 और चट्टान पर वाले वे हैं जो, जब सुनते हैं, तो आनन्द से
वचन को ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु उनमें जड़ नहीं है; वे थोड़ी
देर के लिए विश्वास रखते हैं, और परीक्षा के समय पर वे चले
जाते हैं।

14 और जो झाड़ियों में गिरा, यह वाले वे हैं जो सुनते हैं, परन्तु
जब वे अपने मार्ग पर आगे बढ़ते हैं, तो वे चिन्ता और धन और
इस जीवन के सुख-विलास में फँस जाते हैं, और वे परिपक्व
फल उत्पन्न नहीं करते हैं।

15 परन्तु अच्छी भूमि वाले, यह वे हैं जिन्होंने, ईमानदार और
भले हृदय से वचन को सुना, और उसे सुरक्षित रूप से पकड़ा
और धीरज से फल लेकर आए।

16 और कोई भी दीया जलाकर उसे कटोरी से नहीं ढाँकता या
उसे खाट के नीचे नहीं रखता है। इसके बजाए, वह उसे दीवट
पर रखता है ताकि भीतर आनेवाले प्रकाश पाएँ।

17 क्योंकि कुछ भी छिपा नहीं है जो दिखाई नहीं देगा, और न
ही कोई ऐसा रहस्य है जिसे निश्चित रूप से जाना नहीं जाएगा
और वह प्रकट नहीं होगा।

18 इसलिए सावधान रहो कि तुम कैसे सुनते हो, क्योंकि
जिसके पास है, उसे वह दिया जाएगा, परन्तु जिसके पास नहीं
है, उससे वह भी ले लिया जाएगा, जिसे वह अपना समझता
है।"

19 फिर उसकी माता और उसके भाई उससे मिलने आए,
परन्तु भीड़ के कारण वे उसके पास नहीं जा पाए।

20 फिर उसे ऐसा सूचित किया गया, "तेरी माता और तेरे भाई
बाहर खड़े हुए हैं, और तुझे देखना चाहते हैं।"

21 परन्तु उत्तर देते हुए, उसने उनसे कहा, "मेरी माता और मेरे
भाई वे ही हैं जो परमेश्वर का वचन सुनते और मानते हैं।"

22 और ऐसा हुआ कि, उस दिनों में से एक में, वह और उसके
चेले एक नाव पर चढ़ गए, और उसने उनसे कहा, "आओ हम
झील के पार दूसरी ओर चलें।" अतः वे निकल पड़े।

Luke 8:1

23 परन्तु जब वे जलयात्रा कर रहे थे, तो उसे नींद आ गई। तब
उस झील पर आँधी आई, और वे भर जा रहे थे और संकट में
थे।

24 तब वे उसके पास पहुँचे और यह कहकर, उसे जगाया, "हे
स्वामी! हे स्वामी! हम नाश हो रहे हैं!" परन्तु वह जाग उठा,
और उसने आँधी को और पानी की लहरों को डाँटा और वे
थम गए, और वहाँ शान्ति हो गई।

25 फिर उसने उनसे कहा, "तुम्हारा विश्वास कहाँ है?" तब वे
डर गए और अचम्भित होकर, एक दूसरे से कहने लगे, "यह
कौन है, कि यह आँधी और पानी को भी आदेश देता है, और
वे उसकी मानते हैं?"

26 और वे खेते हुए गिरासेनियों के प्रदेश को गए, जो गलील के
दूसरी ओर है।

27 और जब वह स्थल पर उतरा, तो उस नगर का एक मनुष्य
उसे मिला, जिसमें दुष्टात्माएँ थीं। और लम्बे समय से उसने
कपड़े नहीं पहने थे, और वह घर में नहीं, परन्तु कब्रों में रहा
करता था।

28 और जब उसने यीशु को देखा, तो वह चिल्ला पड़ा, और
उसके सामने गिर गया, और ऊँचे स्वर से कहा, "हे परमप्रधान
परमेश्वर के पुत्र, यीशु, मेरा और तेरा आपस में क्या लेना-देना?
मैं तुझ से विनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दे।"

29 क्योंकि उसने उस अशुद्ध आत्मा को उस मनुष्य में से
निकल जाने की आज्ञा दी थी। क्योंकि बहुत बार उसने उसको
जकड़ लिया था, और उसे जंजीरों और बेड़ियों से बाँधा गया
था और पहरे में रखा गया था, और अपने बन्धनों को तोड़ कर,
वह जंगल में दुष्टात्मा के चलाए फिरता था।

30 तब यीशु ने उससे प्रश्न पूछा, "तेरा क्या नाम है?" और उसने
कहा, "सेना," क्योंकि उसमें बहुत सारी दुष्टात्माएँ प्रवेश कर
गई थीं।

31 और वे उससे विनती कर रही थीं कि वह उनको अथाह गड्ढे
में जाने की आज्ञा न दे।

32 और वहाँ पहाड़ पर सूअरों का एक बड़ा झुण्ड चर रहा था,
और उन्होंने उससे विनती की कि उनको उनमें जाने की
अनुमति प्रदान करे। और उसने उन्हें अनुमति दे दी।

33 तब वे दुष्टात्माएँ उस मनुष्य से निकल गईं और उन सूअरों
में प्रवेश कर गईं, और वह झुण्ड खड़ी ढलान पर से झपटकर
झील में जा गिरा और डूब गया।

34 और जो सूअरों की देखरेख कर रहे थे जब उन्होंने जो हुआ
था उसे देखा, तो वे भाग गए और नगर में और गाँव में जाकर
इसकी सूचना दी।

35 तब यह जो हुआ था उसको देखने को वे लोग निकले, और
वे यीशु के पास आए और जिस मनुष्य में से दुष्टात्माएँ निकल
गई थीं उसे यीशु के पाँवों के पास, कपड़े पहने और शान्तचित्त
बैठे पाया, और वे डर गए थे।

36 तब जिन्होंने देखा था उन्होंने उनको सूचित किया कि उस
मनुष्य को किस प्रकार से बचाया गया था जो दुष्टात्माओं के
वश में था।

37 और गिरासेनियों के प्रदेश के सब लोगों ने उससे विनती की
कि वह उनके पास से चला जाए, क्योंकि वे बड़े भयभीत हो
गए थे। तब वह वापस लौटने के लिए नाव पर चढ़ गया।

38 और जिस मनुष्य में से दुष्टात्माएँ निकली थीं वह उसके साथ
रहने के लिए उससे विनती करने लगा, परन्तु उसने उसे यह
कहकर विदा किया,

39 "अपने घर को लौट जा और जो कुछ परमेश्वर ने तेरे लिये
किया है उसका वर्णन कर।" अतः वह अपने मार्ग पर चला
गया, और जो कुछ यीशु ने उसके लिए किया था वह सम्पूर्ण
नगर के कोने-कोने में उस बात की घोषणा करने लगा।

40 फिर जब यीशु लौट आया, तो भीड़ ने उसका स्वागत किया,
क्योंकि वे सब उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

41 और देखो, एक मनुष्य आया जिसका नाम याईर था, और
वह एक आराधनालय का सरदार था। और यीशु के पाँवों पर
गिरकर, उसने उससे अपने घर आने के लिए विनती की।

42 क्योंकि उसके एकलौती पुत्री थी, जो 12 वर्ष की आयु की थी, और वह मरने पर थी। और जब वह जा रहा था, तब भी लोग उसे चारों ओर से घेरे हुए थे।

43 और एक स्त्री वहाँ थी जिसको 12 वर्ष से लहू बहता था, और जो, अपनी सारी जीविका वैद्यों पर खर्च कर चुकी थी, और किसी से भी चंगी होने में असमर्थ थी।

44 वह पीछे से आई और उसके वस्त्र के छोर को छू लिया, और तुरन्त ही उसका लहू बहना रुक गया।

45 और यीशु ने कहा, "वह कौन है जिसने मुझे छुआ है?" परन्तु जब सब इससे मुकर गए, तो पतरस ने कहा, "हे स्वामी, भीड़ तो तुझे चारों ओर से घेरे हुए है और तुझे दबा रही है।"

46 परन्तु यीशु ने कहा, "किसी ने मुझे छुआ है, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है।"

47 तब वह स्त्री, यह देखकर कि वह छिप नहीं सकती, काँपती हुई आई और उसके सामने गिर गई। सब लोगों के सामने उसने बताया कि उसने किस कारण से उसे छुआ था, और कैसे वह तुरन्त ही चंगी हो गई थी।

48 तब उसने उससे कहा, "हे पुत्री, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है। शान्ति से चली जा।"

49 जिस समय वह बोल ही रहा था, किसी व्यक्ति ने आराधनालय के सरदार के यहाँ से आकर कहा, "तेरी पुत्री मर गई है। अब गुरु को परेशान मत कर।"

50 परन्तु जब यीशु ने यह सुना, तो उसने उसे उत्तर दिया, "मत डर; केवल विश्वास रख, और वह बच जाएगी।"

51 और जब वह घर में आया, तो पतरस और यूहन्ना और याकूब, और उस बालिका के पिता, और माता को छोड़ कर और किसी को भी अपने साथ उसने प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी।

52 और वे सब उसके लिये विलाप कर रहे थे और उसके लिए अपनी छातियाँ पीट रहे थे, परन्तु उसने कहा, "विलाप मत करो, क्योंकि वह मरी नहीं है, परन्तु सो रही है।"

53 और वे उस पर हँसने लगे, यह जानते हुए कि वह मर गई है।

54 परन्तु उसने, उसके हाथ को पकड़कर, पुकारकर कहा, "हे पुत्री, उठ जा!"

55 और उसके प्राण लौट आए, और वह तुरन्त ही उठ खड़ी हुई, और उसने आज्ञा दी कि उसे कुछ खाने को दिया जाए।

56 और उसके माता-पिता विस्मित हो गए थे, परन्तु उसने उन्हें आदेश दिया कि जो हुआ था वह किसी से न कहना।

Luke 9:1

1 और जब उसने उन बारहों को एक साथ बुलाया, तो उसने उनको सब दुष्टात्माओं पर, और बीमारियों का उपचार करने की सामर्थ्य और अधिकार दिया।

2 और उसने उनको परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने और बीमारों को चंगा करने के लिये भेजा।

3 और उसने उनसे कहा, "मार्ग के लिये कुछ न लेना—न तो लाठी, न ही झोली, न ही रोटी, न ही चाँदी— और न ही दो कुर्ते लेना।

4 और जिस किसी भी घर में तुम प्रवेश करो, तो वहीं ठहरो और वहीं से विदा होना।

5 और जहाँ कहीं भी वे तुम को ग्रहण नहीं करते हैं, तो जब तुम उस नगर से निकलते हो, तब उनके विरोध में गवाही के रूप में अपने पाँवों की धूल झाड़ देना।"

6 तब वे चले गए और गाँव-गाँव होकर, परमेश्वर के सुसमाचार की घोषणा करते हुए और सब जगहों में चंगा करते हुए गए।

Luke 9:1

7 और जो सब हो रहा था उसके विषय में अधीनस्थ शासक
हेरोदेस ने सुना, और वह घबरा गया, क्योंकि कुछ लोगों के
द्वारा ऐसा कहा गया था कि यूहन्ना मरे हुओं में से जी उठा है।

8 और कुछ लोगों के द्वारा ऐसा कि एलिय्याह प्रकट हुआ है,
परन्तु अन्यों के द्वारा ऐसा कि प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं में से
कोई जी उठा है।

9 परन्तु हेरोदेस ने कहा, "यूहन्ना का सिर तो मैंने ही कटवाया
था, परन्तु अब यह कौन है जिसके विषय में मैं इस प्रकार की
बातें सुनता हूँ?" अतः वह उसे देखने की खोज कर रहा था।

10 और जब वे प्रेरित लौटकर आए, जो कुछ उन्होंने किया था
उसका वर्णन उन्होंने उससे किया। फिर उनको लेकर, वह
आप ही बैतसैदा नाम के एक नगर को वापस गया।

11 परन्तु जब भीड़ को यह पता चल गया, तो उन्होंने उसका
पीछा किया। और उसने उनका स्वागत किया और उनसे
परमेश्वर के राज्य के विषय में बातें कीं, और वह उन लोगों को
चंगा भी कर रहा था जिनको चंगाई की आवश्यकता थी।

12 और दिन का अन्त होने लगा था, और वे बारह आए और
उससे कहा, "भीड़ को विदा कर इसलिए कि, चारों ओर के
गाँवों और बस्तियों में जाकर, वे अपने रहने के लिए स्थान और
भोजन की खोज करें, क्योंकि हम यहाँ सुनसान जगह में हैं।"

13 परन्तु उसने उनसे कहा, "तुम ही उन्हें कछ खाने को दो।"
परन्तु उन्होंने कहा, "हमारे पास पाँच रोटियों और दो मछली
से अधिक और कुछ नहीं है—जब तक कि हम जाकर इन सब
लोगों के लिये भोजन मोल नहीं लेते हैं।"

14 (क्योंकि वहाँ पर लगभग 5, 000 पुरुष थे।) फिर उसने
अपने चेलों से कहा, "उन्हें खाने के लिए 50-50 के प्रत्येक
समूह में बैठा दो।"

15 और उन्होंने ऐसा ही किया, और सब को खाने के लिए बैठा
दिया।

16 तब उन पाँच रोटियों और दो मछली को लेकर, और स्वर्ग
की ओर देखकर, उसने उनको आशीषित किया और उनको
टुकड़ों में तोड़ा, और उसने भीड़ को परोसने के लिए उनको
अपने चेलों को दिया।

17 और उन सब ने खाया और तृप्त हुए, और जो उनके पास
बच गया था उसे भी उठा लिया गया था—वे टूटे हुए टुकड़ों
की 12 टोकरियाँ थीं।

18 और ऐसा हुआ कि, जिस समय वह अकेले में प्रार्थना कर
रहा था, तो चेले उसके साथ थे, और उसने उनसे प्रश्न पूछा,
"यह भीड़ क्या कहती है कि मैं कौन हूँ?"

19 अतः उत्तर देते हुए, उन्होंने कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा
देनेवाला, परन्तु अन्य लोग एलिय्याह, और अन्य जन यह कि
प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं में से कोई जी उठा है।"

20 फिर उसने उनसे पूछा, "परन्तु तुम क्या कहते हो कि मैं
कौन हूँ?" तब पतरस ने उत्तर देते हुए कहा, "परमेश्वर का
मसीह।"

21 परन्तु उसने उनको आदेश देते हुए उन्हें कड़ी चेतावनी दी
कि यह किसी से भी न कहना,

22 और कहा, "मनुष्य के पुत्र के लिये आवश्यक है कि वह
बहुत सी बातों में दुःख उठाए और पुरनियों और प्रधान
याजकों और शास्त्रियों के द्वारा अस्वीकृत किया जाए, और
मार डाला जाए, और तीसरे दिन जी उठे।"

23 फिर उसने उन सब से कहा, "यदि कोई मेरे पीछे आना
चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस
उठाए और मेरे पीछे हो ले।

24 क्योंकि जो कोई भी अपने प्राण को बचाने की इच्छा करेगा
वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई भी मेरी खातिर अपने प्राण
को खोएगा, वही जन उसे बचाएगा।

25 क्योंकि उस मनुष्य को क्या लाभ हुआ, जिसने अपने आप
को नाश करके या खोकर, सम्पूर्ण संसार को प्राप्त कर लिया?

26 क्योंकि जो कोई भी मुझसे और मेरी बातों से लजाता है, तो मनुष्य का पुत्र भी उस पर लजाएगा जब वह अपनी, और पिता की और पवित्र स्वर्गदूतों की महिमा में आएगा।

27 परन्तु मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो यहाँ खड़े हैं उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो तब तक मृत्यु का स्वाद न चखेंगे जब तक कि वे परमेश्वर का राज्य न देख लें।"

28 और ऐसा हुआ कि, इन बातों के लगभग आठ दिनों के पश्चात, पतरस और यूहन्ना और याकूब को साथ लेकर, वह प्रार्थना करने के लिये पहाड़ पर गया।

29 और ऐसा हुआ कि, जब वह प्रार्थना कर ही रहा था, तो उसके चेहरे का रूप बदल गया, और उसका वस्त्र उजियाले के समान सफेद होकर चमकने लगा।

30 और देखो, दो पुरुष उसके साथ बातें करने लगे, जो कि मूसा और एलिय्याह थे।

31 जो महिमा सहित दिखाई दिए, और वे उसके मरने के विषय में बात कर रहे थे, जिसे वह यरूशलेम में पूरा करने वाला था।

32 और पतरस और जो उसके साथ थे वे नींद से भरे हुए थे, परन्तु जब वे पूर्ण रूप से जाग गए, तो उन्होंने उसकी महिमा देखी और उन दो पुरुषों को देखा जो उसके साथ खड़े थे।

33 और ऐसा हुआ कि, जब वे उसके पास से जाने लगे, तो पतरस ने यीशु से कहा, "हे स्वामी, हमारे लिए यहाँ रहना अच्छा है, इसलिए हम तीन मण्डप बनाएँ, एक तेरे लिये, और एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये।" (वह जानता न था कि क्या कह रहा है।)

34 परन्तु जब वह यह कह ही रहा था, तो एक बादल प्रकट हुआ और उन पर छा गया, और जब वे उस बादल में घुसे तो वे डर गए।

35 और उस बादल में से एक वाणी आई, जो बोली, "यह मेरा पुत्र है, और यह वही है जिसे चुना गया है; इसकी सुनो।"

36 और जब यह वाणी हो चुकी, तो यीशु अकेला पाया गया। तब वे चुप हो गए और जो बातें उन्होंने देखी थीं उन दिनों में उसकी कोई बात किसी से न कही।

37 और ऐसा हुआ कि, अगले दिन, जब वे पहाड़ से उतरे, तो एक बड़ी भीड़ उससे मिली।

38 और देखो, भीड़ में से एक मनुष्य ने चिल्लाकर कहा, "हे गुरु, मैं तुझ से विनती करता हूँ कि मेरे पुत्र पर दृष्टि कर, क्योंकि वह मेरी एकलौती सन्तान है।

39 और देख, एक दुष्टात्मा उसे पकड़ती है, और वह एकाएक चिल्ला उठता है; और वह उसे मुँह में झाग भरने के साथ ही मरोड़कर पटक देती है। और वह उसे कुचलकर, कठिनाई से उसे छोड़ती है।

40 और मैंने तेरे चेलों से विनती की कि वे उसे निकाल दें; परन्तु वे सक्षम नहीं हुए।"

41 तब उत्तर देते हुए, यीशु ने कहा, "हे अविश्वासी और विकृत पीढ़ी, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूँगा और तुम्हारी सहता रहूँगा? अपने पुत्र को यहाँ ले आ।"

42 और जिस समय वह आ रहा था, तो दुष्टात्मा ने उसे पटककर मरोड़ दिया और झाग निकालते हुए उसे झिंझोड़ दिया। परन्तु यीशु ने उस अशुद्ध आत्मा को फटकार दिया और लड़के को चंगा करके उसके पिता को सौंप दिया।

43 तब वे सब लोग परमेश्वर के वैभव पर आश्चर्य करने लगे। परन्तु जिस समय सब लोग उन कामों पर अचम्भा कर रहे थे जो वह कर रहा था, तब उसने अपने चेलों से कहा,

44 "इन बातों को तुम अपने कानों में रखे रहो: क्योंकि मनुष्य के पुत्र को उन लोगों के हाथों में पकड़वाया जाने वाला है।"

45 परन्तु वे इस बात को नहीं समझ पाए, और यह उनसे छिपी रही, ताकि वे इसे समझ न पाएँ, और वे इस बात के विषय में उससे पूछने से डरते थे।

46 फिर उनके मध्य में यह बहस आरम्भ हो गई कि उनमें से
कौन सबसे बड़ा हो सकता है?

47 परन्तु यीशु ने, उनके हृदयों के तर्क को जानते हुए, एक
छोटे बालक को लेकर, अपने पास खड़ा किया,

48 और उनसे कहा, "जो कोई मेरे नाम से इस बालक का
स्वागत करता है, वह मेरा स्वागत करता है, और जो कोई मेरा
स्वागत करता है, तो वह उसका स्वागत करता है जिसने मुझे
भेजा है। क्योंकि जो तुम्हारे मध्य में सबसे छोटा है, वही सबसे
बड़ा है।"

49 तब उत्तर देते हुए, यूहन्ना ने कहा, "हे स्वामी, हम ने एक
व्यक्ति को तेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालते देखा था और
हम ने उसे रोक दिया, क्योंकि वह हमारे साथ पीछे-पीछे नहीं
हो लेता।"

50 परन्तु यीशु ने उससे कहा, "उसे मत रोको, क्योंकि जो
तुम्हारे विरोध में नहीं वह तुम्हारी ओर है।"

51 और ऐसा हुआ कि, जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन
पूरे हो गए थे, तब उसने यरूशलेम को जाने के लिए अपना
मुँह उस ओर किया।

52 और उसने अपने आगे सन्देशवाहकों को भेजा, और उन्होंने
जाकर सामरियों के एक गाँव में प्रवेश किया ताकि उसके लिये
जगह तैयार करें।

53 परन्तु उन लोगों ने उसका स्वागत न किया, क्योंकि उसका
मुँह यरूशलेम जाने की ओर था।

54 और जब उसके चेलों याकूब और यूहन्ना ने यह देखा, तो
उन्होंने कहा, "हे प्रभु; क्या तू चाहता है कि हम आग को आज्ञा
दें कि वह आकाश से गिरकर उन्हें भस्म कर दे?"

55 परन्तु वह घूमा और उन्हें डाँट दिया,

56 और वे किसी दूसरे गाँव को चले गए।

57 और जब वे मार्ग में जा रहे थे, तो किसी ने उससे कहा, "जहाँ
कहीं भी तू जाएगा मैं तेरे पीछे हो लूँगा।"

58 और यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के पास गुफाएँ और
आकाश के पक्षियों के पास, घोंसले होते हैं, परन्तु मनुष्य के
पुत्र के पास कहीं सिर टिकाने की भी जगह नहीं।"

59 फिर उसने किसी अन्य से कहा, "मेरे पीछे हो ले।" परन्तु
उसने कहा, "हे प्रभु, मुझे पहले जाने की अनुमति दे कि अपने
पिता को गाड़ दूँ।"

60 परन्तु उसने उससे कहा, "मरे हुओं को अपने मृतकों को
गाड़ने दे। परन्तु तू, जा और परमेश्वर के राज्य की घोषणा
कर।"

61 तब किसी अन्य ने भी कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूँगा,
परन्तु पहले मुझे जाने की अनुमति दे कि अपने घर के लोगों
से अलविदा कहूँ।"

62 परन्तु यीशु ने प्रत्युत्तर में कहा, "जो कोई, अपना हाथ हल
पर रखता है, और फिर भी पीछे रह गई बातों पर दृष्टि करता
है, तो वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं है।"

Luke 10:1

1 और इन बातों के पश्चात, प्रभु ने 72 अन्यों को भी नियुक्त
किया, और हर उस नगर और स्थान के लिए उनको दो-दो
करके अपने आगे भेजा, जहाँ वह स्वयं जाने वाला था।

2 और उसने उनसे कहा, "खेत तो फसल से भरपूर है, परन्तु
मजदूर थोड़े हैं। इसलिए खेत के स्वामी से आग्रह करो कि वह
अपने खेत में मजदूरों को भेज दे।

3 जाओ। देखो, मैं तुम्हें मेमनों के समान भेड़ियों के मध्य में
भेजता हूँ।

4 तो न धन की थैली, न ही झोली, न ही जूते लेकर जाओ, और
न मार्ग में किसी को नमस्कार करो।

5 जिस किसी घर में जाओ, पहले कहो, 'इस घर में शान्ति हो!'

6 और यदि वहाँ कोई शान्ति का पुत्र है, तो तुम्हारी शान्ति उस
पर ठहरेगी; परन्तु यदि नहीं, तो वह तुम्हारे पास लौट आएगी।

7 और उसी घर में रहो, जो उनकी ओर से मिले वही खाओ
और पीओ, क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी के योग्य है।
आसपास में एक घर से दूसरे घर न फिरना।

8 और जिस किसी नगर में तुम जाओ, और वे तुम को ग्रहण
करें, तो जो कुछ तुम्हारे सामने रखा जाए वही खाओ।

9 और उसमें रहने वाले बीमारों को चंगा करो, और उनसे
कहो, 'परमेश्वर का राज्य तुम्हारे समीप आ पहुँचा है।'

10 और जिस किसी नगर में तुम प्रवेश करने पाओ, और वे तुम
को ग्रहण न करें, तो उसकी सड़कों में निकल जाओ और
कहो,

11 'हम तुम्हारे विरोध में तुम्हारे नगर की उस धूल को भी झाड़
देते हैं जो हमारे पाँवों में लगी है! परन्तु यह जान लो, कि
परमेश्वर का राज्य निकट आ पहुँचा है।'

12 मैं तुम से कहता हूँ कि उस दिन उस नगर की तुलना में
सदोम के लिए यह अधिक सहने योग्य होगा।

13 हे खुराजीन, तुम पर हाय! हे बैतसैदा, तुम पर हाय! क्योंकि
जो सामर्थ्य के काम तुम में हुए यदि वे सोर और सीदोन में हुए
होते, तो टाट ओढ़कर और राख में बैठकर, उन्होंने बहुत
पहले ही पश्चाताप कर लिया होता।

14 परन्तु न्याय के दिन तुम्हारी तुलना में सोर और सीदोन के
लिए यह अधिक सहने योग्य होगा।

15 और तू, हे कफरनहूम, तू तो स्वर्ग तक ऊँचा नहीं किया
जाएगा, क्या तू किया जाएगा? तू तो अधोलोक तक नीचे किया
जाएगा।

16 जो तुम्हारी सुनता है वह मेरी सुनता है, और जो तुम्हें
अस्वीकार करता है वह मुझे अस्वीकार करता है, और जो मुझे
अस्वीकार करता है, वह उसे अस्वीकार करता है जिसने मुझे
भेजा है।"

17 फिर वे 72 आनन्द करते हुए वापस लौटे और कहने लगे,
"हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्माएँ भी हमारे वश में हैं।"

18 और उसने उनसे कहा, "मैं शैतान को बिजली के समान
स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।

19 देखो, मैंने तुम्हें साँपों और बिच्छुओं को रौंदने, और शत्रु की
सारी सामर्थ्य पर अधिकार दिया है; और कोई भी वस्तु तुम्हारी
कुछ भी हानि नहीं कर पाएगी।

20 तब पर भी, इससे आनन्दित मत हो, कि वे दुष्टात्माएँ तुम्हारे
वश में हैं, परन्तु इससे आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग में
लिखे गए हैं।"

21 उसी घड़ी वह पवित्र आत्मा में होकर बहुत आनन्दित हुआ,
और कहा, "हे पिता, मैं तेरी स्तुति करता हूँ, जो स्वर्ग और पृथ्वी
का प्रभु है, क्योंकि तूने इन बातों को बुद्धिमानों और
समझदारों से छिपाए रखा और बालकों पर प्रकट किया है।
हाँ, हे पिता, क्योंकि इसी प्रकार से यह तेरे सम्मुख मन को
प्रसन्न करने वाला था।

22 मेरे पिता की ओर से सब बातों को मुझे सौंप दिया गया है,
और पिता को छोड़ कर कोई भी नहीं जानता कि पुत्र कौन है
और पुत्र को छोड़ कर कि पिता कौन है, और जिस पर पुत्र
उसे प्रकट करना चाहता है।

23 और चेलों की ओर घूमकर, उसने व्यक्तिगत रूप से कहा,
"धन्य हैं वे आँखें जो वह देखती हैं जो तुम देखते हो!

24 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और
राजाओं ने जो तुम देखते हो उसे देखने की इच्छा की थी और
न देख पाए, और वह सुनने की जो तुम सुनते हो, और न सुन
पाए।"

25 और देखो, उसकी परीक्षा करने के लिए एक व्यवस्थापक
उठ खड़ा हुआ, और कहने लगा, "हे गुरु, क्या करने से, मैं
अनन्त जीवन का वारिस हो जाऊँगा?"

Luke 11:1

26 परन्तु उसने उससे कहा, "व्यवस्था में क्या लिखा है? तू उसे
कैसे पढ़ता है?"

27 और उत्तर देते हुए, उसने कहा, "तू प्रभु अपने परमेश्वर से
अपने सारे हृदय और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति
और अपनी सारी समझ के साथ प्रेम रखना; और अपने
पड़ोसी से अपने जैसा।"

28 और उसने उससे कहा, "तूने ठीक-ठीक उत्तर दिया है।
यही कर, और तू जीवित रहेगा।"

29 परन्तु उसने, अपने आप को धर्मी ठहराने की इच्छा से, यीशु
से पूछा, "और मेरा पड़ोसी कौन है?"

30 तब उत्तर देते हुए, यीशु ने कहा, "एक मनुष्य यरूशलेम से
यरीहो को जा रहा था, और डाकुओं के मध्य में आ पड़ा, और
उन दोनों ने उसके कपड़े उतार लिए और मारा-पीटा, और
उसे अधमरा छोड़कर, चले गए।

31 तभी संयोग से एक याजक उस रास्ते से जा रहा था, और
जब उसने उसे देखा, तो दूसरी ओर से आगे बढ़ गया।

32 और इसी रीति से एक लेवी भी, जब वह उस जगह पर आया
और उसे देखा, तो दूसरी ओर से आगे बढ़ गया।

33 परन्तु एक सामरी, यात्रा करते हुए, उसके पास आया, और
जब उसने उसे देखा, तो उसे तरस आ गया।

34 और उसके पास जाकर, उसने उसके घावों पर, तेल और
दाखरस डालकर पट्टियाँ बाँधीं। फिर, उसे अपने स्वयं के पशु
पर चढ़ाकर, वह उसे एक सराय में ले गया और उसकी
देखभाल की।

35 और अगले दिन, उसने दो दीनार निकाले, और उसने वह
सराय के मालिक को दिए, और कहा, 'इसकी देखभाल
करना, और जो कुछ भी तू और खर्च करे, तो जब मैं वापस
लौटूँ, वह मैं तुझे चुका दूँगा।'

36 तुझे क्या लगता है कि इन तीनों में से उसका पड़ोसी कौन
ठहरा जो डाकुओं के मध्य में पड़ गया था?"

37 और उसने कहा, "वही जिसने उस पर दया दिखाई।" तब
यीशु ने उससे कहा, "तू भी जाकर ऐसा ही कर।"

38 और जब वे यात्रा रहे थे, तो वह एक गाँव में गया, और मार्था
नाम की एक स्त्री ने उसका स्वागत किया।

39 और मरियम नाम की उसकी एक बहन थी, और वह यीशु
के पाँवों के पास बैठी हुई, उसका वचन सुन रही थी।

40 परन्तु मार्था बहुत सेवा करते हुए विचलित हो गई और
आकर उसने कहा, "हे प्रभु, क्या तुझे चिन्ता नहीं है कि मेरी
बहन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है?
इसलिए, उससे कह दे ताकि वह मेरी सहायता करे।"

41 परन्तु उत्तर देते हुए, प्रभु ने उससे कहा, "मार्था, हे मार्था, तू
बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है,

42 परन्तु एक बात आवश्यक है। क्योंकि मरियम ने उत्तम भाग
को चुन लिया है, जो उससे छीना नहीं जाएगा।"

Luke 11:1

1 और ऐसा हुआ कि, जब वह किसी जगह प्रार्थना कर रहा था,
और जब वह रुका, तो उसके चेलों में से एक ने उससे कहा,
"हे प्रभु, जैसे यूहन्ना ने अपने चेलों को सिखाया है, वैसे ही हमें
भी तू प्रार्थना करना सीखा दे।"

2 और उसने उनसे कहा, "जब तुम प्रार्थना करो, तो कहो, 'हे
पिता, तेरा नाम पवित्र माना जाए। तेरा राज्य आए।

3 हमारी दिन भर की रोटी हर दिन हमें दिया कर।

4 और हमारे पापों को क्षमा कर, क्योंकि हम भी उस हर एक
को क्षमा करते हैं जो हमारे देनदार हैं। और तू हमें परीक्षा में
न डाल।'"

5 और उसने उनसे कहा, "तुम में से ऐसा कौन है कि उसका
एक मित्र हो और वह आधी रात को उसके पास जाए और
उससे कहे, 'हे मित्र, मुझे तीन रोटियाँ दे,

6 क्योंकि मार्ग से मेरा एक मित्र मेरे पास आया है, और उसे
परोसने के लिये मेरे पास कुछ भी नहीं है'?

7 और भीतर से ही उत्तर देते हुए, वह कहे, 'मुझे परेशान न
कर। अब तो द्वार भी बन्द हो गया है, और मेरे बालक बिछौने
पर मेरे साथ हैं। अतः मैं उठकर तुझे देने में सक्षम नहीं हूँ।'

8 मैं तुम से कहता हूँ, भले ही यदि वह उसे उठकर इसलिए न
दे क्योंकि वह उसका मित्र है, तौभी उसके हठ के कारण,
उठकर, वह उसे जितनी आवश्यकता हो उतनी उसे देगा।

9 मैं तुम से यह भी कहता हूँ, माँगो, और वह तुम्हें दिया जाएगा;
ढूँढ़ो, और तुम पाओगे; खटखटाओ, और वह तुम्हारे लिये
खोला जाएगा।

10 क्योंकि जो कोई माँगता है उसे मिलता है; और जो ढूँढ़ता है
वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये इसे खोल
दिया जाएगा।

11 और तुम में से ऐसा कौन पिता है, कि उसका पुत्र मछली
माँगे, और मछली के बजाए, वह उसे साँप दे?

12 या वह एक अण्डा भी माँगे, तो वह उसे बिच्छू दे?

13 इसीलिए, यदि तुम तुम बुरे होकर अपने बच्चों को अच्छे
उपहार देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्ग में विराजमान पिता
अपने माँगनेवालों को बहुतायत से पवित्र आत्मा क्यों नहीं
देगा?"

14 और वह एक गूँगी दुष्टात्मा को निकाल रहा था। और ऐसा
हुआ कि, जब दुष्टात्मा निकल गई, तो वह गूँगा व्यक्ति बोलने
लगा, और वह भीड़ अचम्भित हो गई।

15 परन्तु उनमें से कुछ ने कहा, "यह तो दुष्टात्माओं के प्रधान,
बालजबूल के द्वारा, दुष्टात्माओं को निकालता है।"

16 और उससे स्वर्ग से एक चिन्ह की खोज में, अन्यों ने उसकी
परीक्षा की।

17 परन्तु उसने, उनके विचारों को जानकर, उनसे कहा,
"अपने ही विरोध में विभाजित हुए प्रत्येक राज्य को उजाड़
दिया गया है, और घर के विरोध में घर गिर जाते हैं।

18 परन्तु यदि शैतान अपने ही विरोध में विभाजित हो जाए, तो
उसका राज्य कैसे बना रहेगा? क्योंकि तुम कहते हो कि मैं
बालजबूल के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता हूँ।

19 परन्तु यदि मैं बालजबूल के द्वारा दुष्टात्माओं को निकालता
हूँ, तो तुम्हारी सन्तान किसके द्वारा उनको निकालते हैं? इसी
कारण से, वे ही तुम्हारे न्यायी ठहरेंगे।

20 परन्तु यदि मैं परमेश्वर की उंगली के द्वारा दुष्टात्माओं को
निकालता हूँ, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुँचा है।

21 जब बलवन्त मनुष्य सम्पूर्ण हथियार बाँधे हुए अपने आँगन
की रखवाली कर रहा हो, तो उसकी सम्पत्ति पर शान्ति रहती
है,

22 परन्तु जब कोई और उससे बढ़कर बलवन्त उस पर
आक्रमण करता है, तो वह उस पर जयवंत होगा, और उसके
वे हथियार छीन लेगा जिन पर उसका भरोसा था, और उसकी
लूट को बाँट देगा।

23 जो मेरे साथ नहीं है वह मेरे विरोध में है, और जो मेरे साथ
इकट्ठा नहीं करता वह बिखेरता है।

24 जब मनुष्य में से अशुद्ध आत्मा निकल जाती है, तो वह
विश्राम ढूँढ़ती हुई सूखी जगहों में फिरती है, और नहीं पाने पर,
वह कहती है, 'जहाँ से मैं आई हूँ मैं अपने उसी घर में लौट
जाऊँगी।'

25 और आकर, वह उसे साफ किया हुआ और सजा-सँवरा
पाती है।

26 तब वह जाकर अपने से भी बढ़कर बुरी सात अन्य
आत्माओं को अपने साथ ले आती है और वे उसमें प्रवेश
करके, वहाँ वास कर लेती हैं। और उस मनुष्य की अंतिम
दशा पहली दशा से भी बुरी हो जाती है।"

27 और ऐसा हुआ कि, जब वह इन बातों को कह ही रहा था,
तो भीड़ में से किसी स्त्री ने, अपने स्वर को ऊँचा करके, उससे
कहा, "धन्य है वह गर्भ जिसने तुझे पाला और वे स्तन जिन्होंने
तेरा पोषण किया।"

28 परन्तु उसने कहा, "बल्कि, धन्य वे हैं जो परमेश्वर का वचन
सुनते और उसे मानते हैं।"

29 और जब भीड़ बढ़ती जा रही थी, तो उसने कहना आरम्भ
किया, "यह पीढ़ी एक बुरी पीढ़ी है। वे चिन्ह ढूँढ़ते हैं, परन्तु
योना के चिन्ह को छोड़ कर उनको कोई चिन्ह नहीं दिया
जाएगा।

30 क्योंकि जिस प्रकार से नीनवे के लोगों के लिये योना चिन्ह
ठहरा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी इस पीढ़ी के लिये ठहरेगा।

31 दक्षिण की रानी न्याय के दिन इस पीढ़ी के लोगों के साथ
उठ खड़ी होगी और उन्हें दोषी ठहराएगी, क्योंकि वह पृथ्वी
की छोर से सुलैमान की बुद्धि सुनने को आई थी, और देखो,
यहाँ वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है।

32 नीनवे के लोग न्याय के दिन इस पीढ़ी के लोगों के साथ उठ
खड़े होंगे और उन्हें दोषी ठहराएँगे, क्योंकि उन्होंने योना का
प्रचार सुनकर पश्चाताप किया था, और देखो, यहाँ वह है जो
योना से भी बड़ा है।

33 कोई भी, दीया जलाकर, उसे छिपे स्थान में नहीं रखता है,
और न ही पैमाने के नीचे, परन्तु दीवट पर रखता है, ताकि
भीतर आनेवाले प्रकाश पाएँ।

34 तेरी आँख शरीर का दीया है। जब तेरी आँख स्वस्थ है, तो
तेरा सारा शरीर भी प्रकाशित है। परन्तु जब वह बुरी है, तो तेरा
शरीर भी अंधेरा है।

35 इसलिए, सावधान रह कि जो प्रकाश तुझ में है वह अंधेरा
नहीं है।

36 इसलिए यदि तेरा सारा शरीर प्रकाशित हो, और उसका
कोई अंग अंधेरा न रहे, तो वह पूरा का पूरा ऐसा प्रकाशित
होगा, जैसा उस समय होता है जब दीया अपनी चमक से तुझे
प्रकाशित करता है।"

37 और जब वह बातें कर चुका, तो एक फरीसी ने उससे
विनती की कि वह उसके साथ भोजन करे। वह भीतर जाकर
भोजन करने को बैठ गया।

38 और उस फरीसी ने, यह देखकर, अचम्भा किया कि उसने
भोजन से पहले हाथ-पैर नहीं धोये।

39 परन्तु प्रभु ने उससे कहा, "अब तुम सब फरीसी प्याले और
कटोरी को बाहर से तो साफ करते हो, परन्तु तुम्हारे भीतर
लालच और बुराई भरी हुई है।

40 अरे निर्बुद्धियों! जिसने बाहर का भाग बनाया क्या उसी ने
भीतर का भाग नहीं बनाया?

41 परन्तु जो भीतर है उसे दान कर दो, और देखो, सब कुछ
तुम्हारे लिये शुद्ध हो जाएगा।

42 परन्तु हे फरीसियों तुम पर हाय, क्योंकि तुम पोदीने और
सुदाब का, और वाटिका की हर एक जड़ी-बूटी का दसमांश
देते हो, परन्तु तुम न्याय की और परमेश्वर के प्रेम की उपेक्षा
करते हो। परन्तु यह आवश्यक है कि इन बातों को भी करें
और उन बातों की उपेक्षा भी न करें।

43 हे फरीसियों तुम पर हाय, क्योंकि तुम आराधनालयों में
प्रथम आसनों से और बाजारों में नमस्कार से प्रीति रखते हो।

44 तुम पर हाय, क्योंकि तुम अनदेखी कब्रों के समान हो, और
वे मनुष्य जो उनके ऊपर चलते-फिरते हैं उनके विषय में नहीं
जानते।"

45 तब उत्तर देते हुए, व्यवस्थापकों में से एक ने उससे कहा,
"हे गुरु, इन बातों के कहने से, तू हमारा भी अपमान करता
है।"

46 परन्तु उसने कहा, "हे व्यवस्थापकों तुम पर भी हाय!
क्योंकि तुम लोगों पर ऐसे बोझ लादते हो जिनको उठाना
कठिन है, परन्तु तुम स्वयं उन बोझों को अपनी एक उंगली से
भी नहीं छूते।

47 तुम पर हाय, तुम उन भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें तो बनाते
हो, परन्तु उन्हें तुम्हारे पिताओं ने ही मार डाला था।

48 इसलिए तुम अपने पिताओं के कामों की गवाही देते हो और
उन पर सहमति रखते हो, क्योंकि उन्होंने तो उनको मार
डाला था और तुम कब्रें बनाते हो।

49 इसी कारण से, परमेश्वर की बुद्धि ने यह भी कहा है, 'मैं
उनके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितों को भेजूँगी, और
उनमें से कितनों को वे मार डालेंगे और सताएँगे।

50 ताकि उन सब भविष्यद्वक्ताओं का लहू जो संसार की नींव
पड़ने से लेकर बहाया गया है, वह इस पीढ़ी के लोगों से माँगा
जाए,

51 हाबिल के लहू से लेकर जकर्याह के लहू तक, जो वेदी और
मन्दिर के मध्य में मारा गया। हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, वह इस
पीढ़ी के लोगों से माँगा जाएगा।

52 हे व्यवस्थापकों तुम पर हाय, क्योंकि तुम ने ज्ञान की कुंजी
ले ली है; तुम ने स्वयं प्रवेश नहीं किया, और जो प्रवेश कर रहे
हैं उनको भी रोक दिया।"

53 उसके वहाँ से निकलने के पश्चात, शास्त्री और फरीसी
उसका घोर विरोध करने लगे और बहुत सी बातों पर उस से
वाद-विवाद करने लगे,

54 और उसके मुँह की किसी बात से उसे फँसाने के लिए
प्रतीक्षा करने लगे।

Luke 12:1

1 उस समय में, जब एक साथ असंख्य भीड़ इकट्ठा हो गई थी
कि वे एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे, तो सबसे पहले वह अपने
चेलों से कहने लगा, "फरीसियों के उस ख़मीर से अपनी रक्षा
करना, जो कि पाखण्ड है।

2 परन्तु ऐसा कुछ ढँपा नहीं है जिसे प्रकट नहीं किया जाएगा,
और न छिपा है जिसे जाना नहीं जाएगा।

3 इसलिए, जो कुछ तुम ने अंधेरे में कहा है उसे उजियाले में
सुना जाएगा, और जो तुम ने भीतर के कमरों में कानों में कहा
है उसकी घोषणा घर की छतों पर की जाएगी।

4 परन्तु हे मेरे मित्र, मैं तुम से कहता हूँ, कि तुम को उनसे नहीं
डरना चाहिए जो शरीर को मार सकते हैं, और उसके पश्चात
करने के लिए अधिक कुछ और नहीं है।

5 परन्तु मैं तुम को दिखाऊँगा कि किससे डरना है। उससे
डरो, जिसके पास मार डालने के पश्चात, अधोलोक में डालने
का अधिकार है। हाँ, मैं तुम से कहता हूँ, उसी से डरो।

6 क्या दो अशर्फियों में पाँच गौरैयाँ नहीं बिकती? तौभी उनमें
से एक को भी परमेश्वर के सामने भुलाया नहीं गया है।

7 परन्तु यहाँ तक कि तुम्हारे सिर के सब बाल भी गिने हुए हैं।
मत डरो: तुम बहुत गौरैयों से अधिक मूल्यवान हो।

8 परन्तु मैं तुम से कहता हूँ, जो कोई मनुष्यों के सामने मेरा
अंगीकार करता है, तो मनुष्य का पुत्र भी परमेश्वर के स्वर्गदूतों
के सामने उसका अंगीकार कर लेगा,

9 परन्तु जो मनुष्यों के सामने मेरा इन्कार करे उसका परमेश्वर
के स्वर्गदूतों के सामने इन्कार किया जाएगा।

10 और जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहे, तो
यह उसके लिए क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो पवित्र आत्मा की
निन्दा करे, तो यह क्षमा नहीं किया जाएगा।

11 और जब वे तुम्हें आराधनालयों में और शासकों और
अधिकारियों के सामने ले जाएँ, तो चिन्ता न करना कि अपने
बचाव में तुम किस रीति से या क्या कहोगे, या तुम को क्या
कहना चाहिए,

12 क्योंकि उसी घड़ी पवित्र आत्मा तुम्हें सीखा देगा जो कहना
आवश्यक है।"

13 फिर भीड़ में से किसी ने उससे कहा, "हे गुरु, मेरे भाई से
कह कि विरासत को मेरे साथ बाँट ले।"

14 परन्तु उसने उससे कहा, “हे मनुष्य, किसने मुझे तुम पर
न्यायी या मध्यस्थ नियुक्त किया है?”

15 फिर उसने उनसे कहा, “देखते रहो और सारे लोभ से अपने
आपको बचाए रखो, क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति
की बहुतायत में नहीं होता है।”

16 फिर उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा, “किसी धनवान की
भूमि में बड़ी उपज हुई।

17 और यह कहते हुए वह अपने आप में विचार करने लगा, ‘मैं
क्या करूँ, क्योंकि मेरे यहाँ जगह नहीं जहाँ अपनी फसल को
इकट्ठा करूँ?’

18 और उसने कहा, ‘मैं ऐसा करूँगा: मैं अपनी बखारियाँ तोड़
दूँगा और उनसे भी बड़ी-बड़ी बनाऊँगा, और वहाँ मैं अपना
सब अन्न और अच्छी वस्तुएँ रखूँगा।

19 और मैं अपने प्राण से कहूँगा, “हे प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों
के लिये भण्डार में बहुत सारी अच्छी वस्तुएँ रखी हैं। आराम
कर, खा, पी, विवाह कर।”’

20 परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, ‘अरे निर्बुद्धि, इसी रात को वे
तुझ से तेरा प्राण माँग रहे हैं, और जो तूने तैयार किया है, वह
किसका होगा?’

21 ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन जमा करता है,
परन्तु परमेश्वर के सम्मुख में धनी नहीं।”

22 फिर उसने अपने चेलों से कहा, “इसी कारण से मैं तुम से
कहता हूँ, अपने जीवन के विषय में चिन्ता न करो, कि तुम क्या
खाओगे—और न अपने शरीर के विषय में, कि तुम क्या
पहनोगे।

23 क्योंकि भोजन से बढ़कर जीवन, और वस्त्रों से बढ़कर
शरीर है।

24 कौवों पर ध्यान दो, कि वे न तो बोते हैं और न ही काटते हैं,
उनके पास न तो भण्डारगृह और न ही बखारी होती है, परन्तु
परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तुम पक्षियों से कितने अधिक
मूल्यवान हो!

25 परन्तु तुम में से ऐसा कौन है जो चिन्ता करने से अपने
जीवनकाल में एक घड़ी भी जोड़ने में सक्षम है?

26 इसलिए यदि तुम सबसे छोटा काम भी नहीं कर सकते, तो
बाकी के विषय में क्यों चिन्ता करते हो?

27 सोसनों पर ध्यान करो—कि वे कैसे बढ़ते हैं। वे न परिश्रम
करते, और न ही कताई करते हैं। परन्तु मैं तुम से कहता हूँ,
कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में उनमें से किसी एक के
समान भी वस्त्र पहने हुए नहीं था।

28 और यदि परमेश्वर मैदान की घास को ऐसा पहनाता है, जो
कि आज अस्तित्व में है और कल भट्ठी में झोंकी जाएगी, तो हे
अल्पविश्वासियों, तुम्हारे लिए कितना अधिक करेगा!

29 और तुम, इस बात की खोज में न रहो कि तुम क्या खाओगे
और तुम क्या पीओगे, और न ही चिन्ता करो।

30 क्योंकि संसार की सारी जातियाँ इन सब वस्तुओं की खोज
में रहती हैं, परन्तु तुम्हारा पिता जानता है कि तुम्हें इनकी
आवश्यकता है।

31 परन्तु उसके राज्य की खोज में रहो, और ये वस्तुएँ तुम में
जोड़ दी जाएँगी।

32 हे छोटे झुण्ड, मत डर, क्योंकि तुम्हें राज्य देने के लिए
तुम्हारा पिता अत्यन्त प्रसन्न है।

33 अपनी सम्पत्ति को बेचकर दान कर दो। अपने लिये ऐसे
बटुए बनाओ जो खराब नहीं होते—स्वर्ग में अमोघ धन है, जहाँ
न चोर निकट आता है, और न कीड़ा नष्ट करता है।

34 क्योंकि जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा हृदय भी लगा
रहेगा।

35 तुम्हारी कमर बंधी रहें, और तुम्हारे दीये जलते रहें।

36 और तुम उन मनुष्यों के समान बनो जो अपने स्वामी की
प्रतीक्षा कर रहे हों कि वह विवाह भोज से कब लौटेगा, ताकि
जब वह आए और खटखटाए, तो वे तुरन्त उसके लिए खोल
दें।

37 धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी आने पर रखवाली करता हुआ
पाए। मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह कमर बाँधकर उन्हें
भोजन करने को बैठाएगा, और स्वयं आकर उनकी सेवा
करेगा।

38 यहाँ तक कि यदि वह रात के दूसरे पहर में, या तीसरे पहर
में भी आकर उन्हें इसी प्रकार से पाए, तो वे धन्य हैं।

39 परन्तु यह जान रखो, कि यदि घर का स्वामी जानता होता
कि चोर किस घड़ी आएगा, तो वह अपने घर में सेंध लगने न
देता।

40 तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी में तुम अपेक्षा भी नहीं
करते हो, मनुष्य का पुत्र आ रहा है।"

41 तब पतरस ने कहा, "हे प्रभु, क्या यह दृष्टान्त तू हम ही से
कह रहा है, या बाकी सबसे भी कह रहा है?"

42 और प्रभु ने कहा, "तब वह विश्वासयोग्य, और बुद्धिमान
भण्डारी कौन है जिसे उसका स्वामी अपनी देखरेख पर
नियुक्त करे, ताकि वह उन्हें सही समय पर उनके हिस्से का
भोजन दे?

43 धन्य है वह दास जिसे उसका स्वामी आने पर ऐसा ही करते
पाए।

44 मैं तुम से सच कहता हूँ कि वह उसे अपनी सब सम्पत्ति पर
नियुक्त करेगा।

45 परन्तु यदि वह दास अपने हृदय में कहे, 'मेरा स्वामी आने
में विलम्ब कर रहा है,' और दासों और दासियों को मारने-
पीटने लगे और खाने और पीने लगे, और पियक्कड़ हो जाए।

46 तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन में आ पहुँचेगा जिसकी उसे
अपेक्षा नहीं होगी, हाँ, ऐसी घड़ी में जिसे वह न जानता हो, और
उसे दो हिस्सों में काट देगा और उसका भाग विश्वासघाती के
साथ ठहराएगा।

47 और वह दास, जो अपने स्वामी की इच्छा जानता था और
तैयार न रहा या उसकी इच्छा के अनुसार नहीं किया, बहुत
मार खाएगा।

48 परन्तु जो नहीं जानता और मार खाने के योग्य काम करे तो
वह थोड़ी मार खाएगा। परन्तु हर एक वह जन जिसे बहुत
दिया गया है, उससे बहुत माँगा जाएगा, और जिसे बहुत कुछ
सौंपा गया है, उससे तो और अधिक लिया जाएगा।

49 मैं पृथ्वी पर आग डालने आया हूँ, और जैसे मैं चाहता था
यह पहले से ही जल रही थी!

50 परन्तु मुझे एक जल-संस्कार का बपतिस्मा लेना है, और
जब तक वह पूरा न हो जाए तब तक मैं कैसा व्यथित हूँ!

51 क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर शान्ति देने आया हूँ? मैं
तुम से कहता हूँ, नहीं, बल्कि विभाजन कराने।

52 क्योंकि अब से एक घर के पाँच जन विभाजित हो जाएँगे—
दो के विरोध में तीन और तीन के विरोध में दो।

53 वे विभाजित हो जाएँगे, पुत्र के विरोध में पिता और पिता के
विरोध में पुत्र, अपनी पुत्री के विरोध में माँ और अपनी माँ के
विरोध में पुत्री, अपनी बहू के विरोध में सास और अपनी सास
के विरोध में बहू।"

54 और उसने भीड़ से भी कहा, "तुम जब बादल को पश्चिम से
उठते देखते हो, तो तुम तुरन्त कहते हो, 'वर्षा होगी', और ऐसा
ही होता है।

55 और जब दक्षिण से हवा बहती है, तो तुम कहते हो, 'भीषण
गर्मी पड़ेगी', और ऐसा होता है।

56 हे पाखण्डियों! तुम जानते हो कि कैसे आकाश और पृथ्वी
के रूप की व्याख्या करनी है, परन्तु तुम यह कैसे नहीं जानते
हो कि इस समय की व्याख्या कैसे करनी है?

57 और तुम स्वयं ही न्याय क्यों नहीं कर लेते कि उचित क्या
है?

58 क्योंकि जब तुम तुम्हारे विरोधी के साथ न्यायाधीश के पास
जा रहे हो, तो मार्ग ही में उससे छूटने का यत्न कर लो ताकि
वह तुम को न्यायी के पास न खींच ले जाए, और न्यायी तुम को
अधिकारी को सौंप दे, और वह अधिकारी तुम को बन्दीगृह में
डाल दे।

59 मैं तुम से कहता हूँ, कि जब तक तुम अंतिम पाई न चुका दो
तब तक निश्चित रूप से वहाँ से बाहर नहीं निकलने पाओगे।"

Luke 13:1

1 और उस समय कुछ ऐसे लोग उपस्थित थे जो उसे गलील
के उन लोगों के विषय में सूचित कर रहे थे जिनका लहू
पिलातुस ने उन्हीं के बलिदानों के साथ मिलाया था।

2 और उत्तर देते हुए, उसने उनसे कहा, "क्या तुम सोचते हो
कि अन्य गलील के लोगों से ये गलीली अधिक पापी थे क्योंकि
उन्होंने यह दुःख उठाया?

3 मैं तुम से कहता हूँ, कि नहीं। परन्तु यदि तुम पश्चाताप नहीं
करोगे, तो तुम सब भी इसी रीति से नाश हो जाओगे।

4 या वे 18 जन जिन पर शीलोह में गुम्मट गिर पड़ा और
उनको मार डाला: क्या तुम सोचते हो कि वे यरूशलेम के
और सब रहने वाले मनुष्यों से अधिक बुरे देनदार थे?

5 मैं तुम से कहता हूँ, कि नहीं। परन्तु यदि तुम पश्चाताप नहीं
करोगे, तो तुम सब ऐसे ही नाश हो जाओगे।"

6 फिर उसने यह दृष्टान्त कहा: "किसी ने अपनी दाख की बारी
में एक अंजीर का पेड़ लगाया हुआ था, और वह उसमें फल
ढूँढ़ने को आया, परन्तु कोई फल न पाया।

7 और उसने माली से कहा, 'देख, तीन वर्षों से मैं इस अंजीर
के पेड़ में फल ढूँढ़ने आ रहा हूँ और कोई फल नहीं पाया। इसे
काट दे। क्योंकि यह भूमि को भी किस कारण से रोके हुए है?'

8 परन्तु उत्तर देते हुए, वह उससे कहता है, 'हे स्वामी, इसे इस
वर्ष के लिए और छोड़ दे, जब तक कि मैं इसके चारों ओर
खोदकर खाद डालूँ।

9 यदि यह आने वाले वर्ष में फल उत्पन्न करता है ... परन्तु यदि
नहीं, तो तू इसे काट देना!'"

10 और सब्त के दिन वह एक आराधनालय में शिक्षा दे रहा
था।

11 और देखो, एक स्त्री में 18 वर्षों से एक दुर्बल करनेवाली
दुष्टात्मा थी, और वह कुबड़ी हो गई थी और वह पूरी तरह से
सीधी होने में सक्षम नहीं थी।

12 और जब यीशु ने उसे देखा, तो उसने उसे बुलाया और
उससे कहा, "हे स्त्री, तू अपनी दुर्बलता से स्वतंत्र हुई।"

13 और उसने उस पर अपने हाथ रखे, और वह तुरन्त ही सीधी
हो गई, और वह परमेश्वर की बड़ाई करने लगी।

14 परन्तु उत्तर देते हुए, आराधनालय का सरदार, इसलिए कि
यीशु ने सब्त के दिन चंगा किया था, क्रोधित होकर भीड़ से
कहने लगा, "छः दिन ऐसे हैं जिनमें काम करना आवश्यक है।
इसलिए सब्त के दिन में नहीं, परन्तु उनमें ही आकर चंगे हो।"

15 परन्तु प्रभु ने उसको उत्तर दिया और कहा, "हे पाखण्डियों!
सब्त के दिन क्या तुम में से हर एक अपने बैल या गदहे को
थान से खोलकर पानी पिलाने नहीं ले जाता?

16 परन्तु इसे, अब्राहम की पुत्री होने के नाते, जिसे शैतान ने,
देखो, 18 वर्षों से बाँध रखा था, सब्त के दिन क्या इस बन्धन से
उसे स्वतंत्र नहीं किया जाना चाहिए था?"

17 और जब वह यह बातें कह ही रहा था, तो वे सब जो उसका
विरोध कर रहे थे लज्जित हो गए, परन्तु सारी भीड़ उन महिमा
के कामों पर आनन्दित थी जो उसके द्वारा किए जा रहे थे।

18 फिर उसने कहा, "परमेश्वर का राज्य किसके समान है, और मैं उसकी तुलना किस से करूँ?

19 वह राई के एक दाने के समान है जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपनी बारी में बो दिया, और वह बढ़कर एक पेड़ हो गया, और आकाश के पक्षियों ने उसकी डालियों पर घोंसले बना लिए।"

20 और उसने फिर से कहा, "मैं परमेश्वर के राज्य की तुलना किस से करूँ?

21 वह ख़मीर के समान है जिसे किसी स्त्री ने लेकर तीन सआ आटे में मिला दिया जब तक कि वह सारा ख़मीर नहीं हो गया।"

22 और वह नगरों और गाँवों से होकर जाते हुए, शिक्षा देता हुआ यरूशलेम की ओर अपनी यात्रा कर रहा था।

23 और किसी ने उससे कहा, "हे प्रभु, क्या उद्धार पानेवाले थोड़े हैं?" और उसने उनसे कहा,

24 "सकेत द्वार से प्रवेश करने के लिए संघर्ष करो, क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि बहुत से प्रवेश करने की खोज में रहेंगे, परन्तु सक्षम नहीं होंगे।

25 घर के स्वामी के उठकर द्वार बन्द कर देने के पश्चात, तब तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाकर कहने लगो, 'हे प्रभु, हमारे लिये खोल दे।' परन्तु वह उत्तर देकर तुम से कहेगा, 'मैं तुम्हें नहीं जानता, तुम कहाँ से हो।'

26 तब तुम कहने लगोगे, 'हमने तेरे सामने खाया और पीया, और तूने हमारी सड़कों में शिक्षा दी थी।'

27 और वह तुम से यह कहते हुए बोलेगा, 'मैं नहीं जानता कि तुम कहाँ से हो। हे तुम सब अधर्म के काम करनेवालों, मुझ से दूर हो जाओ!'

28 उस स्थान पर, वहाँ विलाप करना और दाँत पीसना होगा जब तुम अब्राहम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में देखोगे, परन्तु तुम को बाहर फेंक दिया गया होगा।

29 और वे पूर्व और पश्चिम से और उत्तर और दक्षिण से आएँगे और परमेश्वर के राज्य में भोजन करने के लिए बैठेंगे।

30 और देखो, जो अंतिम हैं वे प्रथम होंगे, और जो प्रथम हैं वे अंतिम होंगे।"

31 उसी घड़ी, कुछ फरीसी आए और उससे कहने लगे, "निकलकर यहाँ से चला जा, क्योंकि हेरोदेस तुझे मार डालना चाहता है।"

32 और उसने उनसे कहा, "जाकर उस लोमड़ी से कह दो, 'देख, मैं आज और कल दुष्टात्माओं को निकालता और चंगाई के काम करता हूँ, और तीसरे दिन मैं समाप्त करूँगा।'

33 तौभी, मेरे लिए आज, और कल, और आने वाले दिन में यात्रा करना आवश्यक है, क्योंकि किसी भविष्यद्वक्ता का यरूशलेम के बाहर नाश होना सम्भव नहीं।

34 हे यरूशलेम, हे यरूशलेम, जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है, और जो उसके पास भेजे गए उन पर पथराव करती है! कितनी ही बार मैंने चाहा कि तेरे बच्चों को वैसे ही इकट्ठा करूँ जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे करती है, परन्तु तुम इच्छुक नहीं थे।

35 देखो, तुम्हारा घर तुम्हारे लिये छोड़ दिया गया है। और मैं तुम से कहता हूँ, निश्चय ही तुम मुझे तब तक न देखने पाओगे जब तक कि यह समय न आए कि जब तुम कहोगे, 'धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है।'"

Luke 14:1

1 और ऐसा हुआ कि, जब वह सब्त के दिन फरीसियों के सरदारों में से किसी के घर में रोटी खाने गया, तो वे उसे बड़े ध्यान से भी देख रहे थे।

2 और देखो, वहाँ एक मनुष्य उसके सामने था जो सूजा हुआ था।

Luke 14:1

3 और उत्तर देते हुए, व्यवस्थापकों और फरीसियों से यीशु ने
यह कहते हुए बोला, "सब्त के दिन चंगा करना क्या व्यवस्था
के अनुसार है, या नहीं?"

4 परन्तु वे चुपचाप रहे। और, उसे पकड़कर, उसने उसे चंगा
किया और उसे विदा कर दिया।

5 और उसने उनसे कहा, "तुम में से ऐसा कौन है जिसका पुत्र
या बैल कुएँ में गिर जाए, और वह सब्त के दिन उसे तुरन्त ही
बाहर नहीं खींच लेगा?"

6 और वे इन बातों का उत्तर देने में असमर्थ थे।

7 तब वह उन लोगों से एक दृष्टान्त कह रहा था जो आमंत्रित
किए गए थे, इस बात पर ध्यान देते हुए कि कैसे वे प्रथम
आसनों को चुन रहे थे, और उनसे कहने लगा,

8 "जब तुम किसी की ओर से विवाह के भोज में आमंत्रित किए
जाओ, तो भोजन के लिए प्रथम आसनों पर न बैठ जाना, कहीं
ऐसा न हो कि उसकी ओर से तुझ से भी बढ़कर आदरणीय
को आमंत्रित किया गया हो,

9 और जिसने तुझे और उसे दोनों को आमंत्रित किया है तो
जब वह आएगा, तो वह तुझ से कहेगा, 'इस व्यक्ति को अपनी
जगह दे,' और तब लज्जित होकर तुझे अंतिम स्थान पर बैठना
पड़ेगा।

10 परन्तु जब तुझे आमंत्रण मिले, तो भोजन करने के लिए
अंतिम स्थान पर जा बैठ, ताकि जिसने तुझे आमंत्रित किया है
जब वह आएगा तो वह तुझ से कहेगा, 'हे मित्र, आकर ऊँचे
पर बैठ।' तब तेरे साथ भोजन के लिए बैठनेवाले सब लोगों के
सामने तेरी बड़ाई होगी।

11 क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा वह विनम्र
किया जाएगा, और जो कोई अपने आपको विनम्र बनाएगा वह
बड़ा किया जाएगा।"

12 तब जिसने उसे आमंत्रित किया था उससे भी उसने कहा,
"जब तू दिन का भोजन या रात्रिभोज तैयार करे, तो न तो अपने
मित्रों को, और न ही अपने भाइयों को, और न ही अपने
कुटुम्बियों को, और न ही अपने धनवान पड़ोसियों को बुलाना,
कहीं ऐसा न हो कि वे भी बदले में तुझे आमंत्रित करें और तेरी
चुकौती हो जाए।

13 परन्तु जब तू दावत दे, तो कंगालों, टुण्डों, लंगड़ों और अंधों
को आमंत्रित कर।

14 और तू आशीषित होगा, क्योंकि उनको तुझे चुकाना नहीं
पड़ेगा। क्योंकि इसका भुगतान तुझे धर्मियों के पुनरुत्थान पर
किया जाएगा।"

15 और जब भोजन करने के लिए बैठने वाले लोगों में से एक
ने इन बातों को सुना, तो उसने उससे कहा, "जो कोई परमेश्वर
के राज्य में रोटी खाएगा वह धन्य है!"

16 परन्तु उसने उससे कहा, "किसी मनुष्य ने बड़ा रात्रिभोज
दिया और बहुतों को आमंत्रित किया।

17 और रात्रिभोज के समय पर उसने अपने दास को आमन्त्रित
किए गए लोगों के पास यह कहने को भेजा, 'आ जाओ, क्योंकि
अब भोजन तैयार है।'

18 और वे एक से लेकर सब के सब बहाने बनाने लगे। पहले
ने उससे कहा, 'मैंने एक खेत मोल लिया है, और मुझे उसे
जाकर देखने की आवश्यकता है। मैं तुझ से विनती करता हूँ,
कि मुझे क्षमा कर दे।'

19 और किसी दूसरे ने कहा, 'मैंने पाँच जोड़े बैल मोल लिए हैं,
और उन्हें परखने जा रहा हूँ। मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि
मुझे क्षमा कर दे।'

20 और एक अन्य ने कहा, 'मैंने एक स्त्री को ब्याह लिया है,
और इसी कारण से मैं आने में असमर्थ हूँ।'

21 और वह दास आया और अपने स्वामी को इन बातों की
सूचना दी। तब क्रोध में आकर, घर के स्वामी ने अपने दास से
कहा, 'तुरन्त नगर की गलियों और रास्तों में जा और कंगालों
और टुण्डों और अंधों और लंगड़ों को यहाँ ले आ।'

22 और दास ने कहा, 'हे स्वामी, जैसा तूने आदेश दिया था वैसा
हो गया है, और वहाँ अब भी जगह है।'

23 और स्वामी ने दास से कहा, 'सड़कों पर और बाड़ों की ओर जा और उनको आने के लिए विवश कर, ताकि मेरा घर भर जाए।

24 क्योंकि मैं तुझ से कहता हूँ, कि जो लोग आमंत्रित किए गए थे उन मनुष्यों में से कोई भी मेरे रात्रिभोज को चखने न पाएगा।'"

25 और बड़ी भीड़ उसके साथ यात्रा रही थी, और वह घूमा और उनसे कहा,

26 "यदि कोई मेरे पास आए और अपने स्वयं के पिता से और माता से और पत्नी से और बच्चों से और भाइयों से और बहनों से और बल्कि अपने स्वयं के जीवन से भी बैर न रखे, तो वह मेरा चेला बनने के योग्य नहीं है।

27 जो कोई अपना क्रूस न उठाए और मेरे पीछे न आए वह भी मेरा चेला बनने के योग्य नहीं है।

28 क्योंकि तुम में से ऐसा कौन है, जो गुम्मट बनाने की इच्छा रखता हो, और पहले बैठकर खर्च न जोड़े—कि उसके पास पूरा करने के लिए है कि नहीं?

29 अन्यथा, जब वह नींव डाल दे और समाप्त करने में सक्षम न हो, तो जो इसे देखेंगे वे सब उसका उपहास करने लगेंगे,

30 यह कहकर, 'यह मनुष्य बनाने तो लगा और समाप्त करने में सक्षम नहीं था।'

31 या कौन सा राजा, दूसरे राजा से युद्ध में लड़ने को जाता हो, और बैठकर पहले यह निर्धारित न कर ले कि जो उसके विरोध में 20, 000 लेकर आ रहा है, क्या वह 10, 000 के साथ उसका सामना करने में समर्थ है कि नहीं?

32 परन्तु यदि नहीं, तो जबकि वह दूर ही है, एक दूत को भेजकर, वह मामलों की शान्ति के लिए विनती करता है।

33 इसी रीति से, तब, तुम में से प्रत्येक जो वह सब कुछ नहीं त्याग देता जो उसके पास है तो वह मेरा चेला बनने के योग्य नहीं है।

34 नमक तो अच्छा है, परन्तु यदि सचमुच नमक स्वादरहित हो जाए, तो वह किस वस्तु से स्वादिष्ट किया जाएगा?

35 वह न तो भूमि के लिए और न ही खाद के ढेर के लिये उपयोगी है। वे उसे बाहर फेंक देते हैं। जिसके पास सुनने के कान हों, तो वह सुन ले।"

Luke 15:1

1 और सब चुंगी लेनेवाले और पापी उसकी सुनने के लिए उसके पास आ रहे थे।

2 और फरीसी और शास्त्री दोनों ही कुड़कुड़ाकर कहने लगे, "यह तो पापियों को ग्रहण करता है और उनके साथ भोजन भी करता है।"

3 और यह कहकर उसने उनसे यह दृष्टान्त बोला,

4 "तुम्हारे मध्य में कौन ऐसा मनुष्य है, जिसकी 100 भेड़ें हों, और उनमें से एक खो जाए, तो 99 को जंगल में छोड़कर उस खोई हुई को तब तक खोजता न रहे जब तक कि वह उसे मिल न जाए?

5 और उसके मिल जाने पर, आनन्द करता हुआ, वह उसे अपने काँधों पर उठा लेता है।

6 और घर में आकर, वह एक साथ अपने मित्रों और पड़ोसियों को बुलाता है, और उनसे कहता है, 'मेरे साथ मिलकर आनन्द करो, क्योंकि मैंने अपनी खोई हुई भेड़ को पा लिया है।'

7 मैं तुम से कहता हूँ कि इसी रीति से, एक पश्चाताप करनेवाले पापी के लिए भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द किया जाएगा, उन 99 धर्मियों से बढ़कर जिन्हें पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं है।

Luke 15:1

8 या कौन ऐसी स्त्री होगी, जिसके पास दस चाँदी के सिक्के
हों, और यदि वह उनमें से एक चाँदी का सिक्का खो दे, तो वह
दीया जलाकर और घर को झाड़-बुहारकर तब तक जी
लगाकर खोजती न रहेगी जब तक कि वह उसे मिल न जाए?

9 और उसके मिल जाने पर, वह एक साथ अपने मित्रों और
पड़ोसियों को बुलाती है, और कहती है, 'मेरे साथ मिलकर
आनन्द करो, क्योंकि मैंने उस चाँदी के सिक्के को पा लिया है
जिसे मैंने खो दिया था।'

10 इसी रीति से, मैं तुम से कहता हूँ, कि एक पश्चाताप
करनेवाले पापी के लिए परमेश्वर के स्वर्गदूतों के सामने
आनन्द होता है

11 फिर उसने कहा, "किसी मनुष्य के दो पुत्र थे,

12 और उनमें से छोटे ने अपने पिता से कहा 'हे पिता, सम्पत्ति
में से जो भाग मेरा हो वह मुझे दे।' और उसने अपनी
आजीविका को उनमें वितरित कर दिया।

13 और इसके पश्चात बहुत दिन न बीते थे, कि छोटे पुत्र ने सब
कुछ इकट्ठा किया और एक दूर देश को चला गया, और वहाँ
लापरवाही से जीवन जीने में, उसने अपनी सम्पत्ति को बर्बाद
कर दिया।

14 और जब वह सब कुछ खर्च कर चुका, तो उस सम्पूर्ण देश
में भयंकर अकाल पड़ा, और वह आवश्यकताग्रस्त हो गया।

15 और वह जाकर उस देश के निवासियों में से एक के यहाँ
टिक गया, और उसने उसे अपने खेतों में सूअर चराने के लिये
भेज दिया।

16 और वह उन कैरब फलियों को खाकर सन्तुष्ट होने के लिए
तरस रहा था जिनको सूअर खा रहे थे और उसे कोई कुछ नहीं
देता था।

17 और अपने आपे में आकर, उसने कहा, 'मेरे पिता के कितने
ही भाड़े पर रखे दासों को पर्याप्त से अधिक रोटी मिलती है,
परन्तु मैं यहाँ भूख से नाश हो रहा हूँ!

18 मैं उठकर अपने पिता के पास जाऊँगा, और मैं उससे
कहूँगा "हे पिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी दृष्टि में पाप
किया है।

19 मैं अब तेरा पुत्र कहलाने के योग्य नहीं रहा; मुझे अपने भाड़े
पर रखे दासों में से एक के समान बना ले।"'

20 और वह उठकर अपने पिता के पास चला गया। परन्तु जिस
समय वह दूर ही था, उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया,
और वह दौड़ पड़ा, और उसे गले से लगा लिया, और उसे
चूमा।

21 तब पुत्र ने उससे कहा, 'हे पिता, मैंने स्वर्ग के विरोध में और
तेरी दृष्टि में पाप किया है। मैं अब तेरा पुत्र कहलाने के योग्य
नहीं रहा।'

22 परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, 'झट से, सबसे उत्तम
वस्त्र निकालकर लाओ और उसे पहनाओ, और उसके हाथ
में अंगूठी, और पाँवों में जूतियाँ पहनाओ।

23 और मोटा बछड़ा लेकर उसे मारो, और आओ हम खाएँ
और आनन्द मनाएँ!

24 क्योंकि मेरा यह पुत्र मर गया था, और फिर जी गया है; वह
खो गया था, और अब मिल गया है।' तब वे आनन्द मनाने लगे।

25 और उसका बड़ा पुत्र खेत में था, और जब वह आया और
घर के निकट पहुँचा, तो उसने गाने-बजाने और नाचने का
स्वर सुना।

26 और एक दास को बुलाकर, उसने पूछा कि यह बातें क्या
हो सकती हैं।

27 और उसने उससे कहा, 'तेरा भाई आ गया है और तेरे पिता
ने मोटा बछड़ा इसलिए मारा है क्योंकि उसने उसे अच्छी
सेहत में वापस पाया है।'

28 परन्तु वह क्रोधित हो गया और भीतर नहीं जाना चाहता था,
और उसका पिता बाहर आया और उससे अनुनय करने
लगा।

29 परन्तु उत्तर देते हुए, उसने अपने पिता से कहा, 'देख, मैं कितने ही वर्षों से तेरी सेवा कर रहा हूँ, और मैंने कभी भी तेरी आज्ञा नहीं टाली, और तूने मुझे कभी एक बकरी का बच्चा भी न दिया कि मैं अपने मित्रों के साथ आनन्द मनाऊँ,

30 परन्तु जब तेरा यह पुत्र आया, जिसने तेरी आजीविका को वेश्याओं में उड़ा दिया है, तो उसके लिये तूने मोटे बछड़े को मार दिया।'

31 परन्तु उसने उससे कहा, 'हे पुत्र, तू तो सर्वदा मेरे साथ है, और जो सब मेरा है वह तेरा ही है।

32 परन्तु अब आनन्द मनाना और मगन होना उचित ही था, क्योंकि तेरा यह भाई मर गया था, और फिर जी गया, और वह खो गया था, और अब मिल गया।'"

Luke 16:1

1 और उसने चेलों से भी कहा, "एक धनवान मनुष्य था जिसका एक भण्डारी था, और उसके विषय में उसे सूचना दी गई कि वह उसकी सम्पत्ति को बर्बाद कर रहा था।

2 और उसने उसे बुलाया और उससे कहा, 'यह क्या है जो मैं तेरे विषय में सुनता हूँ? अपने भण्डारीपन का लेखा दे, क्योंकि तू आगे को भण्डारी बने रहने के योग्य नहीं रहा।'

3 तब उस भण्डारी ने अपने आप से कहा, 'अब मैं क्या करूँ, क्योंकि मेरा स्वामी मुझ से भण्डारीपन का काम छीन रहा है? मैं इतना बलवंत नहीं हूँ कि खुदाई करूँ। भीख माँगने में मैं लज्जित होता हूँ।

4 मैं जानता हूँ कि मैं क्या करूँगा, ताकि जब मैं भण्डारीपन के काम से हटाया जाऊँ, तो वे अपने घरों में मेरा स्वागत करेंगे।'

5 और अपने स्वामी के देनदारों में से प्रत्येक को बुलाकर, उसने पहले से कहा, 'तुझ पर मेरे स्वामी का कितना बकाया है?'

6 और उसने कहा, '100 मन जैतून का तेल।' तब उसने उससे कहा, 'अपनी खाता-बही ले और, बैठकर, तुरन्त 50 लिख दे।'

7 फिर उसने किसी दूसरे से पूछा, 'और तू बता, तुझ पर कितना बकाया है?' और उसने कहा, '100 मन गेहूँ।' तब वह उससे कहता है, 'अपनी खाता-बही ले, और 80 लिख दे।'

8 और स्वामी ने उस अधर्मी भण्डारी की बड़ाई की क्योंकि उसने चतुराई से काम किया था। क्योंकि इस युग की सन्तानें अपनी पीढ़ी के लोगों में ज्योति की सन्तानों से अधिक चतुर हैं।

9 और मैं तुम से कहता हूँ, कि अधर्म के सम्पत्ति के साधन से अपने लिये मित्र बना लो, ताकि जब वह विफल हो जाए, तो वे तुम्हारा स्वागत अनन्त निवासों में करें।

10 जो बहुत थोड़े में विश्वासयोग्य है वह बहुत में भी विश्वासयोग्य है, और जो बहुत थोड़े में अधर्मी है वह बहुत में भी अधर्मी है।

11 इसलिए यदि तुम अधर्म की सम्पत्ति में विश्वासयोग्य न रहे, तो कौन तुम्हें सच्चा धन सौंपेगा?

12 और यदि तुम दूसरे व्यक्ति की वस्तु में विश्वासयोग्य न रहे, तो जो स्वयं तुम्हारा है वह तुम्हें कौन देगा?

13 कोई भी दास दो स्वामियों की सेवा करने में असमर्थ है, क्योंकि या तो वह एक से द्वेष रखेगा और दूसरे से वह प्रेम रखेगा, या फिर वह एक के प्रति आस्था रखेगा और दूसरे को वह तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन की सेवा करने में असमर्थ हो।"

14 और फरीसी जो धन के लोभी थे, इन सब बातों को सुनकर वे उसका उपहास कर रहे थे।

15 और उसने उनसे कहा, "तुम लोग तो मनुष्यों के सामने अपने आपको धर्मी ठहराते हो, परन्तु परमेश्वर तुम्हारे हृदयों को जानता है। क्योंकि जो मनुष्यों के मध्य में महान है वह परमेश्वर के सम्मुख में घृणित है।

16 यूहन्ना के आने तक व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता हुआ करते थे। उस समय से, शुभ सन्देश के रूप में परमेश्वर के राज्य की घोषणा की गई है, और हर कोई उसमें प्रबलता से प्रवेश करता है।

Luke 17:1

17 परन्तु आकाश और पृथ्वी का मिट जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के हट जाने से सहज है।

18 जो कोई अपनी पत्नी से विवाह-विच्छेध करके किसी दूसरी से विवाह करता है तो वह व्यभिचार करता है, और जो कोई अपने पति से विवाह-विच्छेध की हुई ऐसी स्त्री से विवाह करता है तो वह भी व्यभिचार करता है।

19 अब एक धनवान मनुष्य था, और वह बैंगनी और सूक्ष्म सनी का वस्त्र पहना करता था और प्रतिदिन धूमधाम के साथ दावत किया करता था।

20 परन्तु लाज़र नाम का एक कंगाल उसके द्वार पर पड़ा रहता था, जो कि घावों से पीड़ित था।

21 और वह धनवान की मेज से गिरनेवाली वस्तुओं से पेट भरने की लालसा किया करता था। परन्तु यहाँ तक कि कुत्ते भी आकर उसके घावों को चाटा करते थे।

22 फिर ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों के द्वारा उसे ले जाकर अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया। फिर वह धनवान भी मर गया और गाड़ा गया,

23 और अधोलोक में से, उसने यातना में पड़े हुए अपनी आँखों को उठाया, और दूर से उसने अब्राहम को, और उसकी गोद में लाज़र को देखा।

24 और पुकारकर, उसने कहा, 'हे पिता अब्राहम, मुझ पर दया कर और लाज़र को भेज दे, ताकि वह अपनी उंगली का सिरा पानी में भिगोकर मेरी जीभ को ठंडा करे, क्योंकि मैं इस ज्वाला में तड़प रहा हूँ।'

25 परन्तु अब्राहम ने कहा, 'हे पुत्र, स्मरण कर कि तू अपने जीवनकाल में अपनी अच्छी वस्तुओं को पा चुका है, और वैसे ही लाज़र बुरी वस्तुओं को। परन्तु अब वह यहाँ शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है।

26 और इन सब बातों के साथ ही, हमारे और तेरे बीच में एक बड़ी खाई ठहराई गई है, ताकि जो यहाँ से पार करके तुम्हारे पास जाना चाहें तो वे सक्षम न हों, और न ही वे वहाँ से पार करके हमारे पास आ सकें।'

27 फिर उसने कहा, 'तो हे पिता, मैं तुझ से विनती करता हूँ, कि तू उसे मेरे पिता के घर भेज दे—

28 क्योंकि मेरे पाँच भाई हैं—जिससे कि वह उनको चेतावनी दे, ताकि वे भी इस पीड़ा की जगह में न आएँ।'

29 परन्तु अब्राहम ने कहा, 'उनके पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ता हैं; तो उनको उनकी सुनने दो।'

30 परन्तु उसने कहा, 'नहीं, हे पिता अब्राहम, परन्तु यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जाए, तो वे पश्चाताप करेंगे।'

31 परन्तु उसने उससे कहा, 'यदि वे मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की नहीं सुनते, तो यदि मरे हुओं में से कोई जी उठे तो वे उसकी भी नहीं मानेंगे।'"

Luke 17:1

1 फिर उसने अपने चेलों से कहा, "यह असम्भव है कि फन्दे नहीं आएँगे, परन्तु हाय उस जन पर जिस के माध्यम से वे आते हैं!

2 उसके लिये यही सही होगा कि यदि एक चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाए और उसे समुद्र में फेंक दिया जाए बजाए इसके कि वह इन छोटों में से किसी एक को फन्दे में फँसाए।

3 अपने विषय में सचेत रहो। यदि तेरा भाई पाप करता है, तो उसे फटकार दे; और यदि वह पश्चाताप करता है, तो उसे क्षमा कर।

4 और यदि दिन भर में वह सात बार तेरे विरोध में पाप करता है, और सातों बार तेरे पास लौट कर, कहता है, 'मैं पछताता हूँ,' तो तू उसे क्षमा कर देना।"

5 और उन प्रेरितों ने प्रभु से कहा, "हमारे विश्वास को बढ़ा।"

Luke 17:1

6 अतः प्रभु ने कहा, "यदि तुम्हारा विश्वास एक राई के दाने के
समान भी होता, तो तुम इस शहतूत के पेड़ से कहते, 'जड़ से
उखड़ जा, और समुद्र में जा लग,' और वह तुम्हारी सुन लेता।

7 परन्तु तुम में से ऐसा कौन है, जिसका दास हल जोतता या
भेड़ों की देखरेख करता हो, और जब वह खेत से आए, तो वह
उससे कहे, 'तुरन्त आकर भोजन करने को बैठ जा'?

8 बजाए इसके, क्या वह उससे ऐसा न कहेगा, 'कुछ तैयार कर
कि मैं खाऊँ और, जब मैं खाऊँ और पीऊँ, तो अपनी कमर
बाँधकर मेरी सेवा कर, और इन सब के पश्चात तू खा और पी
लेना'?

9 वह उस दास के प्रति कृतज्ञता इसलिए नहीं रखेगा क्योंकि
उसने आदेश दिए गए कामों को किया था, क्या रखेगा?

10 इसी रीति से तुम भी, जब तुम उन सब कामों को कर चुकते
हो जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, 'हम निकम्मे दास
हैं। हम ने वही किया है जो हमें करना चाहिए था।'"

11 और ऐसा हुआ कि यरूशलेम को जाते हुए वह सामरिया
और गलील प्रदेश के मध्य में से होकर जा रहा था।

12 और जब उसने किसी गाँव में प्रवेश किया, तो उसे दस
पुरुष मिले जो कोढ़ी थे और जो दूर ही खड़े हुए थे

13 और उन्होंने यह कहते हुए अपने स्वर को ऊँचा किया, "हे
यीशु, हे स्वामी, हम पर दया कर।"

14 और जब उसने उन्हें देखा, तो उसने उनसे कहा, "जाकर
अपने आपको याजकों को दिखाओ।" और ऐसा हुआ कि, जब
वे गए, तो वे शुद्ध हो गए।

15 तब उनमें से एक ने, यह देखकर कि वह चंगा हो गया था,
ऊँचे स्वर से परमेश्वर की बड़ाई करता हुआ लौट आया।

16 और वह उसके पाँवों पर मुँह के बल गिरकर, उसका
धन्यवाद करने लगा। और वह एक सामरी था।

17 तब उत्तर देते हुए, यीशु ने कहा, "क्या दसों शुद्ध न हुए थे?
परन्तु नौ कहाँ हैं?

18 क्या इस परदेशी को छोड़ वे परमेश्वर की बड़ाई करने के
लिये लौटते नहीं पाए गए?"

19 और उसने उससे कहा, "उठ, और चला जा। तेरे विश्वास ने
तुझे बचा लिया है।"

20 और फरीसियों के द्वारा पूछे जाने पर कि परमेश्वर का राज्य
कब आएगा, तो उसने उनको उत्तर दिया और कहा, "परमेश्वर
का राज्य अवलोकन के साथ नहीं आ रहा है।

21 और न ही वे ऐसा कहेंगे, 'देखो, यहाँ है!' या 'वहाँ है!' क्योंकि
देखो, परमेश्वर का राज्य तुम में है।"

22 फिर उसने चेलों से कहा, "ऐसे दिन आएँगे जिनमें तुम
मनुष्य के पुत्र के दिनों में से एक को देखने की इच्छा करोगे,
परन्तु तुम उसे नहीं देखने पाओगे।

23 और वे तुम से कहेंगे, 'देखो, वहाँ है!' या 'देखो, यहाँ है!'
बाहर नहीं निकलना या उनके पीछे मत भागना,

24 क्योंकि जिस प्रकार से आकाश में एक जगह पर बिजली
कौंधकर आकाश में ही किसी दूसरी जगह पर चमकती है,
वैसे ही मनुष्य का पुत्र भी होगा।

25 परन्तु सबसे पहले उसके लिए बहुत बातों में दुःख उठाना
और इस पीढ़ी के लोगों के द्वारा अस्वीकार किया जाना
आवश्यक है।

26 और जैसा यह नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही यह मनुष्य
के पुत्र के दिनों में भी होगा।

27 वे खा रहे थे, वे पी रहे थे, वे विवाह कर रहे थे, वे विवाह में
दिए जा रहे थे—जिस दिन तक नूह ने जहाज में प्रवेश न किया
और जलप्रलय ने आकर उन सब को नाश न किया।

[28] उसी प्रकार से, जैसे यह लूत के दिनों में घटित हुआ था—वे खा रहे थे, वे पी रहे थे, वे खरीद रहे थे, वे बेच रहे थे, वे बो रहे थे, वे बना रहे थे।

[29] परन्तु जिस दिन लूत सदोम से बाहर निकला, आकाश से आग और गन्धक बरसी और उन सब को नाश कर दिया।

[30] मनुष्य के पुत्र के प्रकट होने के दिन यह इन बातों के अनुसार ही होगा।

[31] उस दिन, जो घर की छत पर हो और उसका सामान घर में हो, तो वह उसे लेने को न उतरे; और जो खेत में हो, उसी प्रकार से वह भी पीछे छूट गई बातों की ओर न पलटे।

[32] लूत की पत्नी को स्मरण रखो।

[33] जो कोई अपना प्राण बचाने की खोज में रहे तो वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई उसे खोएगा वह उसे बचा लेगा।

[34] मैं तुम से कहता हूँ, उस रात दो जन एक खाट पर होंगे। एक को ले लिया जाएगा, और दूसरे को छोड़ दिया जाएगा।

[35] दो जन एक स्थान पर चक्की पीसते होंगे। एक को ले लिया जाएगा, परन्तु दूसरे को छोड़ दिया जाएगा।"

[36] [दो जन खेत में होंगे; एक को ले लिया जाएगा, और दूसरे को छोड़ दिया जाएगा।]

[37] और उत्तर देते हुए, उन्होंने उससे पूछा, "हे प्रभु, यह कहाँ होगा?" अतः उसने उनसे कहा, "जहाँ लोथ है, वहाँ गिद्ध भी तो एक साथ इकट्ठे होंगे।"

Luke 18:1

[1] फिर उसने यह दिखाने के लिए उनसे एक दृष्टान्त बोला कि उनके लिए यह आवश्यक है कि सदा प्रार्थना करना चाहिए और हतोत्साहित नहीं होना चाहिए,

[2] और कहा, "किसी नगर में एक न्यायी रहता था, जो न तो परमेश्वर से डरता था और न ही मनुष्यों का सम्मान करता था।

[3] और उसी नगर में एक विधवा भी रहती थी, और वह उसके पास आया करती थी, और कहती थी, 'मेरे प्रतिद्वन्द्वी के सामने मुझे सही ठहरा।'

[4] और कितने समय तक तो वह इच्छुक ही नहीं था, परन्तु इन बातों के पश्चात उसने अपने आप से कहा, 'भले ही मैं न तो परमेश्वर से डरता हूँ, और न ही मनुष्य का सम्मान करता हूँ,

[5] तौभी क्योंकि यह विधवा मुझे परेशान करती रहती है, इसलिए मैं उसको सही ठहराऊँगा, जिससे कि वह अन्त तक आ-आकर मेरे जी को दुःखी न करे।'"

[6] तब प्रभु ने कहा, "सुनो कि यह अधर्मी न्यायी क्या कहता है।

[7] और क्या परमेश्वर अपने चुने हुओं को सही न ठहराएगा, जो दिन और रात उसको पुकारते रहते हैं, और क्या वह उनके विषय में देर करेगा?

[8] मैं तुम से कहता हूँ कि वह तुरन्त उनको सही ठहराएगा। तब पर भी, जब मनुष्य का पुत्र आएगा, तो क्या सचमुच वह पृथ्वी पर विश्वास पाएगा?"

[9] फिर उसने उन लोगों से भी यह दृष्टान्त कहा जो अपने आप में इस बात पर आश्वस्त थे कि वे धर्मी थे और जो दूसरों को तुच्छ जानते थे:

[10] "दो मनुष्य मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये गए—एक फरीसी था और दूसरा चुंगी लेनेवाला था।

[11] वह फरीसी, खड़े होकर, अपने विषय में इन बातों की प्रार्थना कर रहा था, 'हे परमेश्वर, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ कि मैं बाकी के मनुष्यों के समान—डाकू, अधर्मी, व्यभिचारी—या इस चुंगी लेनेवाले के समान भी नहीं हूँ।

[12] मैं सप्ताह में दो बार उपवास करता हूँ। मैं अपनी सब कमाई का दसमांश भी देता हूँ।'

[13] परन्तु उस चुंगी लेनेवाले ने, दूर खड़े होकर, स्वर्ग की ओर अपनी आँखों को उठाना भी न चाहा, परन्तु अपनी छाती को

पीट-पीटकर, कहने लगा, 'हे परमेश्वर, मुझ पापी पर दया कर।'

14 मैं तुम से कहता हूँ, कि उस दूसरे के बजाए यही मनुष्य धर्मी ठहरकर अपने घर को गया। क्योंकि जो कोई अपने आपको बड़ा बनाएगा वह विनम्र किया जाएगा, और जो अपने आपको विनम्र बनाएगा वह बड़ा किया जाएगा।"

15 और वे बच्चों को भी उसके पास ला रहे थे ताकि वह उनको छू ले, परन्तु जब चेलों ने यह देखा, तो वे उनको डाँटने लगे।

16 परन्तु यीशु ने उनको यह कहकर अपने पास बुलाया, "छोटे बालकों को मेरे पास आने की अनुमति दो, और उन्हें मना मत करो। क्योंकि परमेश्वर का राज्य ऐसों ही का है।

17 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जो कोई परमेश्वर के राज्य को बालक के समान ग्रहण न करेगा निश्चित रूप से वह उसमें प्रवेश करने न पाएगा।"

18 और किसी सरदार ने उससे यह कहकर पूछा, "हे उत्तम गुरु, क्या करने से मैं अनन्त जीवन का वारिस होऊँगा?"

19 परन्तु यीशु ने उससे कहा, "तू मुझे उत्तम क्यों कहता है? केवल परमेश्वर के अलावा कोई भी उत्तम नहीं है।

20 तू आज्ञाओं को तो जानता है—व्यभिचार न करना, हत्या न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना, तेरे पिता और माता का आदर करना।"

21 परन्तु उसने कहा, "इन सब बातों का पालन तो मैं अपने लड़कपन ही से करता आया हूँ।"

22 परन्तु यीशु ने, यह सुनकर, उससे कहा, "तुझ में अब भी एक बात की घटी है। जो कुछ तेरे पास है उसे बेचकर कंगालों में वितरित कर दे, और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा—और आकर मेरे पीछे हो ले।"

23 परन्तु वह, इन बातों को सुनकर, अत्यन्त उदास हो गया, क्योंकि वह बहुत धनी था।

24 तब यीशु ने, उसे देखकर, कहा, "जिनके पास धन होता है वे कितनी कठिनाई से परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं!

25 क्योंकि परमेश्वर के राज्य में किसी धनी व्यक्ति के प्रवेश करने की तुलना में ऊँट का सूई के नाके में से निकल जाना सरल है।"

26 तब सुननेवालों ने कहा, "तो फिर कौन उद्धार पाने के योग्य है?"

27 तब उसने कहा, "जो मनुष्य के लिए असम्भव है, वह परमेश्वर के लिए सम्भव है।"

28 फिर पतरस ने कहा, "देख, हम ने तो सबकुछ छोड़ दिया है और तेरे पीछे हो लिये हैं।"

29 अतः उसने उनसे कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ कि ऐसा कोई नहीं जिसने परमेश्वर के राज्य की खातिर घर या पत्नी या भाइयों या माता-पिता या बच्चों को छोड़ दिया हो

30 जो इस समय में किसी भी तरह से अधिक प्राप्त नहीं करेगा—और जो आ रहा है उस युग में, अनन्त जीवन।"

31 फिर वह उन बारहों को एक ओर लेकर गया और उनसे कहा, "देखो, हम यरूशलेम को जा रहे हैं, और जितनी बातें मनुष्य के पुत्र के विषय में भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा लिखी गई हैं वे सब पूरी होंगी।

32 क्योंकि वह अन्यजातियों को सौंप दिया जाएगा, और उसका उपहास किया जाएगा, और दुर्व्यवहार किया जाएगा, और उस पर थूका जाएगा।

33 और उसे कोड़े लगाकर, वे उसे मार डालेंगे, और तीसरे दिन वह जी उठेगा।"

34 और वे इन में से किसी भी बात को न समझ पाए, और यह बात उनसे छिपी रही, और जिन बातों को कहा गया था वे उसे नहीं समझे।

35 और ऐसा हुआ कि, जब वह यरीहो के निकट आया, तो एक
अंधा व्यक्ति सड़क के किनारे बैठा हुआ भीख माँग रहा था।

36 और भीड़ के चलने की आहट सुनकर, वह पूछने लगा कि
यह क्या हो सकता है।

37 और उन्होंने उसको बताया, "यीशु नासरी जा रहा है।"

38 और यह कहते हुए, वह पुकार उठा, "हे यीशु, हे दाऊद की
सन्तान, मुझ पर दया कर।"

39 और जो लोग आगे-आगे जा रहे थे वे उसे डाँटने लगे, ताकि
वह चुप हो जाए। परन्तु वह और भी पुकारता रहा, "हे दाऊद
की सन्तान, मुझ पर दया कर।"

40 तब यीशु रुक गया और उसे आदेश दिया कि उसके पास
लेकर आओ। फिर जब वह निकट आ गया, तो उसने उससे
पूछा,

41 "तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूँ?" अतः उसने कहा,
"हे प्रभु, यह कि मैं फिर से देखने लगूँ।"

42 और यीशु ने उससे कहा, "फिर से देखने लग जा। तेरे
विश्वास ने तुझे बचा लिया है।"

43 और तुरन्त ही वह फिर से देखने लग गया, और परमेश्वर
की बड़ाई करता हुआ, उसके पीछे हो लिया। और सब लोगों
ने, यह देखकर, परमेश्वर की स्तुति की।

Luke 19:1

1 और वह यरीहो में प्रवेश करके जा रहा था।

2 और देखो एक व्यक्ति था, जिसका नाम जक्कई था, और जो
चुंगी लेनेवालों का सरदार था, और वह धनी था।

3 और वह यीशु को देखने का प्रयास कर रहा था, कि वह कौन
था, परन्तु भीड़ के कारण वह असमर्थ था, क्योंकि वह कट में
छोटा था।

4 और आगे दौड़कर, वह एक गूलर के पेड़ पर चढ़ गया ताकि
वह उसे देख पाए, क्योंकि वह उसी मार्ग से जानेवाला था।

5 और जब वह उस जगह पहुँचा, तो ऊपर देखकर, यीशु ने
उससे कहा, "हे जक्कई, झट से, नीचे उतर आ, क्योंकि मेरे
लिए आज तेरे घर में ठहरना आवश्यक है।"

6 और वह झट से, नीचे उतर आया और आनन्द करते हुए,
उसका स्वागत किया।

7 और जब उन्होंने यह देखा, तो वे सब यह कहते हुए शिकायत
करने लगे, "वह तो एक पापी मनुष्य के यहाँ ठहरने गया है।"

8 परन्तु जक्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा, "हे प्रभु, देख, मैं
अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूँ, और यदि मैंने किसी
का कुछ भी ठगा है, तो मैं उसे चौगुना फेर दूँगा।"

9 तब यीशु ने उससे कहा, "आज इस घर में उद्धार आया है,
क्योंकि यह भी अब्राहम का एक पुत्र है।

10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूँढ़ने और उनको
बचाने के लिए आया है।"

11 और जब वे ये बातें सुन रहे थे, तो वह एक दृष्टान्त कहने
लगा, क्योंकि वह यरूशलेम के निकट था और वे सोचते थे कि
परमेश्वर का राज्य तुरन्त ही प्रकट होनेवाला है।

12 इसलिए उसने कहा, "एक कुलीन मनुष्य किसी दूर देश की
यात्रा पर गया ताकि अपने लिए राज्य प्राप्त करके वापस लौट
आए।

13 अतः अपने दासों में से दस को बुलाकर, उसने उन्हें दस
मुहरें दीं और उनसे कहा, 'मेरे जाने पर इनसे व्यापार का
संचालन करना।'

14 परन्तु उसके नगर के रहनेवाले उससे बैर रखते थे और
उसके पीछे-पीछे दूतों के द्वारा यह कहला भेजा, 'हम नहीं
चाहते कि यह हम पर शासन करे।'

15 और ऐसा हुआ कि, जब वह राज्य प्राप्त करके वापस लौट
आया, तब उसने उन दासों को अपने पास बुलाने के लिए
आदेश दिया जिनको उसने चाँदी दी थी, ताकि वह जान पाए
कि उन्होंने व्यापार करने से क्या लाभ कमाया था।

16 तब पहले ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरी मुहर ने दस और
मुहरें अर्जित की हैं।'

17 और उसने उससे कहा, 'हे उत्तम दास, अच्छा किया!
क्योंकि तू बहुत थोड़े में ही विश्वासयोग्य रहा, अब दस नगरों
पर अधिकार रख।'

18 और दूसरे ने आकर कहा, 'हे स्वामी, तेरी मुहर ने पाँच मुहरें
बना ली हैं।'

19 अतः उसने उससे भी कहा, 'और तू पाँच नगरों पर
अधिकार रख।'

20 और एक अन्य ने आकर कहा, 'हे स्वामी, देख यह तेरी मुहर
है, जिसे मैंने एक कपड़े में बाँधकर अलग रखा हुआ था,

21 क्योंकि मैं तुझ से डरता था, क्योंकि तू एक कठोर मनुष्य है।
जो तूने नहीं रखा उसे भी तू उठा लेता है, और जो तूने नहीं
बोया उसे भी तू काटता है।'

22 वह उससे कहता है, 'हे दुष्ट दास, मैं तेरे ही मुँह से तुझे दोषी
ठहराता हूँ! तू जानता था कि मैं एक कठोर मनुष्य हूँ, जो मैंने
नहीं रखा उसे भी उठा लेता हूँ, और जो मैंने नहीं बोया उसे भी
काटता हूँ?

23 और किस कारण से तूने मेरी चाँदी को किसी सर्राफ के
पास नहीं रखा, कि जब मैं वापस लौटूँ, तो मैं आकर उसे ब्याज
समेत वसूल कर लेता?'

24 और उसने निकट खड़े लोगों से कहा, 'वह मुहर उससे ले
लो और उसे दे दो जिसके पास दस मुहरें हैं।'

25 और उन्होंने उससे कहा, 'हे स्वामी, उसके पास दस मुहरें
तो हैं।'

26 'मैं तुम से कहता हूँ कि जिसके पास है, उस हर एक जन
को यह दिया जाएगा, परन्तु जिसके पास नहीं है, उससे वह भी
ले लिया जाएगा जो उसके पास है।

27 परन्तु मेरे इन बैरियों को, जो नहीं चाहते थे कि मैं उन पर
राज्य करूँ, उनको यहाँ लाकर मेरे सामने मार डालो।'"

28 और जब वह इन बातों को कह चुका, तो वह यरूशलेम की
ओर आगे की यात्रा में चला।

29 और ऐसा हुआ कि, जब वह बैतफगे और बैतनिय्याह के
निकट पहुँचा, जो जैतून नाम के पहाड़ पर हैं, तो उसने अपने
चेलों में से दो को भेजा,

30 यह कहकर भेजा, "सामने के गाँव में जाओ, जिसमें प्रवेश
करते ही, एक गदही का बच्चा बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, जिस
पर मनुष्यों में से कोई भी कभी न बैठा हो। उसे खोलो और
यहाँ ले आओ।

31 और यदि कोई तुम से पूछता है, 'तुम इसे क्यों खोल रहे हो?'
तो इस प्रकार से तुम कहोगे, 'प्रभु को इसकी आवश्यकता
है।'"

32 अतः जिनको भेजा गया था, उन्होंने जाकर वैसा ही पाया
जैसा उसने उनसे कहा था।

33 और जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके
मालिकों ने उनसे कहा, "तुम इस गदहे के बच्चे को क्यों खोल
रहे हो?"

34 तो उन्होंने कहा, "प्रभु को इसकी आवश्यकता है।"

35 और वे उसको यीशु के पास ले आए और उस गदहे के बच्चे
पर अपने कपड़े डालकर, उन्होंने यीशु को उस पर बैठा
दिया।

36 और जब वह चलने लगा, तो वे लोग मार्ग में अपने कपड़े
बिछा रहे थे।

Luke 20:1

37 और जब वह जैतून पहाड़ की ढलान के निकट पहुँचा, तो उन सब सामर्थ्य के कामों के विषय में जो उन्होंने देखे थे चेलों की सारी मण्डली आनन्दित होने और ऊँचे स्वर से परमेश्वर की स्तुति करने लगी,

38 और कहने लगी, “धन्य है वह राजा जो प्रभु के नाम से आता है! स्वर्ग में शान्ति हो और आकाश में महिमा हो!”

39 और भीड़ में से कुछ फरीसियों ने उससे कहा, “हे गुरु, अपने चेलों को डाँट।”

40 और उत्तर देते हुए, उसने कहा, “मैं तुम में से कहता हूँ कि यदि ये चुप रहे, तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।”

41 और जब वह पहुँच गया, तो नगर को देखकर, वह उस पर रोया।

42 और कहने लगा, “यदि आज के दिन में तूने, हाँ तूने, शान्ति की बातें जान ली होतीं! परन्तु अब वे तेरी आँखों से छिप गई हैं।

43 क्योंकि तुझ पर ऐसे दिन आएँगे, और तेरे शत्रु तेरे चारों ओर मोर्चा बाँधेंगे, और वे तुझे घेर लेंगे और हर तरफ से तुझे दबाएँगे।

44 और वे तुझे और तुझ में पाए जाने वाले तेरे बालकों को भूमि में रौंद देंगे। और वे तुझ में पत्थर पर पत्थर भी न छोड़ेंगे क्योंकि तूने अपने उस सहायता के समय को नहीं जाना।”

45 और मन्दिर में प्रवेश करके, वह बेचनेवालों को बाहर निकालने लगा।

46 और उनसे कहा, “ऐसा लिखा है, ‘मेरा घर प्रार्थना का घर होगा,’ परन्तु तुम ने उसे ‘डाकुओं की खोह’ बना दिया है।”

47 और वह प्रतिदिन मन्दिर में शिक्षा दिया करता था। और प्रधान याजक और शास्त्री और लोगों के प्रमुख उसे मार डालने का अवसर ढूँढ़ रहे थे,

48 और उनको ऐसा कोई उपाय नहीं मिला जिसे वे कर पाएँ, क्योंकि सब लोग बड़े चाव से उसकी सुनते थे।

Luke 20:1

1 और ऐसा हुआ कि, उन दिनों में से एक में जब वह मन्दिर में लोगों को शिक्षा दे रहा था और सुसमाचार की घोषणा कर रहा था, तो प्राचीनों के साथ प्रधान याजक और शास्त्री आ पहुँचे।

2 और उसे सम्बोधित करते हुए, वे बोले, “हमें बता कि तू किस अधिकार से इन कामों को करता है, या वह कौन है जिसने तुझे यह अधिकार दिया है।”

3 परन्तु उत्तर देते हुए, उसने उनसे कहा, “मैं भी तुम से एक बात पूछूँगा, और तुम मुझे बताओ:

4 यूहन्ना का बपतिस्मा, क्या स्वर्ग की ओर से था, या मनुष्यों की ओर से था?”

5 तब यह कहकर, उन्होंने आपस में तर्क-वितर्क किया, “यदि हम कहें, ‘स्वर्ग की ओर से,’ तो वह कहेगा, ‘फिर किस कारण से तुम ने उस पर विश्वास नहीं किया?’

6 परन्तु यदि हम कहें, ‘मनुष्यों की ओर से,’ तो सब लोग हम पर पथराव करेंगे, क्योंकि वे सचमुच जानते हैं, कि यूहन्ना भविष्यद्वक्ता था।”

7 और उन्होंने ऐसे उत्तर दिया कि वे नहीं जानते कि वह कहाँ से था।

8 और यीशु ने उनसे कहा, “और मैं भी तुम को नहीं बताऊँगा कि मैं किस अधिकार से इन कामों को करता हूँ।”

9 तब वह लोगों से यह दृष्टान्त कहने लगा: “किसी मनुष्य ने एक दाख की बारी लगाई, और उसे किसानों को किराए पर दे दिया और लम्बे समय के लिये कहीं चला गया।

10 और समय आने पर उसने किसानों के पास एक दास को भेजा, कि वे दाख की बारी का फल उसे दें। परन्तु किसानों ने उसे पीटकर खाली ही भेज दिया।

11 और उसने एक अन्य दास को भेजा, परन्तु उन्होंने उसे भी
पीटा और उसके साथ लज्जास्पद रीति से व्यवहार किया और
उसे भी खाली ही भेज दिया।

12 फिर उसने तीसरे को भेजा, परन्तु उन्होंने उसको भी घायल
कर दिया और उसे बाहर निकाल दिया।

13 तब उस दाख की बारी के स्वामी ने कहा, 'मैं क्या करूँ? मैं
अपने प्रिय पुत्र को भेजूँगा। सम्भवतः वे उसका आदर करेंगे।'

14 परन्तु जब किसानों ने उसे देखा तो यह कहकर वे आपस
में विचार करने लगे, 'यह तो वारिस है। आओ हम उसे मार
डालें जिससे कि विरासत हमारी हो जाए।'

15 और उन्होंने उसे दाख की बारी से बाहर निकाल दिया और
उसे मार डाला। इसलिए तब उस दाख की बारी का स्वामी
उनके साथ क्या करेगा?

16 वह आकर उन किसानों को मार डालेगा और उस दाख की
बारी को दूसरों को सौंप देगा।" परन्तु जब उन्होंने यह सुना,
तो उन्होंने कहा, "ऐसा न हो!"

17 परन्तु उनकी ओर देखकर, उसने कहा, "फिर यह क्या है
जो लिखा हुआ है: 'जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार
कर दिया था, वही कोने का सिरा हो गया'?

18 जो कोई उस पत्थर पर गिरेगा वह टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।
और जिस पर वह गिरेगा, उसको वह पीस डालेगा।"

19 उसी घड़ी शास्त्रियों और प्रधान याजकों ने उस पर हाथ
डालने का प्रयास किया, और वे लोगों से डरे, क्योंकि वे जान
गए थे कि यह दृष्टान्त उसने उनके विरुद्ध में कहा था।

20 और उसे बड़े ध्यान से देखते हुए, उन्होंने ऐसे भेदियों को
भेजा जिन्होंने स्वयं के धर्मी होने का नाटक किया, कि वे
उसकी किसी बात को पकड़ें, ताकि उसे राज्यपाल के शासन
और अधिकार में सौंप दें।

21 और यह कहकर, उन्होंने उससे पूछा, "हे गुरु, हम जानते
हैं कि तू सही रीति से बोलता और सिखाता है, और तू किसी
के मुँह को नहीं देखता, परन्तु तू परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से
सिखाता है।

22 क्या कैसर को कर देना हमारे लिए व्यवस्था के अनुसार है,
या नहीं?"

23 परन्तु उनकी चतुराई को समझकर, उसने उनसे कहा,

24 "मुझे एक दीनार दिखाओ। इस पर किसका चित्र और छाप
है?" और उन्होंने कहा, "कैसर का।"

25 तब उसने उनसे कहा, "इसलिए जो सामान कैसर का है,
वह कैसर को, और जो सामान परमेश्वर का है वह परमेश्वर को
वापस दो।"

26 और वे लोगों के सामने उसकी बात को नहीं पकड़ पाए,
और उसके उत्तर पर अचम्भित होकर, वे चुप रह गए।

27 फिर कुछ सदूकी आए, जो कहते थे कि कोई पुनरुत्थान है
ही नहीं, और उन्होंने उससे प्रश्न किया,

28 और कहा, "हे गुरु, मूसा ने हमारे लिये ऐसा लिखा है, कि
यदि किसी का भाई, पत्नी के रहते हुए मर जाए, और वह
सन्तानरहित हो, तो उसका भाई उसकी पत्नी को ले ले, और
अपने भाई के लिये वंश उत्पन्न करे।

29 अतः, सात भाई थे, और पहला, पत्नी होने पर भी,
सन्तानरहित मर गया;

30 और दूसरे ने

31 और फिर तीसरे ने उस स्त्री को ले लिया; और इसी रीति से
उन सातों ने ही अपने पीछे कोई सन्तान न छोड़ी, और मर
गए।

32 तत्पश्चात वह स्त्री भी मर गई।

33 अतः, पुनरुत्थान होने पर, वह उनमें से किसकी पत्नी ठहरेगी? क्योंकि उन सातों ने उसे अपनी पत्नी करके ले लिया था।"

34 और यीशु ने उनसे कहा, "इस युग की सन्तानें विवाह करती हैं और विवाह में दी जाती हैं।

35 परन्तु जो उस युग को और पुनरुत्थान को जो मरे हुओं में से होता है प्राप्त करने के योग्य समझे जाते हैं वे न तो विवाह करते हैं और न ही विवाह में दिए जाते हैं।

36 क्योंकि न ही वे अब मरने के लिए सक्षम हैं, इसलिए कि वे स्वर्गदूतों के समान हैं; और पुनरुत्थान की सन्तानें होने के कारण, वे परमेश्वर की सन्तानें हैं।

37 परन्तु यह कि मरे हुए जी उठते हैं, मूसा ने भी झाड़ी के पास प्रकट किया है, जब वह प्रभु को अब्राहम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर कहता है।

38 और वह मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है, क्योंकि उसके निकट सब जीवित हैं।"

39 तब उत्तर देते हुए कुछ शास्त्रियों ने कहा, "हे गुरु, तूने ठीक बोला है।"

40 क्योंकि अब उससे कुछ और पूछने का उनको साहस न हुआ।

41 तब उसने उनसे पूछा, "वे कैसे कहते हैं कि मसीह दाऊद की सन्तान है?

42 क्योंकि दाऊद तो स्वयं ही भजन संहिता की पुस्तक में कहता है: 'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, "मेरे दाहिने बैठ,

43 जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पाँवों की चौकी न कर दूँ।"'

44 इसी कारण से दाऊद उसे 'प्रभु' कहता है। और वह उसकी सन्तान कैसे है?"

45 और जिस समय सब लोग सुन रहे थे, उसने अपने चेलों से कहा,

46 "शास्त्रियों से सावधान रहो, जो लम्बे वस्त्र पहने हुए चलने-फिरने की इच्छा रखते हैं और जो बाजारों में नमस्कार किए जाने से और आराधनालयों में प्रथम आसनों से और दावत में प्रथम स्थानों से प्रीति रखते हैं।

47 वे विधवाओं के घरों खा जाते हैं, और दिखाने के लिये लम्बी प्रार्थना करते हैं। ये बड़ा दण्ड पाएँगे।"

Luke 21:1

1 और आँखें उठाकर, उसने धनवानों को देखा जो अपने दान भण्डार में डाल रहे थे।

2 और उसने एक कंगाल विधवा को भी उसमें दो दमड़ियाँ डालते हुए देखा।

3 और उसने कहा, "मैं तुम से सच कहता हूँ, कि इस कंगाल विधवा ने सब से अधिक डाला है।

4 क्योंकि उन सब ने अपनी बहुतायत में से दान में डाला है। परन्तु इसने, अपनी निर्धनता में से, अपनी वह सारी आजीविका डाल दी है जो उसके पास थी।"

5 और जब कुछ लोग मन्दिर के विषय में कह रहे थे, कि उसे सुन्दर पत्थरों और भेंट की वस्तुओं से सँवारा गया था, तो उसने कहा,

6 "जिन वस्तुओं को तुम देख रहे हो, ऐसे दिन आएँगे जिनमें पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जिसे ढाया न जाएगा।"

7 इसलिए यह कहकर उन्होंने उससे प्रश्न किया, "हे गुरु, अतः यह सब बातें कब होंगी, और जब ये बातें होने पर होंगी तो उसका क्या चिन्ह होगा?"

Luke 21:1

8 तब उसने कहा, “सावधान रहो कि तुम छले न जाओ। क्योंकि बहुत से मेरे नाम से आकर कहेंगे, ‘मैं वही हूँ,’ और, ‘समय निकट आ पहुँचा है।’ उनके पीछे न चले जाना।

9 और जब तुम लड़ाइयों और बलवों की चर्चा सुनो, तो भयभीत न होना, क्योंकि इन बातों का पहले होना अवश्य है, परन्तु तुरन्त ही अन्त न होगा।”

10 तब उसने उनसे कहा, “जाति के विरोध में जाति उठ खड़ी होगी, और राज्य के विरोध में राज्य।

11 भिन्न-भिन्न स्थानों पर बड़े-बड़े भूकम्प, और अकाल और महामारियाँ दोनों ही पड़ेंगी। आकाश में भयंकर घटनाएँ और बड़े-बड़े चिन्ह दोनों ही प्रकट होंगे।

12 परन्तु इन सब बातों से पहले, मेरे नाम की खातिर वे तुम पर हाथ डालेंगे और तुम को सताएँगे, और तुम को आराधनालयों को और बन्दीगृहों को सौंपेंगे, और तुम को राजाओं और राज्यपालों के सामने ले जाएँगे।

13 यह तुम्हारे लिये एक गवाही में परिवर्तित हो जाएगा।

14 परन्तु अपने हृदय में बचाव की तैयारी न करने के लिए ठान लो,

15 क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा मुँह और बुद्धि प्रदान करूँगा कि जितने लोग तुम्हारा विरोध करेंगे वे प्रतिरोध या खण्डन करने में सक्षम नहीं होंगे।

16 परन्तु तुम माता-पिता और भाइयों और कुटुम्बियों और मित्रों के द्वारा पकड़वाए जाओगे, और वे तुम में से कितनों को मार डालेंगे।

17 और मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से द्वेष रखेंगे।

18 और तुम्हारे सिर का एक बाल भी नाश न होगा।

19 अपने धीरज से, तुम अपने प्राणों को प्राप्त करोगे।

20 परन्तु जब तुम यरूशलेम को सेनाओं से घिरा हुआ देखो, तो जान लेना कि उसका उजड़ जाना निकट है।

21 तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएँ, और जो भीतर हों वे बाहर निकल जाएँ, और जो खेतों में हो वे उसमें प्रवेश न करें।

22 क्योंकि ये प्रतिशोध के दिन हैं, कि उन सब बातों को पूरा करें जो लिखी गई हैं।

23 परन्तु उन पर हाय जो उन दिनों में गर्भ से हों और जो दूध पिलाती हों! क्योंकि देश पर बड़ा संकट और इन लोगों पर क्रोध होगा।

24 वे तलवार के मुख के आगे गिर पड़ेंगे, और वे सब देशों में बन्धुआ करके ले जाए जाएँगे, और यरूशलेम को जातियों के द्वारा रौंदा जाएगा जब तक कि उन जातियों का समय पूरा न हो।

25 और सूर्य और चन्द्रमा और तारों में चिन्ह दिखाई देंगे, और समुद्र के गरजने और लहरों के कोलाहल से पृथ्वी पर रहने वाली जातियाँ घबरा जाएँगी।

26 डर के मारे और उन बातों की आशा करते हुए लोग मूर्छित हो जाएँगे जो इस बसे हुए संसार पर आनेवाली हैं, क्योंकि आकाश की शक्तियाँ हिलाई जाएँगी।

27 और तब वे मनुष्य के पुत्र को सामर्थ्य और बड़ी महिमा के साथ बादल पर आते देखेंगे।

28 परन्तु जब ये बातें होने लगें, तो सीधे खड़े होकर अपने सिर को ऊपर उठाना, क्योंकि तुम्हारा छुटकारा निकट आता होगा।”

29 और उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा: “अंजीर के पेड़ को और बाकी पेड़ों को देखो।

30 जब उनकी कोंपलें निकल पड़ती हैं, तो तुम स्वयं ही देखकर जान लेते हो कि ग्रीष्मऋतु निकट ही है।

31 इसी रीति से तुम, जब ये बातें होते देखो, तब जान लो कि
परमेश्वर का राज्य निकट है।

32 मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक यह सब न हो, तब तक
निश्चित रूप से इस पीढ़ी का अन्त नहीं होगा।

33 आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें निश्चित रूप
से न टलेंगी।

34 परन्तु स्वयं पर ध्यान दो, ताकि तुम्हारे हृदय खुमार और
नशे, और प्रतिदिन की चिन्ताओं से बोझिल न हो जाएँ, और
वह आकस्मिक दिन तुम पर आ पड़े

35 फंदे के समान, क्योंकि वह उन सब पर आ पड़ेगा जो
सम्पूर्ण पृथ्वी की भूमि पर निवास कर रहे हैं।

36 परन्तु हर समय जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, ताकि
तुम इतने सामर्थी बनो कि इन सब घटनाओं से जो होने वाली
हैं बच पाओ, और मनुष्य के पुत्र के सामने खड़े हो सको।"

37 और दिन के समय में, वह मन्दिर में शिक्षा दिया करता था,
परन्तु रात के समय में, वह बाहर जाकर उस पहाड़ पर रहा
करता था जिसे जैतून कहते थे।

38 और सब लोग उसकी सुनने के लिये बहुत भोर में उठकर
मन्दिर में उसके पास आया करते थे।

Luke 22:1

1 और अख़मीरी रोटी का पर्व, जो फसह कहलाता है, निकट
था।

2 और प्रधान याजक और शास्त्री इस बात की खोज में थे कि
वे उसको कैसे मार डालें, क्योंकि वे लोगों से डरते थे।

3 तब शैतान उस यहूदा में समा गया, जो इस्करियोती
कहलाता था और उन बारहों में गिना जाता था।

4 और उसने जाकर प्रधान याजकों और सरदारों के साथ इस
विषय में बात की कि वह उसको किस प्रकार से उनके हाथ
में पकड़वाए।

5 और वे आनन्दित हुए, और वे उसे चाँदी देने के लिए सहमत
हो गए।

6 और वह मान गया और वह भीड़ से दूर उसे उनके हाथ
पकड़वा देने का अवसर ढूँढ़ने लगा।

7 फिर अख़मीरी रोटी का दिन आया, जिसमें फसह का
बलिदान करना आवश्यक था।

8 और उसने पतरस और यूहन्ना को, यह कहकर भेजा,
"जाकर हमारे लिये फसह तैयार करो, ताकि हम उसे खाएँ।"

9 और उन्होंने उससे पूछा, "तू कहाँ चाहता है कि उसे हम
तैयार करें?"

10 और उसने उनको उत्तर दिया, "देखो, जब तुम नगर में
प्रवेश कर लोगे, तो पानी का घड़ा उठाए हुए एक मनुष्य तुम्हें
मिलेगा। जिस घर में वह प्रवेश करे उसके पीछे-पीछे उसमें
चले जाना।

11 और उस घर के स्वामी से कहना, 'गुरु तुझ से पूछता है;
"वह अतिथि कक्ष कहाँ है जहाँ मैं अपने चेलों के साथ फसह
खाऊँ?"'

12 और वह तुम को एक सजा-सजाया ऊपरी कक्ष दिखा देगा।
वहीं इसकी तैयारी करना।"

13 और वे चले गए और इसे वैसा ही पाया जैसा उसने उनसे
कहा था, और उन्होंने फसह को तैयार किया।

14 और जब वह घड़ी आ गई, तो वह भोजन करने को बैठा,
और प्रेरित उसके साथ थे।

15 और उसने उनसे कहा, "बड़ी लालसा के साथ मैंने दुःख
भोगने से पहले इस फसह को तुम्हारे साथ खाने की इच्छा की
थी।

Luke 22:1

16 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ कि जब तक वह परमेश्वर के
राज्य में पूरा न हो तब तक निश्चय ही मैं इसे न खाऊँगा।"

17 और उसने एक प्याला लिया और धन्यवाद देकर, उसने
कहा, "इसे लो, और आपस में बाँट लो।

18 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि अब से मैं तब तक दाखलता
का फल निश्चय ही न पीऊँगा, जब तक कि परमेश्वर का राज्य
न आए।"

19 और उसने रोटी ली, और धन्यवाद देकर, उसने वह तोड़ी,
और यह कहते हुए, उनको दी, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे
लिये दी जाती है। मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।"

20 और उसी रीति से भोजन के बाद प्याला भी, यह कहते हुए,
"यह प्याला मेरे उस लहू में नई वाचा है, जो तुम्हारे लिये बहाया
जाता है।

21 परन्तु देखो, मेरे साथ विश्वासघात करनेवाले का हाथ मेज
पर मेरे साथ ही है।

22 क्योंकि मनुष्य का पुत्र तो निश्चय ही उसके अनुसार चलता
है जैसा निर्धारित किया गया है। परन्तु उस मनुष्य पर हाय,
जिसके द्वारा उसके साथ विश्वासघात किया जाता है!"

23 और वे आपस में इस विषय पर चर्चा करने लगे कि उनमें
से ऐसा कौन हो सकता है जो ऐसा करने वाला था।

24 फिर उनके मध्य में इस बात को लेकर भी झगड़ा हो गया
कि उनमें से कौन बड़ा समझा जाता है।

25 परन्तु उसने उनसे कहा, "जातियों के राजा उन पर प्रभुता
करते हैं, और जो उन पर अधिकार रखते हैं वे संरक्षक
कहलाते हैं।

26 परन्तु तुम ऐसे न होना। बजाए इसके, जो तुम में बड़ा है वह
छोटे के समान हो जाए। और जो अगुवाई करता है वह उसके
समान जो सेवा करता है।

27 क्योंकि बड़ा कौन है, वह जो भोजन करने बैठा है या वह जो
सेवा करता है? क्या यह वह नहीं जो भोजन करने बैठा है?
परन्तु मैं तुम्हारे मध्य में उसके समान हूँ जो सेवा करता है।

28 परन्तु वह तुम ही हो जो मेरी परीक्षाओं में लगातार मेरे साथ
रहे हो।

29 और जिस प्रकार से मेरे पिता ने मेरे लिये एक राज्य ठहराया
है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिये ठहराता हूँ।

30 ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ और पीओ और
सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के 12 गोत्रों का न्याय करो।

31 शमौन, हे शमौन, देखो, शैतान ने तुम लोगों को गेहूँ के
समान फटकने के लिए माँग लिया है।

32 परन्तु मैंने तेरे विषय में विनती की है कि तेरा विश्वास टल न
जाए। और तू, जब तू वापस लौट आए, तो अपने भाइयों को
दृढ़ करना।"

33 परन्तु उसने उससे कहा, "हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने
और मरने दोनों के लिए तैयार हूँ।"

34 परन्तु उसने कहा, "हे पतरस, मैं तुझ से कहता हूँ, कि जब
तक तू तीन बार इन्कार न कर लेगा कि तू मुझे जानता है उससे
पहले आज मुर्गा बाँग नहीं देगा।"

35 और उसने उनसे कहा, "जब मैंने तुम को पैसे की थैली और
झोले और जूते के बिना भेजा था, तो तुम को किसी वस्तु की
घटी नहीं हुई थी, क्या हुई थी?" और उन्होंने कहा, "किसी वस्तु
की नहीं।"

36 फिर उसने उनसे कहा, "परन्तु अब, जिसके पास पैसे की
थैली हो, तो वह उसे ले ले, और वैसे ही एक झोला भी। और
जिसके पास तलवार न हो, तो वह अपने कपड़े बेच दे और
एक मोल ले ले।

37 क्योंकि मैं तुम से कहता हूँ, कि यह जो लिखा है वह अवश्य
ही मुझ में पूरा होगा, 'और वह अधर्मियों के साथ गिना गया।'
क्योंकि मेरे विषय की बातें सच में पूरी होने पर हैं।"

38 तब उन्होंने कहा, “हे प्रभु, देख! यहाँ दो तलवारें हैं।” और
उसने उनसे कहा, “यह पर्याप्त हैं।”

39 और बाहर निकलकर, वह अपनी रीति के अनुसार जैतून
के पहाड़ पर गया, और चेले भी उसके पीछे-पीछे गए।

40 और उस जगह पहुँचकर, उसने उनसे कहा, “प्रार्थना करो
कि परीक्षा में न पड़ो।”

41 और वह उनसे अलग एक पत्थर फेंकने की दूरी पर गया,
और अपने घुटनों को टिकाकर, वह प्रार्थना करने लगा,

42 यह कहकर, “हे पिता, यदि तेरी इच्छा हो, तो इस प्याले को
मेरे पास से हटा ले। परन्तु मेरी नहीं, परन्तु तेरी ही इच्छा, पूरी
हो।”

43 [और स्वर्ग से एक स्वर्गदूत उस पर प्रकट हुआ, जो उसे
सामर्थ्य देता था।

44 और व्याकुल होकर, वह हार्दिक वेदना से प्रार्थना कर रहा
था, और उसका पसीना लहू की बूँदों के समान भूमि पर गिर
रहा था।]

45 और प्रार्थना से उठकर, वह चेलों के पास आया और संताप
के मारे उन्हें सोता पाया।

46 और उसने उनसे कहा, “तुम क्यों सो रहे हो? उठो और
प्रार्थना करो, ताकि तुम परीक्षा में न पड़ो।”

47 जबकि वह अभी बोल ही रहा था, कि देखो, एक भीड़ आई,
और वह जिसका नाम यहूदा था, जो उन बारहों में से एक था,
उनकी अगुवाई कर रहा था। और वह उसे चूमने के लिए यीशु
के पास आया।

48 परन्तु यीशु ने उससे कहा, “हे यहूदा, क्या तू चूमने से मनुष्य
के पुत्र के साथ विश्वासघात कर रहा है?”

49 और जब उसके चारों ओर के लोगों ने देखा कि क्या
होनेवाला है, तो उन्होंने कहा, “हे प्रभु, क्या हम तलवार से
प्रहार करें?”

50 और उनमें से एक ने महायाजक के दास पर तलवार से
प्रहार किया और उसका दाहिना कान काट दिया।

51 परन्तु उत्तर देते हुए, यीशु ने कहा, “यहीं तक रहने दो!” और
उसके कान को छूकर, उसने उसे चंगा कर दिया।

52 तब यीशु ने उनसे—प्रधान याजकों और मन्दिर के सरदारों
और प्राचीनों से—जो उसके विरोध में आए थे कहा, “क्या तुम
तलवारें और लाठियाँ लिए हुए ऐसे निकले हो जैसे किसी डाकू
के विरोध में?

53 जब मैं मन्दिर में हर दिन तुम्हारे साथ था, तब तुम ने मुझ
पर अपने हाथ नहीं डाले। परन्तु यह तुम्हारा समय है, और
अंधकार का अधिकार है।”

54 फिर उसे पकड़कर, वे उसे ले चले और महायाजक के घर
में उसे लाए। और पतरस दूर ही दूर से पीछे-पीछे चल रहा
था।

55 और उन्होंने आँगन के मध्य में आग जलाई और इकट्ठे बैठ
गए, तो पतरस भी उनके बीच में बैठ गया था।

56 तब एक दासी, उसे आग के उजियाले में बैठे देखकर और
उसकी ओर ताक कर कहने लगी, “यह भी तो उसके साथ
था।”

57 परन्तु उसने यह कहकर, इन्कार कर दिया, “हे स्त्री, मैं उसे
नहीं जानता।”

58 और थोड़ी ही देर के बाद किसी अन्य ने उसे देखकर कहा,
“तू भी तो उन्हीं में से है।” परन्तु पतरस ने कहा, “हे मनुष्य, मैं
नहीं हूँ।”

59 और लगभग एक घंटा बीतने पर, किसी एक और मनुष्य ने
दृढ़ता से कहा, “निश्चय ही, यह भी उसके साथ था, क्योंकि यह
भी तो गलीलवासी है।”

60 परन्तु पतरस ने कहा, “हे मनुष्य, मैं नहीं जानता कि तू क्या
कह रहा है।” और जबकि वह कह ही रहा था, तुरन्त ही, एक
मुर्गे ने बाँग दी।

61 और प्रभु घूमा और पतरस की ओर देखा, और पतरस को
प्रभु की वह बात स्मरण आई, कि उसने उससे किस प्रकार से
कहा था, “आज मुर्गे के बाँग देने से पहले तू तीन बार मेरा
इन्कार करेगा।”

62 और वह बाहर निकलकर फूट-फूटकर रोने लगा।

63 और जो मनुष्य उसे पकड़े हुए थे वे उसका उपहास करने
और उसे पीटने लगे।

64 और उसकी आँखों को ढाँपकर, वे उससे प्रश्न कर रहे थे,
“भविष्यद्वाणी कर! वह कौन है जिसने तुझे मारा?”

65 और वे उसकी निन्दा करते हुए, बहुत सी और भी बातें
उससे कह रहे थे।

66 और जब दिन हुआ, तो लोगों के पुरनिए, और प्रधान याजक
और शास्त्री दोनों इकट्ठे हुए, और वे उसे उनकी महासभा में
ले गए,

67 और कहने लगे, “यदि तू ही मसीह है, तो हमें बता दे!” परन्तु
उसने उनसे कहा, “यदि मैं तुम से कहूँ, तो निश्चय ही तुम
विश्वास न करोगे;

68 और यदि मैं तुम से प्रश्न करूँ, तो निश्चय ही तुम उत्तर न
दोगे।

69 परन्तु अब से, मनुष्य का पुत्र परमेश्वर की सामर्थ्य के दाहिने
हाथ पर विराजमान होगा।”

70 तब उन सब ने कहा, “तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है?” और
उसने उनसे कहा, “तुम स्वयं ही कह रहे हो कि मैं हूँ।”

71 और उन्होंने कहा, “अब हमें गवाही की क्या आवश्यकता
है? क्योंकि हम ने आप ही उसके मुँह से सुन लिया है।”

Luke 23:1

1 और वे सब के सब उठे और उसे पिलातुस के पास ले गए।

2 और वे यह कहकर, उस पर दोष लगाने लगे, “हम ने इसे
हमारे देश को विकृत करते और कैसर को कर देने से मना
करते, और यह कहते हुए पाया है कि वह स्वयं ही मसीह, एक
राजा है।”

3 तब पिलातुस ने उससे यह कहकर, प्रश्न किया, “क्या तू
यहूदियों का राजा है?” परन्तु उसे उत्तर देते हुए, उसने कहा,
“तू आप ही ऐसा कह रहा है।”

4 तब पिलातुस ने प्रधान याजकों से और उस भीड़ से कहा,
“मुझे इस मनुष्य में कुछ दोष नहीं मिला।”

5 परन्तु वे यह कहकर, हठ करने लगे, “यह गलील से लेकर
यहाँ तक सारे यहूदिया में शिक्षा देते हुए, लोगों को सचमुच
भड़काता है।”

6 और जब पिलातुस ने यह सुना, तो उसने पूछा कि क्या यह
मनुष्य गलीलवासी है।

7 और जब उसने यह जान लिया कि वह हेरोदेस के अधिकार
के अधीन है, तो उसने उसे हेरोदेस के पास भेज दिया, जो उन
दिनों में स्वयं यरूशलेम में ही था।

8 और जब हेरोदेस ने यीशु को देखा, तो वह अत्यन्त प्रसन्न
हुआ, क्योंकि वह लम्बे समय से उसको देखने की इच्छा कर
रहा था, क्योंकि उसने उसके विषय में सुन रखा था, और वह
उसके द्वारा किए गए कुछ चिन्ह देखने की आशा रखता था।

9 तब उसने उससे बहुत सारी बातों के द्वारा प्रश्न पूछे, परन्तु
उसने उसको कुछ भी उत्तर नहीं दिया।

10 और प्रधान याजक और शास्त्री पास खड़े हुए तन्मयता से
उस पर दोष लगाते रहे।

11 तब हेरोदेस ने भी, अपने सैनिकों के साथ, उसका अपमान
किया और उसका उपहास किया। और उसे मनोहर वस्त्र
पहनाकर, उसने उसे पिलातुस के पास वापस भेज दिया।

12 तब उसी दिन हेरोदेस और पिलातुस दोनों एक दूसरे के
मित्र बन गए, क्योंकि पहले वे आपस में बैर रखते थे।

13 फिर पिलातुस ने प्रधान याजकों और सरदारों और लोगों
को एक साथ बुलवाया,

14 और उनसे कहा, "तुम इस मनुष्य को लोगों का
बहकानेवाला ठहराकर मेरे पास लाए थे, और देखो, मैंने,
तुम्हारे सामने उसकी जाँच करके, इस मनुष्य में उन बातों के
विषय में कुछ भी दोष नहीं पाया है जिनका तुम उस पर दोष
लगाते हो।

15 और न ही हेरोदेस ने पाया, क्योंकि उसने उसे हमारे पास
वापस भेज दिया है, और देखो, उसके द्वारा ऐसा कुछ भी नहीं
किया गया है जो मृत्यु के योग्य हो।

16 इसलिए, उसे दंडित करके, मैं उसे छोड़ दूँगा।"

17 [परन्तु उसका यह दायित्व था कि वह प्रत्येक पर्व में उनके
लिये एक बन्दी को छोड़े।]

18 परन्तु वे सब मिलकर चिल्ला उठे, और बोले, "इसे रख ले,
परन्तु हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे!"

19 (उसे नगर में हुए किसी बलवे के कारण और हत्या के
कारण बन्दीगृह में डाला गया था।)

20 फिर यीशु को छोड़ने की इच्छा से, पिलातुस ने उनको फिर
से सम्बोधित किया।

21 परन्तु वे यह कहते हुए, चिल्ला रहे थे, "क्रूस पर चढ़ा, उसे
क्रूस पर चढ़ा।"

22 फिर तीसरी बार वह उनसे बोला, "इसने कौन सी बुराई की
है? मैंने उसमें मृत्यु देने का कोई कारण नहीं पाया है। इसलिए,
उसे दंडित करके, मैं उसे छोड़ दूँगा।"

23 परन्तु वे ऊँचे स्वरों में हठ करके, यह माँग कर रहे थे कि
उसे क्रूस पर चढ़ाया जाए, और उनके स्वर प्रबल हुए।

24 और पिलातुस ने उनकी माँग को पूरा करने का आदेश दे
दिया।

25 फिर उसने उस मनुष्य को छोड़ दिया जो बलवे और हत्या
के कारण बन्दीगृह में डाला गया था, जिसके लिए वे निवेदन
कर रहे थे, परन्तु उसने यीशु को उनकी इच्छा के अनुसार
सौंप दिया।

26 और जब वे उसे लिए जा रहे थे, तो उन्होंने शमौन को
पकड़ा, जो एक कुरेनी था और गाँव से आ रहा था, और यीशु
के पीछे-पीछे लेकर चलने के लिए, क्रूस को उन्होंने उस पर
लाद दिया।

27 और लोगों की एक बड़ी भीड़ उसके पीछे-पीछे आ रही थी,
और स्त्रियाँ भी जो उसके लिये शोक और विलाप कर रही थीं।

28 परन्तु उनकी ओर घूमकर, यीशु ने कहा, "हे यरूशलेम की
पुत्रियों, मेरे लिये मत रोओ, परन्तु अपने और अपने बच्चों के
लिये रोओ।

29 क्योंकि देखो, ऐसे दिन आ रहे हैं जिनमें वे कहेंगे, 'धन्य हैं वे
जो बाँझ हैं, हाँ, और वे गर्भ जिन्होंने जन्म नहीं दिया और वे
स्तन जिन्होंने दूध नहीं पिलाया।'

30 तब वे पहाड़ों से कहने लगेंगे, 'हम पर गिर पड़ो,' और टीलों
से कहेंगे, 'हमें ढाँप लो।'

31 क्योंकि यदि वे हरियाली वाले पेड़ के साथ ऐसा करते हैं, तो
सूखे के साथ क्या किया जाएगा?"

32 और दो अन्य अपराधियों को भी उसके साथ मौत के घाट
उतारने के लिए ले जाया जा रहा था।

33 और जब वे उस जगह पर पहुँचे जिसे खोपड़ी कहते हैं, तो
उन्होंने वहाँ उसे क्रूस पर चढ़ा दिया, और उन अपराधियों को
भी—एक को दायीं और दूसरे को बायीं ओर।

34 [परन्तु यीशु ने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये नहीं
जानते कि ये क्या कर रहे हैं।"] परन्तु, उसके कपड़े बाँटने के
लिए, उन्होंने चिट्ठियाँ डालीं।

35 और लोग पास में खड़े-खड़े देख रहे थे, और यह कहकर,
सरदार भी उसका उपहास कर रहे थे, "इसने अन्यों को
बचाया; यदि यह परमेश्वर का मसीह, और चुना हुआ जन है,
तो यह अपने आप को बचाए।"

36 फिर सैनिकों ने भी पास आकर और उसे सिरका देकर,
उसका उपहास किया,

37 और कहने लगे, "यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने
आप को बचा।"

38 और उसके ऊपर एक अभिलेख भी लगा दिया था, "यह
यहूदियों का राजा है।"

39 फिर जो अपराधी लटकाए गए थे उनमें से एक यह कहकर
उसकी निन्दा करने लगा, "क्या तू मसीह नहीं है? तो फिर
अपने आप को और हमें बचा।"

40 परन्तु उत्तर देते हुए, दूसरे ने, उसे फटकार कर कहा, "क्या
तू परमेश्वर से भी नहीं डरता, क्योंकि तू भी तो उसी निर्णय के
अधीन है?

41 और हम तो न्यायानुसार हैं, क्योंकि जो हम ने किया है
उसके योग्य हम दण्ड पा रहे हैं। परन्तु इसने कोई भी अनुचित
काम नहीं किया।"

42 और उसने कहा, "हे यीशु, जब तू अपने राज्य में आए तो
मुझे स्मरण रखना।"

43 और उसने उससे कहा, "मैं तुझ से सच कहता हूँ, कि आज
ही तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

44 और यह छठवें घंटे के लगभग हो चुका था, और नौवें घंटे
तक सम्पूर्ण देश में अन्धकार छाया हुआ था,

45 सूर्य छिप गया, और मन्दिर का परदा बीच में से फट गया,

46 और ऊँचे स्वर से पुकारकर, यीशु ने कहा, "हे पिता, मैं
अपनी आत्मा तेरे हाथों में सौंपता हूँ।" और यह कहकर, उसने
साँस छोड़ दी।

47 और सूबेदार ने, जो कुछ हुआ था उसे देखकर, और यह
कहकर परमेश्वर की बड़ाई की, "सच में यह मनुष्य धर्मी था।"

48 और भीड़ के सारे लोग जो इस तमाशे के लिए एक साथ
आए थे, जो कुछ हुआ था उसे देखकर, अपनी छाती पीटते
हुए, वापस लौट गए।

49 परन्तु जितने उसके परिचित थे, और वह स्त्रियाँ जो गलील
से उसके पीछे हो ली थीं, वे दूर खड़े होकर, इन बातों को देख
रहे थे।

50 और देखो, यूसुफ नाम का एक मनुष्य था जो महासभा का
सदस्य था, और भला और धर्मी पुरुष था,

51 (वह महासभा से और उनके काम से सहमत नहीं था) और
यहूदियों के नगर, अरिमतियाह का रहनेवाला था और जो
परमेश्वर के राज्य की प्रतीक्षा कर रहा था।

52 उसने पिलातुस के पास जाकर, यीशु के शव के लिए
निवेदन किया।

53 और उसे उतारकर, उसने उसे सनी के वस्त्र में लपेटा, और
चट्टान में खोदी हुई एक कब्र में रखा जिसमें कभी किसी को
नहीं रखा गया था।

54 और वह तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने
वाला था।

55 और जो स्त्रियाँ उसके साथ गलील से आई थीं, उन्होंने पीछे-
पीछे जाकर उस कब्र को देखा और यह भी कि उसका शव
किस रीति से रखा गया था।

56 फिर, वापस लौटकर, उन्होंने सुगन्धित मसाले और लेप
तैयार किया। और आज्ञा के अनुसार, सब्त के दिन उन्होंने
विश्राम किया।

Luke 24:1

1 फिर सप्ताह के पहले दिन, बड़ी भोर में, वे उन मसालों को
लेकर जो उन्होंने तैयार किए थे, कब्र पर आईं।

2 और उन्हें कब्र पर से पत्थर दूर लुढ़का हुआ मिला,

3 और भीतर प्रवेश करने पर, उन्होंने प्रभु यीशु का शव न
पाया।

4 और ऐसा हुआ कि, जब वे इस बात से चकित हो रही थीं,
और देखो, चमकते वस्त्र पहने हुए दो पुरुष उनके पास आ
खड़े हुए।

5 और जब उन्होंने भयभीत होकर अपने मुँह को भूमि की ओर
झुका लिया, तो उन्होंने उनसे कहा, "तुम जीवित को मरे हुओं
में क्यों ढूँढ़ रही हो?

6 वह यहाँ नहीं है, परन्तु जी उठा है! स्मरण करो कि गलील में
रहते हुए उसने तुम से क्या कहा था,

7 यह कहकर कि मनुष्य के पुत्र का पापी मनुष्यों के हाथों में
पकड़वाया जाना और क्रूस पर चढ़ाया जाना, और तीसरे दिन
जी उठना आवश्यक था।'"

8 और उसकी बातें उनको स्मरण आईं,

9 और कब्र से लौटकर, उन्होंने उन ग्यारहों को और अन्य सब
को, इन सब बातों की सूचना दी।

10 और वे मरियम मगदलीनी, और योअन्ना, और याकूब की
माता मरियम, और उनके साथ अन्य स्त्रियाँ भी थीं, जिन्होंने
प्रेरितों को ये बातें बताईं।

11 और ये बातें उनके सम्मुख अर्थहीन जैसे जान पड़ीं, और
उन्होंने उन पर विश्वास नहीं किया।

12 परन्तु पतरस, उठकर, कब्र की ओर दौड़ गया, और
झुककर, उसने केवल सनी के वस्त्र पड़े देखे। अतः जो हुआ
था उस पर आश्चर्य करता हुआ, वह अपने घर चला गया।

13 और देखो, उसी दिन, उनमें से दो जन दूर के एक गाँव को
जा रहे थे जिसका नाम इम्माऊस था, जो यरूशलेम से कोई
सात मील की दूरी पर था,

14 और जो कुछ हुआ था वे उन सब बातों के विषय में एक
दूसरे से बातचीत कर रहे थे।

15 और ऐसा हुआ, कि जिस समय वे बातचीत और चर्चा कर
रहे थे, तो यीशु स्वयं ही, पास आकर, उनके साथ-साथ जा रहा
था।

16 परन्तु उनकी आँखें ऐसी बन्द कर दी गई थीं कि उसे
पहचान न पाएँ।

17 तब उसने उनसे पूछा, "जब तुम चल रहे हो तो ये क्या बातें
हैं जिनका तुम एक दूसरे से आदान-प्रदान कर रहे हो?" वे
उदासी के साथ, शान्त खड़े हो गए।

18 फिर, उत्तर देते हुए, उनमें से क्लियुपास नाम के व्यक्ति ने
उससे कहा, "क्या तू अकेले ही यरूशलेम की यात्रा कर रहा
है और इन दिनों में उसमें जो कुछ हुआ है उन बातों को नहीं
जानता?"

19 और उसने उनसे पूछा, "कौन सी बातें?" और उन्होंने उससे
कहा, "यीशु नासरी के विषय में, जो एक पुरुष था, और जो
परमेश्वर और सब लोगों के सम्मुख में काम और वचन में
शक्तिशाली भविष्यद्वक्ता था।

20 और किस प्रकार से प्रधान याजकों और हमारे सरदारों ने
उसे मृत्युदंड के लिए पकड़वा दिया और उसे क्रूस पर चढ़ा
दिया।

21 परन्तु हमें आशा थी कि यह वही था जो इस्राएल को
छुटकारा देनेवाला था। परन्तु वास्तव में इन सब बातों के साथ
में, वह यह तीसरा दिन बिता रहा है जब से यह बातें घटित हुई
हैं।

22 परन्तु सच में, हमारे बीच की कई स्त्रियों ने भी हमें विस्मित
कर दिया है, जो बहुत सुबह में ही कब्र पर गई थीं।

23 और उसका शव न पाने पर, वे यह कहती हुई आईं कि
उन्होंने स्वर्गदूतों का दर्शन भी पाया, जिन्होंने कहा कि वह
जीवित है।

24 और जो हमारे साथ थे उनमें से कुछ कब्र पर गए और
उन्होंने वैसा ही पाया, जैसा वास्तव में उन स्त्रियों ने कहा था,
परन्तु उन्होंने उसको न देखा।"

25 तब उसने उनसे कहा, "हे निर्बुद्धियों और भविष्यद्वक्ताओं
द्वारा बोली गई सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों!

26 क्या मसीह के लिए इन बातों में दुःख उठाना और अपनी
महिमा में प्रवेश करना आवश्यक न था?"

27 और मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके,
उसने सारे पवित्रशास्त्रों में से, अपने विषय की बातों का अर्थ
उन्हें समझा दिया।

28 और वे उस गाँव के निकट पहुँच गए जहाँ वे जा रहे थे, और
उसने ऐसा अभिनय किया जैसे कि वह आगे की यात्रा करेगा।

29 और उन्होंने यह कहकर, उससे आग्रह किया, "हमारे साथ
रुक जा, क्योंकि संध्या हो चली है और दिन भी ढल गया है।"
और वह उनके साथ रुकने के लिये भीतर गया।

30 और ऐसा हुआ कि, जब वह उनके साथ मेज़ पर बैठा, तो
रोटी लेकर, उसने उसे आशीषित किया, और उसे तोड़कर,
वह उसे उनको देने लगा।

31 तब उनकी आँखें खुल गईं, और उन्होंने उसे पहचान लिया,
और वह उनके पास से अदृश्य हो गया।

32 और उन्होंने एक दूसरे से कहा, "जब वह मार्ग में हम से बातें
करता था, और जब उसने पवित्रशास्त्र को हमारे सम्मुख
खोला था, तो क्या हमारे हृदय जल न उठे थे?"

33 और उसी घड़ी उठकर, वे यरूशलेम को लौट गए। और
उन्होंने उन ग्यारहों को, और जो उनके साथ थे, इकट्ठे पाया,

34 और कहा, "सचमुच प्रभु जी उठा है, और वह शमौन को
दिखाई भी दिया है!"

35 और उन्होंने मार्ग की बातें बता दीं और कैसे रोटी तोड़ने के
द्वारा उन्होंने उसे पहचाना।

36 और जब वे ये बातें कह ही रहे थे, वह आप ही उनके बीच
में आ खड़ा हुआ और उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले।"

37 परन्तु घबराकर और भयभीत होकर, उन्होंने सोचा कि वे
किसी आत्मा को देख रहे हैं।

38 तब उसने उनसे कहा, "तुम क्यों घबरा गए, और तुम्हारे
हृदय में सन्देह क्यों उठते हैं?

39 मेरे हाथों को और मेरे पाँवों को देखो, कि मैं ही हूँ। मुझे छू
लो और देखो, क्योंकि आत्मा के माँस और हड्डियाँ नहीं होतीं
जैसा तुम मेरे पास देखते हो।"

40 और यह कहकर, उसने उन्हें अपने हाथ और पाँव दिखाए।

41 और जबकि उनको अभी भी विश्वास नहीं हो रहा था और वे
आनन्द से आश्चर्य कर रहे थे, तो उसने उनसे पूछा, "क्या यहाँ
तुम्हारे पास खाने योग्य कुछ है?"

42 अतः उन्होंने उसे भुनी हुई मछली का एक टुकड़ा दिया,

43 और उसे लेकर, उसने उनके सामने ही उसे खाया।

44 फिर उसने उनसे कहा, "ये मेरी वे बातें हैं, जो मैंने तुम्हारे
साथ रहते हुए तुम से बोली थीं, कि मूसा की व्यवस्था में, और

भविष्यद्वक्ताओं, और भजन संहिता की पुस्तकों में, मेरे विषय
में जितनी बातें लिखी हुई हैं, अवश्य है कि सब पूरी हों।"

45 तब उसने पवित्रशास्त्र को समझने के लिये उनके मन खोल
दिए, और उसने उनसे कहा,

46 "यह इस प्रकार से लिखा गया है: मसीह दुःख उठाएगा,
और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा,

47 और यरूशलेम से आरम्भ करके, सब जातियों में पापों की
क्षमा के पश्चाताप की घोषणा उसी के नाम से की जाएगी।

48 तुम इन सब बातों के गवाह हो।

49 और मेरे पिता की प्रतिज्ञा को मैं तुम पर भेज रहा हूँ। परन्तु
जब तक तुम स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ उस समय तक तुम इसी
नगर में ठहरे रहो।"

50 तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने
हाथों को उठाकर, उसने उन्हें आशीष दी।

51 और ऐसा हुआ कि, जब वह उन्हें आशीष दे रहा था, तो वह
उनसे अलग हो गया और स्वर्ग में उठा लिया गया।

52 और वे, उसको दण्डवत् करके, बड़े आनन्द से यरूशलेम
को लौट गए,

53 और वे सारे समय मन्दिर में, परमेश्वर को धन्य कहा करते
थे।